उत्थान

सामाजिक परिवर्तन का सार्थक प्रयास

अंक चतुर्थ - वर्ष 2022

SBGBT

सोच बदलो गाँव बदलो संस्था

उत्थान

सामाजिक परिवर्तन का सार्थक प्रयास

उत्थान

सामाजिक परिवर्तन का सार्थक प्रयास

अंक चतुर्थ - वर्ष 2022

संरक्षक

डॉ. सत्यपाल सिंह मीना

चीफ कॉ -ओर्डिनेटर

देवेन्द्र सिंह

संपादक

रामनरेश, हुलासपुरा

दिनेश मीना

SBGBT

सोच बदलो गाँव बदलो संस्था

अनुक्रमनिका

सम्पादकीय	3
संरक्षक की कलम से	5
संदेश	7
समाजीकरण सभ्य समाज के निर्माण का आधार	9
कर बचत के उपकरण	12
करौली और धौलपुर में पत्थर तोडते खनन मजदूरों को लगा सिलिकोसिस का दंश	22
कोविड–19 की दूसरी लहर के दौरान टीम के मानवीय प्रयास	29
स्मार्ट विलेज धनौरा से सोच बदलो– गॉव बदलो अभियान तक	33
डिजिटल माध्यमों का ग्राम विकास में उपयोग में उपयोग कैसे करें	38
गॉव विकास समिति के रजिस्टेशन की प्रक्रिया	46
पर्यावरण संरक्षण की अनोखी मुहिम ग्रीन विलेज क्लीन विलेज	49
मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना	53
नारी शक्ति का रक्तदान संकल्प	56
सोच बदलो–गॉव बदलो यात्रा का 32 वां पडाव. गांव सुनीपुर	59
बदलाव की कहानी, लोगों की जुबानी	62
उत्थान का बहुउदेशीय स्वरप	69
सोशल प्राइड – सुर्खियों में	76
आभार सोच बदलो– गॉव बदलो रक्तदान टीम	78

सम्पादकीय

सुधी पाठकों,

वैश्विक त्रासदी कोविड-19 के संकट के दौर के पश्चात् हम वार्षिक पत्रिका "उत्थान" का चौथा अंक एक नई आशा और उम्मीद की किरण साथ लेकर आए हैं। कोरोना महामारी के रूप में मानवता पर आए संकट के बादल अब धीरे-धीरे छंटने लगे हैं । मार्च 2021 से जून 2021 के मध्य, जब कोरोना महामारी दूसरे दौर के रूप में अपने चरम पर थी, दिन-ब-दिन कोरोना संक्रमितों का बढता ग्राफ, अस्पतालों में गंभीर मरीजों में निरंतर वृद्धि और ऑक्सीजन की किल्लत के कारण बेबसी में दम तोड़ते लोग आज भी उस खौफनाक दौर की याद दिलाते हैं । इन विकट हालातों में उपलब्ध स्वास्थ्य संसाधन और तमाम प्रशासनिक प्रयास नाकाफी नजर आ रहे थे । ऐसे में विभिन्न सामाजिक संगठन और परमार्थ के लिए कार्य कर रहे लोग मानवीय सरोकारों को क़ायम रखते हुए प्रशासन के साथ आन खडे हुए और मानवता की रक्षा हेतु आगे आकर भोजन, पानी, दवाईयां, राशन, मास्क, सैनिटाइजर वितरण के साथ-साथ जरूरतमंदों की ठहरने की व्यवस्था इत्यादि में प्रशासन को हर संभव मदद देकर सहयोग किया ।

मानवता पर आए संकट की दूसरी लहर में सोच बदलो गांव बदलो टीम द्वारा भी कोविड टास्क फोर्स का गठन कर कोरोना से बचाव के लिए गांव-गांव जन जागरूकता अभियान चलाया गया । साथ ही दवाइयां, मास्क, सैनेटाइजर एवं प्राथमिक उपचार सामग्री उपलब्ध करवाने में हर संभव मदद पहुंचाकर मानवता के पुनीत कार्य में छोटा सा सहयोग किया गया। SBGBT द्वारा प्रथम पंक्ति के कोरोना योद्धाओं (डॉक्टर्स, स्वास्थ्य कर्मी, पुलिस प्रशासन और नगर पालिका के कर्मचारियों) को शुरुआती दौर में मास्क वितरण करना, धौलपुर जिला प्रशासन को प्रवासी मज़दूरों के लिए राशन व्यवस्था हेतु आर्थिक सहयोग प्रदान

करना, बाड़ी सामुदायिक अस्पताल के लिए दो स्ट्रेचर और दो व्हील चेयर भेंट करना इत्यादि मानवतावादी कार्यों में अपना योगदान दिया गया ।

शिक्षा और जागरूकता सोच बदलो-गांव बदलो टीम के प्रमुख उद्देश्यों में शामिल हैं और इसी को ध्यान में रखते हुए धौलपुर ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिभाशाली ज़रूरतमंद बच्चों को अच्छी शिक्षा व अवसर उपलब्ध कराने हेतु टीम द्वारा सरमथुरा में "उत्थान भवन" का निर्माण किया गया है। जहाँ पर आधुनिक सुविधाओं से युक्त उच्च स्तरीय उत्थान कोचिंग संस्थान के माध्यम से ऑनलाइन और ऑफलाइन क्लासेज का संचालन नियमित रूप से किया जा रहा है। "आओ पढ़ें-आगे बढ़ें" प्रकल्प को व्यापक रूप देने के लिए संस्था द्वारा बाड़ी कस्बे में शैक्षणिक गतिविधियों को संचालित करने के साथ-साथ अन्य प्रयोजनार्थ बहुउद्देशीय "उत्थान परिसर" विकसित किया जा रहा है।

पत्रिका के इस अंक में "सोच बदलो गांव बदलो" अभियान की वर्ष भर की गतिविधियों के साथ-साथ, डिजिटल प्रयासों की ग्राम विकास में भूमिका, ग्राम विकास समिति के पंजीयन की प्रक्रिया, कुछ महत्वपूर्ण समसामयिक सरकारी योजनाओं की संक्षिप्त जानकारी और मानवता पर आए कोविड-19 महामारी रूपी संकट की दूसरी लहर में सोच बदलो-गांव बदलो टीम द्वारा किए गए मानवीय प्रयास, समाजीकरण सभ्य समाज के निर्माण का आधार, गांवों के विकास की चिंगारी जैसे कई महत्वपूर्ण आलेखों का संकलन आप पाठकों तक बेहद सरल व सहज भाषा में पहुंचाने का प्रयास किया गया है।

संपादक मण्डल

संरक्षक की कलम से

"सोच बदलो-गाँव बदलो" की विचारधारा आज ग्रामीण युवाओं की नसों में लहू बनकर दौड़ने लगी है। इस विचारधारा ने युवाओं की ऊर्जा को सकारात्मक राह दिखाकर उसे रचनात्मक कार्यों में लगाने का काम किया है। इस विचारधारा से प्रेरित युवा अपने गांव की समस्याओं को अपनी समस्या मानकर उनके समाधान में अपना योगदान दे रहे हैं। डिजिटल माध्यमों से गांव और गरीब की समस्याओं को सरकार तक पहुंचाकर उनके समाधान में सहयोग कर हमारे युवा ग्रामीणों और प्रशासन के मध्य सेतु का कार्य कर रहे हैं। उत्थान पुस्तकालय, उत्थान कोचिंग संस्थान और उत्थान बाल संस्कार केंद्रों के माध्यम से बच्चों और युवाओं का मार्गदर्शन करने तथा उन्हें प्रशिक्षित करने का काम संजीदगी के साथ किया जा रहा है।यह विचारधारा भाई को भाई से जोड़ने, बेटे को परिवार से जोड़ने, परिवार को गांव से जोड़ने, गांव को समाज से जोड़ने और समाज को देश से जोड़ने का कार्य कर रही है।

"सोच बदलो-गाँव बदलो" अभियान द्वारा सोच बदलो गांव बदलो यात्रा, उत्थान भवन सरमथुरा, उत्थान परिसर बाड़ी, उत्थान कोचिंग संस्थान और उत्थान लाइब्रेरी सरमथुरा, उत्थान कोचिंग संस्थान बाड़ी, नादौती और करौली के माध्यम से नए प्रतिमान स्थापित किए हैं; मगर मंजिल अभी दूर है। ग्रामीण लोगों में जन जागरूकता और सामाजिक जनचेतना पैदा करना, गांव के विकास में ग्रामीणों की सहभागिता सुनिश्चित करना, गरीब और जरूरतमंदों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ना, सरकारी योजनाओं का लाभ उपयुक्त लाभार्थियों तक पहुंचना सुनिश्चित करना, ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन करना,

पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करना, समाज में बढ़ती कुरितियों, विशेष रूप से नशे के बढ़ते प्रभाव की प्रति युवाओं को जागरूक करना इत्यादि ऐसे मुद्दे हैं जिन पर निरंतर कार्य करने की आवश्यकता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है इस विचारधारा से जुड़ा हुआ कार्यकर्ता अपने बहुमूल्य समय में से समय निकालकर अपने गांव, ग्रामीणों और समाज के लिए निस्वार्थ भाव से काम करेगा। ग्रामीण युवाओं के प्रयासों से ही ग्रामीण सभ्यता और संस्कृति को संरक्षित रखते हुए गांवों में भी आधुनिक सुविधाओं का विकास सुनिश्चित होगा और जिसका लाभ गांव के गरीब से भी गरीब व्यक्ति को भी मिलेगा।

उत्थान पत्रिका का यह अंक हमारे कार्यकर्ताओं की छोटे छोटे प्रयासों प्रतिबिंब है और यह टीम की विचारधारा के बढ़ते हुए प्रभाव को लोगों तक पहुंचाने का प्रयास भी है। यह विचारधारा आपको सद् मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती है अतः आप अपने व्यक्तित्व के निर्माण के लिए सोच बदलो गांव बदलो टीम से जुड़ें और सफल व्यक्ति बनें।

सदैव की तरह आपके सहयोग का आकांक्षी

- डॉ सत्यपाल सिंह मीना

संदेश

मुख्य मंत्री
राजस्थान

अ.शा.पत्र / मुमं / ओएसडीएफ / 2022
जयपुर, जून, 2022

प्रिय श्री अरविन्द मण्डलोई जी,

आपके 6 जून, 2022 के पत्र के साथ रूपांकन सोसायटी के माध्यम से "सोच बदलो–गांव बदलो टीम एवं इको नीड्स फाउण्डेशन, धौलपुर की पत्रिका "उत्थान" का द्वितीय अंक और उत्थान राजस्थान सामान्य ज्ञान प्रकाशन मिला। इसके लिए धन्यवाद।

पत्रिका के माध्यम से "सोच बदलो–गांव बदलो" अभियान की जानकारी के साथ धौलपुर, करौली, सवाईमाधोपुर, अलवर और दौसा जिलों के 22 गांवों की सफल कथाएं शामिल की गई हैं।

आशा है इस प्रकार अभियान और प्रयासों से गांवों के चहुंमुखी विकास के लिए सकारात्मक सोच को प्रोत्साहन मिल सकेगा।

शुभकामनाओं सहित,

सद्भावी,

(अशोक गहलोत)

श्री अरविन्द मण्डलोई,
रूपांकन सोसायटी, शंकरगंज,
किला रोड, इन्दौर–452 006 (म.प्र.)

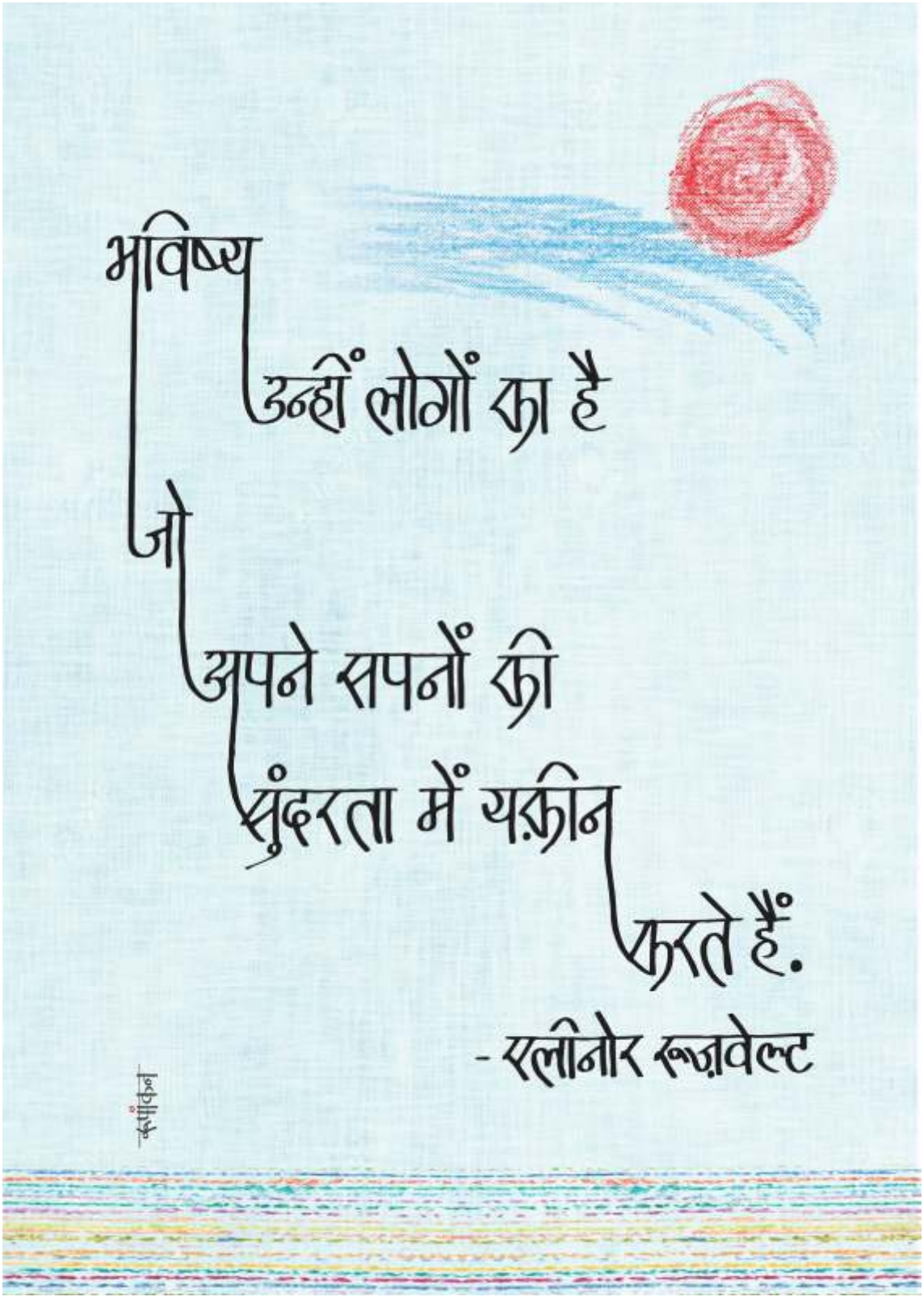
भविष्य
उन्हीं लोगों का है
जो
अपने सपनों की
सुंदरता में यक़ीन
करते हैं.
- एलीनोर रूज़वेल्ट

समाजीकरण सभ्य समाज के निर्माण का आधार

ब्रह्मांड के अद्भुत ग्रह पृथ्वी परहजारों बरसों से असंख्य जीव विद्यमान, विकसित और विलुप्त होते रहे हैं। धरती पर विद्यमान इन लाखों जीवों में से मनुष्य सबसे विकसित और संगठित प्रजाति रही है। मनुष्य जन्म से असंख्य कोशिकाओं की जटिल रासायनिक प्रक्रिया से निर्मित एक संगठित शारीरिक ढांचा होता है; जिसके अंदर विकसित होने की अनन्त संभावनाएं होती है। जन्म के समय उसका न कोई नाम होता है और न ही जाति, धर्म और संप्रदाय होता है। वह न कोई भाषा जानता और न ही वह देश, काल और समाज की पहचान रखता है। परंतु वह अपने अंदर प्रकृति प्रदत्त विकसित होने की अपार क्षमताओं के बल पर अपना विकास करता है। विकास की इस प्रक्रिया में पहली पाठशाला परिवार और समाज उसे एक विशेष पहचान देता है। घर, परिवार और समाज में उसे किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए, यह सब उसे परिवार के सदस्यों, विद्यालय के गुरुओं, मित्रों, आस-पास के लोगों और रिश्तेदारों - परिचितों के आचरण और व्यवहार से सीखने को मिलता है। व्यक्ति इस सामाजिक संपर्क द्वारा परिवार और समाज की संस्कृति, मूल्यों, प्रतिमानों, विश्वास, प्रथाओं इत्यादि गुणों को सीखता है और इस सामाजिक प्रक्रिया द्वारा ही मनुष्य एक सामाजिक और सांस्कृतिक प्राणी बनता है।

व्यक्ति केबचपन से लेकर जीवन पर्यंत चलने वालीसीखने और सिखाने की इसी प्रक्रिया को सामाजीकरण कहा जाता है। प्रसिद्ध समाजशास्त्री ग्रीन के अनुसार सामाजीकरण वह प्रक्रिया है; जिसके द्वारा बच्चा सांस्कृतिक विशेषताओं, आत्मपन और व्यक्तित्व को प्राप्त करता है। जॉनसन के अनुसार सामाजीकरण एक सीख है जो सीखने वाले को सामाजिक भूमिका निर्वाह करने योग्य बनाती है। व्यक्ति का अपना परिवार, गुरु, मित्र, रिश्तेदार-परिचित, पड़ोसी, शिक्षा, राज्य और जनसंपर्क के साधन उसके समाजीकरण के माध्यम हैं।

व्यक्ति के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में समाजीकरण की सबसे प्रमुख भूमिका होती है। व्यक्ति जन्म से ही अपने गुणों को प्राप्त नहीं करता है, बल्कि समाज के सदस्य के रुप में वह धीरे-धीरे अर्जित करता है। समाजीकरण की प्रक्रिया ही निर्धारित करती है कि व्यक्ति बड़ा होकर समाज में कैसा व्यवहार करेगा और व्यक्तियों का व्यवहार ही किसी भी समाज का वर्तमान औरभविष्य निर्धारित करता है। समाजीकरण द्वारा ही व्यक्ति समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और मूल्यात्मक व्यवस्था को समझता और सीखता है और उससे उसी के अनुरुप व्यवहार करने की अपेक्षा की जा सकती है। घर, परिवार और समाज में अनुशासन, नैतिकता, समाज के प्रति दायित्व और कानून व्यवस्था का आधार समाजीकरण ही है। हम यदि चाहते हैं कि समाज में बेटियों और महिलाओं को सम्मान मिले, कानून व्यवस्था का सम्मान हो, लोग आस पास के वातावरण को स्वच्छ रखें, पर्यावरण की रक्षा हो, आतंकवाद और हिंसा खत्म हो, देश और राष्ट्र का समग्र

विकास हो, तो घर, परिवार, विद्यालय और राज्य द्वारा समाजीकरण पर पूरा ध्यान केन्द्रित करना होगा। आधुनिक विकास प्रक्रिया का पर्यावरण के साथ सामंजस्य बिठाने के लिए, व्यक्तिगत समृद्धि के साथ सामूहिक और समाज हित को साधने के लिए और व्यक्तिगत उन्नति को सामाजिक उन्नति का अभिन्न अंग बनाने के लिए समाजीकरण सबसे महत्वपूर्ण साधन है।

मेरा पूर्ण विश्वास है कि आदर्श और सभ्य समाज का निर्माण कानून के डर से नहीं, समाजीकरण द्वारा ही किया सकता है। कानून समस्याओं का अल्पकालिक समाधान दे सकता है, समस्याओं का दीर्घकालीन और स्थाई समाधान कानून के डर से नहीं, समाजीकरण द्वारा ही संभव हो सकता है। मेरे बेटे रोहन की विद्यालय की पुस्तक में अंकितकुछ पंक्तियां समाजीकरण की प्रक्रिया और प्रभाव को बहुत सुंदर शब्दों में रेखांकित कर रही हैं।

“बच्चे जो सीखते हैं वही जीते है”

अगर कोई बच्चा आलोचना के साथ जीता है,
(If a child lives with criticism.)
वह निंदा करना सीखता है।
(He learns to condemn)
यदि कोई बच्चा शत्रुता के साथ रहता है;
(If a child lives with hostility)
वह लड़ना सीखता है।
(He learns to fight)
अगर कोई बच्चा उपहास के साथ रहता है;
(If a child lives with ridicule)
वह शर्मीला होना सीखता है।
(He learns to be shy)
अगर कोई बच्चा शर्म से रहता है;
(If a child lives with shame)
वह दोषी महसूस करना सीखता है।
(He learns to feel guilty)
सहनशीलता के साथ रहता है;
(If a child lives with tolerance)

वह धैर्य रखना सीखता है।
(He learns to be patient)
अगर कोई बच्चा प्रोत्साहन के साथ रहता है;
(If a child lives with encouragement)
वह आत्मविश्वास सीखता है।
(He learns confidence)
अगर कोई बच्चा प्रशंसा के साथ रहता है;
(If a child lives with praise)
वह सराहना करना सीखता है।
(He learns appreciate)
अगर कोई बच्चा निष्पक्षता के साथ रहता है;
(If a child lives with fairness)
वह न्याय सीखता है।
(He learns justice)
अगर कोई बच्चा सुरक्षा के साथ रहता है;
(If a child lives with security)
वह विश्वास करना सीखता है।
(He learns to have faith)
अगर कोई बच्चा स्वीकृति के साथ रहता है;
(If a child lives with approval)
वह खुद को पसंद करना सीखता है।
(He learns to like himself)
अगर कोई बच्चा स्वीकृति और मित्रता के साथ रहता है;
(If a child lives with acceptance and friendship)
वह दुनिया में प्यार पाना सीखता है।
(He learns to find love in the world)

डॉ सत्यपाल सिंह मीना, आईआरएस

कर बचत के उपकरण: एक शैक्षणिक बहस

राम प्रकाश मौर्य, आईआरएस अपर आयुक्त, आयकर भोपाल

आयकर अधिनियम में कर बचत से संबंधित प्रावधान सरकार की कर नीति के सामाजिक पहलू को ध्यान में रखते हुए बनाए गए हैं; जिससे कि लोग बचत करने के लिए प्रेरित हों, और बचत के ज़रिए निवेशित पैसा देश की प्रगति एवं विकास में अपना योगदान दे सके। इसी दूरंदेशी की वजह से प्रत्येक टैक्स सेविंग इंस्ट्रूमेंट में एक लॉक इन पीरियड होता है इस लॉक इन पीरियड के पहले निवेशक उन उपकरणों में से पैसा निकाल नहीं सकते हैं, ये लॉक इन पीरियड, 3 साल से लेकर 15 साल तक हो सकते हैं। यह लॉक इन पीरियड निवेश के सिलसिले में निवेशक के अंदर भावनात्मक वजहों से उपजी जल्दबाजी को कम करता है और निवेशक के अंदर आवश्यक अनुशासन पैदा करने में मदद करता है।

पारंपरिक तौर पर सबसे लोकप्रिय टैक्स सेविंगइंस्ट्रूमेंट्स हैं, लाइफ इंश्योरेंस से संबंधित प्रोडक्ट्स, बैंक फिक्स्ड डिपॉजिट से संबंधित प्रोडक्ट्स जैसे नोटिफाइड एफडी, पीपीएफ, छोटी बचत से संबंधित प्रोडक्ट्सजैसे किसान विकास पत्र (KVP), नेशनल सेविंग्ससर्टिफिकेट्स (NSC), यूलिप्स (ULIPs : Unit linked insurance products) इत्यादि।

परंतु समय के साथ इन लोकप्रिय उत्पादों की लाभशीलता में आई भारी कमी को देखते हुए टैक्स सेविंग के उद्देश्य से इन उत्पादों में निवेश का आकर्षण घटता गया है, एवं नए उत्पादों की तरफ़ रुख़ होता देखा गया है, जो मुद्रास्फीति (इनफ्लेशन) को सहजता से पीछे छोड़ पाए हैं और निवेशक को अर्थ संगत लाभ दे पाए हैं।

इन्हीं नवीन उपकरणों में से इस दशक में सबसे तेजी से लोकप्रिय हो रहा एक उत्पाद, जिसका नाम ELSS (इक्विटी लिंक्ड सेविंग्स स्कीम्स) है, मेरी नज़र में सब तरह से अधिक लाभकारी, सुगम औरप्रयोज्य है। क्योंकि ELSS में निवेश करने के लिए किसी तरह के अलग अकाउंट की ज़रूरत नहीं होती, ये प्रोडक्ट्स सीधे बैंक अकाउंट से या डीमैट अकाउंट के ज़रिए खरीदे जा सकते हैं।

ELSS मूलतः म्यूचुअलफंड्स होते हैं, पर ये फंड्सलॉक इन पीरियड की वजह से सामान्य म्यूचुअलफंड्स से थोड़ा सा अलग होते हैं, एवं सरकार के द्वारा (आयकर विभाग द्वारा) टैक्स सेविंग इंस्ट्रूमेंट के तौर पर समय-समय पर नोटिफाइड होते हैं, जिससे सामान्य म्यूचुअलफंड और ELSS में अंतर पता चल सके और निवेशक धोखे का शिकार न हों।

ELSS को ठीक से समझने से पहले म्यूचुअल फंड्स को ठीक से समझ लेना उपयोगी होगा। म्यूचुअल फंड स्कीम्स अपने में एक निवेश उपकरण होते हैं, जिनका निर्माण विभिन्न म्यूचुअल फंड कंपनियों द्वारा इक्विटी या बॉन्ड में पैसा लगाने के अप्रत्यक्ष उपकरण के तौर पर किया जाता है। कौन सी कंपनी के कौन से बॉन्ड्स या शेयर्स अच्छे या बुरे हैं, इस बात का सही ज्ञान सामान्य नागरिकों को नहीं होता,

इसलिए बहुत से लोग कैपिटल मार्केट में निवेश नहीं कर पाते और फलस्वरूप वे कैपिटल मार्केट्स (पूंजी बाजार) या मनीमार्केट्स (मुद्रा बाज़ार) में निवेश करने और उसके लाभ प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं। कैपिटल मार्केट्स से तात्पर्य उन मार्केट्स से है जहां एक वर्ष से अधिक अवधि के कैपिटल इंस्ट्रूमेंट्स (जैसे बॉन्ड्स एवं इक्विटी) इत्यादि का ट्रांजेक्शन होता है, मुद्रा बाजार (मनी मार्केट) से मतलब उस बाजार से है जहां एक वर्ष से कम अवधि के कैपिटल इंस्ट्रूमेंट जैसे ट्रेजरी बिल्स इत्यादि का ट्रांजेक्शन होता है।

इन मार्केट्स के आकर्षक प्रतिफल (रिटर्न) का लाभ सब लोगों तक पहुंच सके उसके लिए फंड मैनेजमेंट कंपनियां अपने विशेषज्ञ फंड मैनेजर्स (क्वालिफाइड फाइनेंशियल एक्सपर्ट्स) की मदद से ऐसे उत्पाद का निर्माण करती हैं, जिनमें इन मार्केट्स के बारे में ज्यादा जानकारी न रखने वाला इंसान भी आंख बंद कर के निवेश कर सकता है। भारत में लगभग 350 ऐसे फंडमैनेजर्स हैं जो 44 विभिन्न फंडमैनेजमेंट कंपनियों के लिए कार्य करते हैं । ये फंड मैनेजमेंट कम्पनी, एसेट मैनेजमेंट कंपनी (AMC) भी कहलाती हैं।

वास्तव में म्यूचुअल फंड कम्पनियां सामन्यतः 2 सेगमेंट में काम करती हैं। पहला तो विभिन्न म्यूचुअल फंड प्रोडक्ट का रिसर्च, सिलेक्शन और उनका फॉर्मेशन/ लांचिंग; और दूसरा, किसी प्रोडक्ट/स्कीम के फॉर्मेशन एवं उस प्रोडक्ट के लॉन्च के बाद उन प्रोडक्ट्स का मैनेजमेंट। कुछ कंपनियां एक ही बैनर तले दोनों तरह के काम करती हैं, जबकि कुछ कंपनियां एक बैनर तले दो छोटे बैनर बना कर (म्यूचुअल फंड कंपनी एवं एसेट मैनेजमेंट कंपनी) काम करती हैं।

म्यूचुअल फंड कंपनियां, निवेशकों की ज़रूरत के हिसाब से ऐसे प्रोडक्ट्स का निर्माण करती हैं जो debt इंस्ट्रूमेंट या इक्विटी इंस्ट्रूमेंट या दोनों को मिला कर बनते हैं और अपनी-अपनी कैटेगरी के क्षेत्र में पैसे लगाते हैं। किसी म्यूचुअल फंड् प्रोडक्ट की एक इकाई को म्यूचुअल फंड्स की यूनिट (जैसे कंपनी के शेयर) कहते हैं और यूनिट्स के मूल्य को NAV (net asset value) (जैसे शेयर का प्राइस) कहते हैं। टारगेट इंस्ट्रूमेंट (इक्विटी या debt) में उतार-चढ़ाव के साथ-साथ उसी अनुपात में इन फंड्स की यूनिट्स के मूल्य यानि NAV भी घटते-बढ़ते रहते हैं।

जैसे हम कंपनियों के शेयर्स या बॉन्ड्स खरीदते हैं वैसे ही म्यूचुअल फंड्स की यूनिट्स की ख़रीद और बिक्री होती है। कुछ कंपनियां अपने म्यूचुअलफंड्स को स्टॉक एक्सचेंज (राष्ट्रीय स्टॉक एक्सचेंज NSE/बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज BSE) में सूचीबद्ध (लिस्टेड) करवा देती हैं, जिससे इन स्टॉक एक्सचेंजेज यानी कि सेकेंडरी मार्केट में भी इन यूनिट्स की ट्रेडिंग (खरीद फरोख्त) होने लगती है। जो म्यूचुअल फंड स्कीम्स अनलिस्टेड हैं, उनको सीधे उस कंपनी से ही खरीदा जा सकता है और उसी कंपनी को वापस बेचा जा सकता है। जो म्यूचुअल फंड्स स्कीम स्टॉक एक्सचेंज (NSE/BSE) पर लिस्टेड होते हैं, उनको ईटीएफ (एक्सचेंज ट्रेडेड फंड) भी कहते हैं। कुछ म्यूचुअलफंड्स केवल पूर्व निर्धारित अनुपात और पूर्व निर्धारित सोपान

(पैटर्न) पर कार्य करते हैं और जिनमें फंड मैनेजर का बहुत रोल नहीं होता, ऐसी स्कीम्स एक्सचेंज के इन्डेक्स जैसे सेंसेक्स या निफ्टी को उसी एक्जेक्ट अनुपात में फॉलो करते हुए बनाए जाते हैं, उनको इंडेक्स म्यूचुअल फंड या संक्षेप में इंडेक्स फंड कहते हैं। यानी की अगर 100 रुपए का फंड है तो वो100 रुपए निफ्टी की उन्हीं 50 या सेंसेक्स की उन्हीं 30 कम्पनी के शेयर्स में उसी अनुपात में लगेंगे जिस अनुपात में वो कंपनियां उस इंडेक्स में पायी जाती हैं।

भारत में 44 म्यूचुअल फंड कंपनीज मिल कर करीब 2500 म्यूचुअल फंड स्कीम्स चलाती हैं। उनमें से कुछ का प्रदर्शन बहुत अच्छा है और कुछ का बहुत ख़राब। इसलिए किसी एक म्यूचुअल फंड स्कीम में संपूर्ण पैसे का निवेश करने की सलाह विशेषज्ञों द्वारा नहीं दी जाती। अलग-अलग प्रकार एवं प्रकृति की 4 या 5 म्यूचुअल फंड स्कीम्स में अपने पैसे को विभाजित (डाइवर्सिफाइड) कर के लगाना, औसत से ऊपर के या औसत के आसपास के प्रतिफल को सुनिश्चित करता है। म्यूचुअलफंड, निवेश के टारगेट इंस्ट्रूमेंट, यानी कि जहां वो पैसा अंततः जा के निवेशित होना है, के आधार पर सामान्यतः निम्न तरह के होते हैं:

1) डेब्ट म्यूचुअल फंड्स : ये म्यूचुअल फंड्स कम्पनियों या सरकार द्वारा जारी किए जाने वाले (फलस्वरूप ज्यादा सुरक्षित माने जाने वाले) debt इंस्ट्रूमेंट्स जैसे बॉन्ड्स या डिबेंचर इत्यादि में पैसा लगाते हैं।

2) इक्विटी म्यूचुअल फंड्स: ये सार्वजनिक (पब्लिक लिमिटेड) कंपनियों के इक्विटी या निशेयर्स में पैसा लगाते हैं तथा डेब्ट म्यूचुअल फंड की तुलना में कम सुरक्षित माने जाते हैं।

3) हाइब्रिड फंड्स: ये उपरोक्त दोनों जगहों पर पैसा लगाते हैं, अतः स्थायित्व वाले निवेश का माध्यम माने जाते हैं। डेब्ट म्यूचुअल फंड की सब कैटेगरीज (sub categories) सामान्यतः निवेश की समयावधि के आधार पर होती हैं, जैसे लिक्विड फंड्स (कुछ दिनों या कुछ हफ़्तों, जैसे 90 डाइंस कम के अवधि तक के निवेश हेतु फंड्स), अल्ट्रा शॉर्ट टर्म फंड्स (कुछ महीनों के लिए, पर 6 महीने से कम की अवधि के लिए निवेशित फंड्स) शॉर्टटर्म फंड्स (एक से दो साल से कम के फंड्स में निवेशित फंड्स), मीडियम टर्म फंड्स (2 से 3 साल तक की अवधि वाले फंड्स), लॉन्ग टर्म फंड्स (4, 5, 7 साल या अधिक अवधि तक के फंड्स) इत्यादि। इनके अलावा भी इनके कुछ वर्ग होते हैं, जिनकी चर्चा संदर्भ को छोटा रखने हेतु नहीं किया जा रहा है।

इक्विटीम्यूचुअलफंड की सब कैटेगरी (sub category) उन कंपनियों की साइज़ के आधार पर बनती है, जिन कंपनियों के शेयर्स/ इक्विटी में वो म्यूचुअल फंड्स पैसा लगाते हैं। कुछ मुख्य वर्गीकरण इस प्रकार हैं।

1) लार्ज कैप फंड्स: ये बहुत बड़ी कम्पनियों, उदाहरण के लिए 20 हज़ार करोड़ से अधिक मार्केट कैप वाली कंपनी के शेयर्स में उस फंड का बड़ा हिस्सा लगाने वाले म्यूचुअल फंड्स होते हैं। ये कम रिस्क वाले और कम रिटर्न देने वाले और

ज्यादा स्टेबलइंस्ट्रूमेंट होते हैं। अच्छे लार्ज कैप फंड्स10 साल या अधिक के कालखंड में औसतन 10 से 15% का रिटर्न देते हैं।

2) मिड कैप फंड्स: ये मझोली और बड़ी कंपनियों, उदाहरण के लिए 5 से 20 हज़ार करोड़ मार्केट कैप वाली कंपनी के शेयर्स अपने पैसे का बड़ा हिस्सा लगाते हैं। ये मध्यम रिस्क वाले और सामान्य औसत से अधिक रिटर्न देने वाले और ज्यादा स्टेबल इंस्ट्रूमेंट होते हैं। अच्छे मिड कैप फंड्स10 साल से अधिक के होराइजन (काल खंड) में औसतन 15 से 18% का रिटर्न देते हैं।

3) स्माल कैप फंड्स: ये छोटी कंपनियों, उदाहरण के लिए 5 हज़ार करोड़ मार्केट कैप वाली रिस्क वाले और सामान्य औसत से काफी अधिक रिटर्न देने वाले और कम स्टेबल इंस्ट्रूमेंट होते हैं। अच्छे स्माल कैप फंड्स10 साल या अधिक के होराइजन में औसतन 20 से 25% का रिटर्न देते हैं।

4) मल्टी कैप फंड्स: ये सभी साइज़ की कंपनियों के शेयर्स में पैसा लगाते हैं। कितना-कितना किस कैटेगरी की कंपनी के शेयर में निवेशित होगा ये लगभग पूर्व निश्चित होता है और इनका प्रतिफल भी उसी के अनुरूप कम, किंतु ज्यादा स्टेबल होता है। अच्छे मल्टी कैप फंड्स10 साल या अधिक के होराइजन में औसतन 12 से 15% का रिटर्न देते हैं।

5) फ्लेक्सी कैप फंड्स: ये भी सभी साइज़ की कंपनियों के शेयर्स में पैसा लगाते हैं और इनका प्रतिफलभी उसी के अनुरूप कम, किंतु ज्यादा स्टेबल होता है। फ्लेक्सी कैप और मल्टी कैप में सिर्फ यह अंतर होता है कि फ्लेक्सीकैप, अपनी निवेश की क्रियाविधि (मैकेनिज्म) में मल्टीकैप की तुलनामें कहीं अधिक फ्लेक्सिबल होता है, और कई बार यह हाइब्रिड (डेब्ट और इक्विटी दोनो में पैसा लगाने वाला उपकरण) प्रकृति का होता है। अच्छे फ्लेक्सी कैप फंड्स भी 10 साल या अधिक के होराइजन में औसतन 12 से 15% का रिटर्न देते हैं।

संक्षिप्त रखने हेतु कुछ कम लोकप्रिय वर्गों की चर्चा यहां नहीं की जा रही है।

जिस प्रकार शेयर्स के आईपीओ (इनिशियल पब्लिक ऑफर) आम जनता द्वारा खरीदने के लिए समय-समय पर जारी होते हैं, वैसे ही म्यूचुअल फंड में नई स्कीम के NFO (new fund offer) समय समय पर आते हैं, यानी की NFO के ज़रिए म्यूचुअल फंड्स को प्राइमरी मार्केट से भी खरीदा जा सकता है, और बाद में उन्हीं यूनिट्स को सेकेंडरी मार्केट्स यानी स्टॉक एक्सचेंज या फिर कंपनी या डिस्ट्रीब्यूटर की वेबसाइट (इन सबको सेकेंडरी मार्केट कहते हैं) से

भी खरीदा जा सकता है। यानी कि NFO के जरिए कंपनी अपना नया फंड लॉन्च करती है और बताती है कि इस म्यूचुअल फंड (उसका एक नाम भी निर्धारित किया जाता है) की एक यूनिट का मूल्य क्या है और पूरा ऑफर कितने रुपए का है, और पूरा पैसा किन किन कंपनियों के शेयर्स/बॉन्ड्स में किस-किस अनुपात में लगाया जा रहा है। NFO जारी होने (यानी लॉन्च होंने) के बाद उस म्यूचुअल फंड की जितनी ज्यादा यूनिट्स बिकती जाएंगी उतना पैसा उस फंड हाउस के पास आता जायेगा और वो उस पैसे को उसी पूर्व घोषित अनुपात में अलग अलग कंपनियों के शेयर्स या बॉन्ड्स में लगाते जायेंगे। इस पूरी प्रक्रिया में बीच बीच में आवश्यकता के अनुसार निवेश के अनुपात बदलते रहते हैं। अगर किसी फंड हाउस को किसी स्कीम विशेष में 1000 करोड़ रुपए मिल गए हैं तो कहा जाता है की इस म्यूचुअल फंड स्कीम (यानी उस प्रोडक्ट का, ना की म्यूचुअल फंड जारी करने वाली कंपनी का) AUM (asset under management) 1000 करोड़ रुपए का है, जो कि एक छोटी साइज़ का फंड माना जाता है। मार्केट में 500 करोड़ से ले कर 1 लाख करोड़ से अधिक तक के AUM वाले म्यूचुअल फंड स्कीम्स हैं। 5000 करोड़ तक के AUM वाले फंड को उपयुक्त साइज का (न बहुत छोटा, न बहुत बड़ा) माना जाता है। ज़ाहिर सी बात है कि जिस फंड का प्रदर्शन जितना अच्छा होगा, उसकी यूनिट्स लोग उतनी ही ज्यादा खरीदेंगे और उसका AUM उतना ही तेजी से बढ़ता जायेगा, और उस फंड को खरीदने का खर्च उसी अनुपात में (अर्थात एक्सपेंसरेशियो) कम होता जाएगा।

म्यूचुअल फंड स्कीम की यूनिट्स को जब हम फंड हाउस से सीधे खरीदते हैं तो उसको डायरेक्ट प्लान कहते हैं, ऐसी स्कीम के नाम के आगे D लिखा रहता है, डायरेक्ट प्लान में खर्च कम लगता है खर्च अर्थात् एक्सपेंसरेशियो कम होता है। उसी म्यूचुअल फंड को जब हम किसी डिस्ट्रीब्यूटर (जैसे मल्टी ब्रांड रिटेल शोरूम से कोई सामान खरीदना) से खरीदते हैं तो उसको रेगुलर प्लान कहते हैं, ऐसी स्कीम के आगे R लिखा रहता है कहते हैं, इसमें खर्च काफी बढ़ जाता है । अब सवाल उठता है कि ये खर्च किस तरह का होता है? म्यूचुअल फंड कंपनी हमारे आपके लिए स्कीम चलाती है, रिसर्च कर के एक बेहतर प्रोडक्ट बनाती है, उसको लॉन्च करती है, तो कंपनी उसके बदले में हमसे एक फीस लेती है, उसी को खर्च अनुपात (एक्सपेंसरेशियो) कहते हैं। एक्सपेंस औसतन 0.4% से ले कर 2% तक भी होता है। यह खर्च खरीदते एवं बेचते दोनों समय लगता है, इसलिए वास्तविक खर्च कंपनी द्वारा वेबसाइट पर दिखाए गए खर्च का दोगुना हो जाता है। इसके अलावा ब्रोकर का ब्रोकरेज या डिस्ट्रीब्यूटर का खर्च अलग से लगता है, जिनके बारे में निवेशक को पता होना चाहिए और बिना आवश्यक पूछताछ के निवेश करने से बचना चाहिए। 0.5% का एक्सपेंसरेशियो उपयुक्त माना जाता है। एक्सपेंसरेशियो बहुत अधिक होने

पर निवेशक को लॉन्ग टर्म में काफी नुकसान हो जाता है, यानि कि अंतिम प्रतिफल (रिटर्न्स) में कमी हो जाती है। अगर किसी फंड का घोषित एक्सपेंसरेशियो 0.5% है तो विभिन्न अन्य खर्चे एवं कर मिलाकर वास्तव में यह खर्च 1.5% से अधिक हो जाता है।

सभी म्यूचुअल फंड्स लगभग 70 से 100 कंपनियों के शेयर्स या बॉन्ड्स में विविधतापूर्ण तरीके से निवेश करते हैं, इसलिए उनमें लंबी अवधि के संदर्भ में पूंजी या स्कीम के डूबने का जोखिम कम (लगभग शून्य) हो जाता है, रेट ऑफ रिटर्न भले ही थोड़ा कम या ज्यादा हो। इतना पर्याप्त डाइवर्सिफिकेशन निवेशकों के भय को आमूल समाप्त करने के लिए बहुत पर्याप्त होता है।

म्यूचुअल फंड्स चूंकि बॉन्ड और इक्विटी या दोनो में पैसा लगाते हैं तो बॉन्ड्स से वार्षिक ब्याज(एनुअल इंटरेस्ट) या शेयर्स से वार्षिक/ पाक्षिक/ त्रैमासिक लाभांश (डिविडेंड) भी मिलता रहता है। निवेशक के पास विकल्प होता है किवह अपने म्यूचुअल फंड स्कीम से मिलने वाले डिविडेंड या ब्याज को अपने बैंक अकाउंट में डिपॉजिट करवाना चाहता है, या फिर उतने पैसे की अतिरिक्त यूनिट्स खरीदते रहना चाहता है। अगर निवेशक पहला ऑप्शन चुनता है तो उसे डिविडेंड प्लान कहते हैं, और अगर वो दूसरा ऑप्शन चुनता है तो उसको ग्रोथ प्लान कहते हैं। ग्रोथ प्लान वाली स्कीम के नाम के आगे (G) लिखा रहता है, अगर किसी स्कीम के नाम के आगे G नहीं लिखा है तो इसका मतलब है कि वह उसी स्कीम का डिविडेंड प्लान वाला संस्करण है। लगभग सभी स्कीम्स के ये दोनो संस्करण (वर्जन) होते हैं। यानी की समय के साथ वर्ष दर वर्ष न सिर्फ यूनिट्स की NAV बढ़ती रहती है, बल्कि यूनिट्स की संख्या भी बढ़ती रहती है, और वो दोनो ही कंपाउंडिंग इफेक्ट के चलते बाद के सालों में (करीब करीब10 से 15 साल बाद) अप्रत्याशित तेजी से बढ़ने लगते हैं। कंपाउंडिंग के अप्रत्याशित प्रभाव की वजह से इक्विटी म्यूचुअल फंड निवेश धैर्य का काम माना जाता है। कंपाउंडिंग के गंभीर प्रभाव की तुलना चीनी बांस के पेड़ (चाइनीज बैंबू ट्री) से की जा सकती है। आप में से बहुत कम लोगों को पता होगा कि चाइनीज बैंबू शुरुआती एक साल में कुछ इंच का, 2 सालों में केवल एक दो फीट का होता है, उसके बाद के दो सालों में कुछ फीट का (6 से 8 फीट) होता है और पांचवें साल की शुरुआत के कुछ हफ्तों में वह तेजी से बढ़ते हुए बहुत कम समय में लगभग 80 से 90 फीट का हो जाता है।

अब प्रश्न आता है कि क्या म्यूचुअल फंड्स में

निवेश कर बचत का उपकरण होता है ?? और अगर हां तो क्या सभी म्यूचुअल फंड्स ऐसे उपकरण होते हैं?? इस प्रश्न का उत्तर लेख के आगे आने वाले हिस्से में मिलेगा।

ऊपर वर्णित सभी तरह के इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में से (न कि डेब्ट म्यूचुअल फंड्स में से) कुछ म्यूचुअल फंड्स को फंड हाउसेस और सरकार द्वारा उनकी संरचना और विश्वसनीयता के आधार पर ELSS का दर्जा दिया गया है, जिनमें निवेश करने पर उतनी राशि को इनकम टैक्स से मुक्त माना जाएगा। करीब 35 के आस-पास की संख्या में ELSS हैं, जो काफी लोकप्रिय हैं । पुनरावृत्ति की कीमत पर, पुनः स्पष्ट कर दें कि, ELSS कैटेगरी में सिर्फ इक्विटी में पैसा लगाने वाले म्यूचुअल फंड ही होते हैं, यानि कि इसमें बॉन्ड वाले म्यूचुअल फंड्स या हाइब्रिड वाले म्यूचुअल फंड्स नहीं होते। इसके पीछे सरकार की मंशा येहोती है कि लोग इक्विटी मार्केट्स की तरफ जाने में थोड़ा उत्साहित हों, क्योंकि भारत में इक्विटी निवेश अभी भी कुल निवेश के लगभग 8% से भी कम है जबकि विकसित देशों और कुछ विकास शील देशों में भी ये औसत 30% से लेकर 60 % तक है। भारत में लोग अभी भी पारंपरिक निवेशों, जैसे ज़मीन ज़ायदाद, सोना चांदी, बैंक एफडी इत्यादि में ही निवेश करना पसंद करते हैं, इसलिए देश के तेज विकास के लाभ में अपना हिस्सा पाने से वंचित रह जाते हैं। चीन के बाद भारत विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती हुई बड़ी अर्थव्यवस्था है, ऐसे में आने वाले 2 या 3 दशकों में तेज विकास (acceleretaed growth) अवश्यंभावी है, और इस तेज विकास का लाभ फुटकर निवेशक को सबसे ज्यादा इक्विटी इंस्ट्रूमेंट्स में ही मिलता है। इसका कारण यह है कि तेज विकास का लाभ सबसे पहले कॉरपोरेट्स को मिलता है और अगर किसी ने कॉर्पोरेट्स में भागीदारी की हुई है (इक्विटी/शेयर्स के माध्यम से) तो उसको उस लाभ में प्रत्यक्ष सहभाग हो पाता है।

अब प्रश्न आता है कि टैक्स सेविंग इंस्ट्रूमेंट के तौर पर ELSS, जीवन बीमा या पीपीएफ (लोक भविष्य निधि) से क्यों बेहतर है?? पिछले 2 दशकों से सभी इंस्ट्रूमेंट का सावधानी से अध्ययन करने पर देखा गया है कि जहां एक तरफ पीपीएफ तथा एफडी इत्यादि में रेट ऑफ रिटर्न लगातार नीचे गिर रहा है तो वहीं दूसरी तरफ इक्विटी इंस्ट्रूमेंट्स में रेट ऑफ रिटर्न (कंपाउंडेड एनुअल ग्रोथ रेट) लंबी अवधि के क्षितिज में या तो स्टेबल है या फिर ऊपर की तरफ जा रहा है, उदाहरण के लिए पीपीएफ1999 से 2000 तक 12%, 2000 से 2001 तक 11%, उसके बाद 2003 तक 9 से 9.5% के बीच, उसके बाद 2003 से 2011 तक 8 से 9% के बीच, फिर 2011 से 2017 के बीच 8 से 8.5% के बीच, फिर 2017 से 2021 के बीच 7.5 से 7.1 के बीच रहा है। इसमें बीच के एकाध वर्ष में मामूली से अपवाद हैं, पर ये अपवाद इतने मामूली हैं कि उनको उपेक्षित किया जा सकता है। लगभग यही रेट ऑफ रिटर्न बाकी के सभी इंस्ट्रूमेंट्स जैसे एफडी या किसान विकास पत्र या राष्ट्रीय बचत पत्र भी देते रहे हैं। ULIPS पर मिलने वाले

रिटर्न्स पारंपरिक आर्थिक उपकरणों से बेहतर तो हैं, पर ELSS से बेहतर भी नहीं हैं, और ELSS जितना सरल भी नहीं हैं। संदर्भ हेतु संक्षेप में बता दें कि यूलिप वर्ग के उत्पाद, इक्विटी एवं जीवन बीमा को मिलाकर बनाए गए उत्पाद हैं जो अपनी प्रकृति की वजह से थोड़ा जटिल होते हैं।

स्वतंत्र रूप में जीवन बीमा के प्रोडक्ट्स में अगर टर्म इंश्योरेंस में निवेश कर रहे हैं, तब तो अलग वजहों से (परिवार की सुरक्षा के अप्रतिम मूल्य की वजह से) वह एक बेहतर टैक्स सेविंग उपकरण बन जाता है, अन्यथा जीवन बीमा की endowment वर्ग की स्कीम्स में ऐतिहासिक तौर पर कंपाउंडेड एनुअल ग्रोथ रेट बहुत ही कम (5% से 6.5% के बीच ही) होती है। यूलिप वर्ग के जीवन बीमा उत्पाद, एंडोवमेंट वर्ग के स्वतंत्र जीवन बीमा उत्पादों से तुलनात्मक रूप से बेहतर होते हैं।वहीं दूसरी तरफ ELSS वर्ग की अच्छी स्कीम्स के रेट ऑफ रिटर्न 3 साल के टाइम होराइजन में बहुत अस्थिर होने के बावजूद 10 से 12% होते हैं। बीते 2 दशकों में ELSS ने समान्य तौर पर 5 साल के टाइम होराइजन में थोड़ा अस्थिर होने के साथ साथ12 से 20% तथा 10 या उससे अधिक साल के टाइम होराइजन में स्थिरता के साथ 15 से 20% का रिटर्न दिया है। ELSS में अलग अलग स्कीम का रेट ऑफ रिटर्न अलग अलग होता है, जो की फंड मैनेजर की काबिलियत और फंड हाउस की क्षमता पर निर्भर करता है।

ELSS में निवेश बाकी के अन्य सभी इंस्ट्रूमेंट (टर्म लाइफ इंश्योरेंस को छोड़ कर) से बेहतर क्यों हैं ?? ये जानने के लिए दो गणितीय/अर्थशास्त्रीय समीकरण समझना आवश्यक है। 72 की संख्या में उस इंस्ट्रूमेंट/स्कीम के औसत वार्षिक रेट ऑफ रिटर्न से भाग देने पर जो संख्या आती है, ठीक उतना वर्ष लगता है निवेशित राशि के दो गुना हो जाने में। उदाहरण के लिए अगर हमारे इंस्ट्रूमेंट का औसत वार्षिक रेट ऑफ रिटर्न 9% है तो 72/9 = 8 वर्ष लगेंगे 1.5 लाख रुपए को 3 लाख रुपए हो जाने में। यहां 1.5 लाख का उदाहरण इसलिए लिया जा रहा है क्योंकि हम सभी को आयकर की संबंधित धाराओं के अधीन 1.5 लाख रुपए की राशि ही वार्षिककर छूटयोग्य निवेश की सीमा में आती है।

अब वास्तविकता के धरातल पर दोनों उपकरणों यानी पीपीएफ और ELSS की तुलना करते हैं।

वर्तमान में पीपीएफ पर इंटरेस्टरेट 7.1 परसेंट है, तो 72/7.1= 10 साल (तकरीबन) में पूंजी दो गुना यानी 3 लाख हो जायेगी। पीपीएफ का लॉक इन पीरियड15 वर्ष है, जिसको 5 और 5 के विभिन्न खंडों में आगे अपनी इच्छा से बढ़ाते रहने का विकल्प होता है । ऐसी स्थिति में 15, 20, 25, 30 साल के काल खंडों की तुलना करने से स्थिति स्पष्ट होगी।

15 साल में मूल 1.5 लाख रुपए हो जायेंगे 4.50 लाख।

20 साल में वो पूंजी हो जायेगी 6 लाख, 25 साल में हो जायेगी 9 लाख और 30 साल में 12 लाख रुपए हो जायेगी।

अब ELSS, जिसका कि स्थिरता के साथ वाला (10 साल टाइम होराइजन का) रेट ऑफ रिटर्न है 12 से 20%. इसका एवरेजरेट ऑफ रिटर्न हम 15 % मान सकते हैं पर अतिरिक्त एहतियात के साथ हम सबसे कम वाली यानी 12 % रेट ऑफ रिटर्न वाली स्कीम के कैपिटलाइजेशन की गणना कर लेते हैं।

72/12= 6 वर्ष यानी फंड्स हर 6 साल में दोगुने होते जायेंगे। इस प्रकार 1.5 लाख का मूल निवेश 30 साल में 5 आरडबल होगा।

6th year 3 lac

12th year 6 lac

18th year 12 lac

24th year 24 lac

30th year 48 lac.

परंतु तुलना अभी खत्म नहीं हुई हुई है। पीपीएफ के रिटर्न्स पर टैक्स नहीं लगता, इसलिए 12 लाख का पूरा 12 लाख आपको मिल जायेगा पर ELSS के रिटर्न्स पर आज के टैक्स कानून के हिसाब से 10% टैक्स लगता है, तो 48 लाख में से 10% यानी 4.8 लाख टैक्स लग जाएगा, जिसमेसे 1 लाख पर टैक्स छूट अलग से मिलती है (वर्तमान कानून के हिसाब से लॉन्गटर्म कैपिटल गेन1 लाख रुपए तक ही करमुक्त है), तो बचेगा 44.2 लाख रुपए।

अर्थात् उसी टाइम फ्रेम में जहां पीपीएफ का रिटर्न12 लाख है वहीं ELSS की एक औसत प्रदर्शन वाली स्कीम (न कि बेस्ट परफॉर्मर्स) का भी औसत रिटर्न्स 40+ लाख होगा । परसेंटेजटर्स में ये अंतर (लगभग 350+%), ज़मीन और आसमान का है।

वर्तमान परिदृश्य में इस सरल गणितीय तथ्य और मिश्र ब्याज दर के जादू (मैजिक ऑफ कंपाउंडिंग) को समझने वाला व्यक्ति कभी भी भूल कर भी पीपीएफ में निवेश नहीं करेगा। केवल कम रिस्क और सुरक्षा के नाम पर 44.2 लाख के बदले गैर जागरूक निवेशक 12 लाख से संतुष्ट हो जाता है।पीपीएफ एक आकर्षक निवेश था 2011 एवं 2012 तक, जब तक कि उसपर ब्याज की दर करीब 9% (करमुक्त) थी, हालांकि तब भी वह ELSS के आस-पास भी नहीं थी पर जागरूकता के अभाव में लोग ELSS में निवेश नहीं करते थे। ELSS में निवेश न करने की एक वजह तकनीकी भी थी। इन प्रोडक्ट्स तक कम जागरूक एवं आर्थिक सिद्धांतों को ठीक से न जानने वाला इंसान विस्तृत पहुंच के अभाव की वजह से भी नहीं जा पाता था।

कुछ लोग ये सवाल कर सकते हैं किपीपीएफ में रिस्क शून्य है पर इस ELSS में तो पूंजी डूबने का खतरा (रिस्क) है, तो ज्यादा रेट ऑफ रिटर्न्स का क्या फायदा??

यहां दो चीजें समझने की हो सकती हैं, पहली ये कि जिसको हम इक्विटी मार्केट के संदर्भ में बाज़ार का रिस्क कहते हैं, वो वास्तव में रिस्क है ही नहीं, वो एक शॉर्टटर्म की वोलेटिलिटी (इक्विटी/शेयर्स के मूल्यों में तेज उतार चढ़ाव) है। लंबी अवधि के निवेशक को (10 वर्ष से अधिक अवधि वाले) को वोलेटिलिटी की चिंता करनी ही नहीं चाहिए, क्योंकि10 साल या अधिक की

अवधि में दुनिया भर के वित्तीय बाज़ारों के इतिहास में ऐसा एक भी उदाहरण नहीं है जहां इक्विटी इंस्ट्रूमेंट्स ने debt इंस्ट्रूमेंट्स (प्रकृति के अनुरूप पीपीएफ etc भी डेब्ट इंस्ट्रूमेंट्स ही हैं) से कम का निवेश प्रतिफल दिया हो। यानी कि अगर 12% रिटर्न न भी मिला तो पीपीएफ से अधिक रिटर्न मिलेगा, इस बात के ऐतिहासिक तथ्य अधिक हैं और इस तथ्य पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं दिखता। लंबी अवधि में यदि किसी वजह से इक्विटी मार्केट (यानी ELSS) का रिटर्न घटा, तो उन्हीं वजहों से एक पृथक आर्थिक साइकिल में पीपीएफ का रिटर्न भी 7.1% से भी नीचे जायेगा।

अब अगला सवाल ये है की ELSS में हर महीने सिस्टेमेटिक इन्वेस्ट मेंट प्लान (SIP) को फॉलो कर के निवेश करना चाहिए या फिर एकमुश्त निवेश करना चाहिए। मेरा मानना है की मासिक SIP तभी करनी चाहिए जब ये पक्का हो कि हर माह एक निश्चित तिथि पर उतना पैसा संबंधित बैंक अकाउंट में मौजूद होगा, ऐसा न होने पर न सिर्फ निवेश का चित्र एवं अनुशासन बिगड़ता है बल्कि कम्पनी कुछ रुपए का विलंब शुल्क (लेट फीस) भी लगा सकती है। इसलिए बेहतर होगा कि इसको मासिक न करके पाक्षिक आधार पर अनुशासन पूर्वक किया जाए।एकमुश्त निवेश करने पर वित्तीय बाज़ार के उतार-चढ़ाव से सुरक्षा भी नहीं मिल पाती इसलिए भी एकमुश्त निवेश उचित फलदाई नहीं माना गया है।

इस विषय में विशेषज्ञों की एक स्पष्ट सलाह और है कि लोग अगर भावनात्मक कारणों से पीपीएफ में निवेश करना ही चाहें तो निवेश की मात्रा को कम से कम रख कर के कुछ निवेश ELSS में भी कर सकते हैं। उपरोक्त निष्कर्ष के विरुद्ध हमें आवश्यक अध्ययन करना चाहिए और भावनात्मक वजहों को अपनी भावी संपत्ति का विनाश करने का कारण बनने से रोकना चाहिए।

150000 रुपए वार्षिक (37500 हर क्वार्टर) ELSS में निवेश करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम 3 अलग-अलग स्कीम्स में निवेश करना ठीक रहता है ताकि बीच में कभी पैसों की आकस्मिक ज़रूरत पड़ जाए तो निवेशक किसी एक स्कीम को ही बंद करे बाकी की 2 स्कीम्स कंपाउंड होती रहें, कम से कम उतने वर्ष तक जितने वर्ष तक लोग पीपीएफ का लॉक इन बर्दाश्त करते (यानी कम से कम 15 वर्ष, क्योंकि पीपीएफ में लॉक इन पीरियड15 वर्ष होता है), वैसे टाइम जितना ज्यादा होगा कंपाउंडिंग का प्रभाव उतना ही अच्छे से निकल के आएगा।

उपरोक्त विमर्श एक शैक्षणिक बहस है, इसका मकसद एक वैकल्पिक उपकरण पर चर्चा की शुरुआत करना मात्र है। इसको व्यक्तिगत वित्त प्रबंधन का विमर्श मानना उचित नहीं होगा, प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताएं और उम्मीदें अलग-अलग होती हैं, अतः अपनी आकांक्षाओं और आवश्यकताओं के अनुरूप किसी पंजीकृत एवं समेकित व्यक्तिगत निवेश सलाहकार (इंटीग्रेटेड फाइनेंशियल एडवाइजर) से राय लेने के बाद ही अपने निवेश के सोपान पर आगे बढ़ें।

****

करौली और धौलपुर में पत्थर तोड़ते खनन मजदूरों को लगा सिलिकोसिस बीमारी का दंश!

खनन सिर्फ़ उसमें काम करने वाले मजदूरों को ही सिलिकोसिस बीमारी से प्रभावित नहीं करता बल्कि संपूर्ण परिवार को बड़े आर्थिक संकट का दंश भी देकर जाता है। ब्याज पर लाखों रुपये कर्ज लेकर पीड़ित का इलाज कराया जाता है, मृत्यु के बाद क़र्ज़ का बोझ पूरे परिवार को सालों तक परेशान करता है। कई मामलों में तो यह अगली सात पीढ़ियों तक को आर्थिक तंगी के रूप में प्रभावित करता है।यह बीमारी इतनी घातक है कि एक बार किसी के शरीर से जुड़ जाए तो उसकी मौत होना निश्चित है।खान मजदूर सिलिकोसिस जैसी गंभीर बीमारी से तो लड़ रहे हैं,लेकिन सरकारी तंत्र के आगे हार रहे हैं। सरकार की ओर से सिलिकोसिस पीड़ितों को आर्थिक सहयोग तो मुहैया करवाया जाता है, लेकिन बिचौलियों और दलालों के चक्कर में सिलिकोसिस पीड़ित मजदूरों को उनका हक़ नहीं मिल रहा है।पीड़ितों को सरकारी सहायता राशि मिलने की प्रक्रिया इतनी जटिल है कि बीमारी से जूझते हुए मजदूर को सहायता नहीं मिलती और मरने के बाद उसके परिवार को दर-दर की ठोकरें खाने को मजबूर कर देती है। सिलिकोसिस पीड़ित को सरकार की ओर से जीते जी 3 लाख रुपए तथा मरने के बाद परिजनों को 2 लाख रुपए। कुल पांच लाख रुपए सहायता राशि के रूप में मिलते हैं। इसके अलावा सरकार जीवित मजदूर को 1500 रुपए मासिक पेंशन देती है। मरीज़ के मरणोपरांत उसकी विधवा पत्नी को विधवा पेंशन मिलती है। बच्चों के पालन के लिए पालनहार योजना से मदद की जाती है ।

सोच बदलो-गांव बदलो टीम के कार्यकर्ताओं ने सिलिकोसिस पीड़ितों की मदद का बीड़ा उठाया !

करौली जिले में लंबे समय से सिलिकोसिस पीड़ित मरीजों को सहायता राशि दिलाने के लिए प्रयासरत मासलपुर क्षेत्र के सामाजिक एवं आरटीआई कार्यकर्ता एवं सोच बदलो-गांव बदलो-टीम युवा विकास समिति के वरिष्ठ सदस्य श्री मनीराम मीना ने राज्य सरकार के सिलिकोसिस पोर्टल से करौली जिले के सिलोकोसिस मरीजों का डाटा संकलित कर अध्ययन किया;जिसमें जिला क्षय रोग अधिकारी करौली के द्वारा 1571 सिलिकोसिस सर्टिफिकेट जारी किए जा चुके हैं। इनमें मुख्य रूप से सत्यापन के नाम पर पेंडेंसी लेबर डिपार्टमेंट के पास 768,खनन विभाग के पास 376, नोडल अधिकारी के पास 35 और अन्य शेष केसों में इन्हीं विभागों के द्वारा सैंक्शन जनरेट हो गई लेकिन सहायता राशि नहीं मिली, जबकि दूसरी तरफ़ राज्य सरकार ने ३ अक्टूबर 2019 को संपूर्ण प्रदेश में सिलिकोसिस नीति लागू कर दी; जिसमें सिलोकोसिस पीड़ित सर्टिफिकेट धारक को 3 लाख रुपये की आर्थिक सहायता और सिलिकोसिस रोगी के मृत्यु उपरांत

उनके परिवारजनों को २ लाख रुपये की आर्थिक सहायता की राशि का प्रावधान रखा ।
सिलोकोसिस पॉलिसी लागू हुए २ साल हो गए लेकिन करौली जिले में आज भी सिलिकोसिस पीड़ित मरीज वेरिफिकेशन के नाम पर केस के पेंडिंग होने तथा सर्टिफिकेट धारक कई सालों से सहायता राशि के इंतज़ार में ही दम तोड़ देते हैं।

सोच बदलो-गांव बदलो टीम के कार्यकर्ताओं ने डिजिटल प्रयासों से सिलिकोसिस पीड़ितों को दिलवाई सहायता राशि।

सोच बदलो-गांव बदलो टीम के कार्यकर्ता ने सभी 1571 सिलिकोसिस सर्टीफिकेट धारकों का पेंडेंसी वाइज डेटा कलेक्ट कर मुख्यमंत्री कार्यालय को ईमेल किया। मुख्यमंत्री कार्यालय ने दिनाँक 29 जुलाई 2021 को श्रीमान जिला कलेक्टर करौली को जिले के सभी सिलिकोसिस सर्टिफिकेट धारकों के लंबित प्रकरणों के निस्तारण हेतु कार्यवाही करने संबंधी लिखित दिशा-निर्देश जारी किए और साथ ही की गई कार्यवाही की तथ्यात्मक रिपोर्ट भेजने के भी दिशा-निर्देश जारी किए। मुख्यमंत्री कार्यालय को प्रेषित ईमेल की दिनाँक से 1 सप्ताह के भीतर सीएम ऑफिस ने ज़िला कलेक्टर को आवश्यक कार्यवाही के लिए लिखित दिशा-निर्देश जारी किए गए; जिसके परिणामस्वरूप जिला प्रशासन ने स्थानीय प्रशासन के माध्यम से उन लोगों के घर-घर जाकर सम्बंधित डॉक्यूमेंट एकत्रित किए। तदोपरांत 1 से 2 माह के भीतर ईमेल पर भेजे गए सिलकोसिस सर्टिफिकेट धारक जीवित व्यक्तियों के खाते में 3 लाख की सहायता राशि जमा हो गई। कई सिलिकोसिस सर्टिफिकेट धारक ऐसे व्यक्ति थे; जिनको जीवित रहने के दौरान सर्टिफिकेट होते हुए राशि नहीं मिली तथा खनन मजदूर को सहायता राशि के इंतज़ार में दम तोड़ना पड़ गया। ऐसे सभी सिलिकोसिस सर्टिफिकेट मृतक व्यक्तियों के आश्रितों से सोच बदलो-गांव बदलो टीम के कर्मठ कार्यकर्ता श्री मनीराम जी ने घर-घर जाकर सिलिकोसिस सर्टिफिकेट ,जन आधार, आधार कार्ड, बैंक अकाउंट स्टेटमेन्ट एवं अन्य डॉक्यूमेंट एकत्रित करके केस वाइज डिटेल नोट बनाकर मुख्यमंत्री कार्यालय को ईमेल के माध्यम से प्रेषित किए गए तथा पत्राचार पर की गई कार्यवाही का फॉलोअप लेने के लिए ऑनलाइन RTI फ़ाइल करते रहे।इन प्रयासों के परिणामस्वरूप उन सभी सर्टिफाइड मृतक आश्रितों के परिजनों के खाते में 5-5 लाख की राशि जमा हो गई।

इस प्रकार सोच बदलो-गांव बदलो टीम के कर्मठ कार्यकर्ता श्री मनीराम जी के डिजिटल प्रयासों से मासलपुर क्षेत्र में सिलिकोसिस सर्टिफिकेट धारक जीवित व्यक्तियों व सर्टिफाइड मृतक के आश्रितों को दिलवाई गई सहायता राशि की केस वाइज डिटेल आप सभी के लिए अवलोकनार्थ प्रस्तुत है :-

दैनिक भास्कर करौली 14-08-2021

करौली-हिंडौन भास्कर

ग्राउंड स्टोरी • पेट के लिए पत्थर फोड़ते खनन मजदूरों की व्यथा, उपचार के लिए सहायता राशि की दरकार, आखिर कैसे होगी सुनवाई

खनन मजदूरी में सिलिकोसिस से पीड़ित 1571 मजदूरों को सर्टिफिकेट बनने के 2 साल बाद भी नहीं मिली सहायता राशि

सरकार ने सिलिकोसिस नीति लागू कर सहायता के लिए रखा है प्रावधान

मासलपुर। खनन क्षेत्र जहां पर कार्य करते हुए कई मजदूर हो जाते हैं सिलिकोसिस का शिकार।

सिलिकोसिस सर्टिफिकेट फिर भी इन मरीजों को नहीं मिली सहायता राशि

मुख्य मंत्री कार्यालय
राजस्थान सरकार

29 JUL 2021

कलक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट,
करौली।

विषय: सिलिकोसिस सर्टिफिकेट धारक मरीजों को सहायता राशि दिलवाने के संबंध में।

महोदय,

उपरोक्त विषयक श्री मनीराम मीना पुत्र श्री गोविन्द प्रसाद मीना, निवासी गांव बड़ापुरा, पोस्ट भावली, तहसील मासलपुर, करौली द्वारा ईमेल से माननीय मुख्यमंत्री महोदय को संबोधित प्रार्थना पत्र का अवलोकन करने का श्रम करें।

निर्देशानुसार निवेदन है कि संलग्न प्रार्थना-पत्र में वर्णित तथ्यों के अनुक्रम में परीक्षण कर नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही कराते हुए की गयी कार्यवाही/वस्तुस्थिति की तथ्यात्मक रिपोर्ट से इस कार्यालय को अवगत कराने का श्रम करावें।

भवदीय,

(लक्ष्मण सिंह शेखावत)
उप सचिव (एलएस), मुख्यमंत्री

प्रतिलिपि–
श्री मनीराम मीना पुत्र श्री गोविन्द प्रसाद मीना, निवासी गांव बड़ापुरा, पोस्ट भावली, तहसील मासलपुर, करौली को सूचनार्थ।

उप सचिव (एलएस), मुख्यमंत्री

मुख्य मंत्री कार्यालय
राजस्थान सरकार

07 APR 2022

कलक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट,
करौली।

विषय: सिलिकोसिस सर्टिफाइड मृतक के आश्रित को सहायता राशि दिलवाने बाबत।

महोदय,

उपरोक्त विषयक श्री मनीराम मीना पुत्र श्री गोविन्द प्रसाद मीना, निवासी गांव बड़ापुरा, पोस्ट भावली, तहसील मासलपुर जिला करौली द्वारा ईमेल से मुख्यमंत्री कार्यालय में प्रेषित प्रार्थना पत्र का अवलोकन करने का श्रम करें।

निर्देशानुसार निवेदन है कि संलग्न प्रार्थना-पत्र में वर्णित तथ्यों के अनुक्रम में नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही कराने का श्रम करावें।

भवदीय,

(लक्ष्मण सिंह शेखावत)
उप सचिव (एलएस), मुख्यमंत्री

प्रतिलिपि–
श्री मनीराम मीना पुत्र श्री गोविन्द प्रसाद मीना, गांव बड़ापुरा, पोस्ट भावली, तहसील मासलपुर जिला करौली को सूचनार्थ।

उप सचिव (एलएस), मुख्यमंत्री

1) लाखनसिंह मीणा पुत्र श्रीगुटुआ

स्थायी पता:-गॉव बड़ापुरा, पोस्ट भावली तहसील मासलपुर,जिला करौली-322242 को सिलिकोसिस सर्टिफिकेट 30 नवम्बर 2018 को जारी हुआ लेकिन ढ़ाई साल से ज़्यादा बीत जाने के बावजूद भी मरीज़ को सिलिकोसिस सहायता राशि नहीं मिल पाई। सोच बदलो-गांव बदलो टीम के कार्यकर्ताओं के डिजिटल प्रयासों से सिलिकोसिस सर्टीफिकेट धारक श्री लाखन जी को दिनाँक 18 दिसम्बर 2021 को 3 लाख रुपये की राशि का भुगतान उनके खाते में हो गया।

Registration No	Registration Date	Bhamashah Id	Bhamashah Ack Id	Aadhar Number	Name	Nominee Name	Father Name	Spouse Name	Mobile Number	Bank Details (A/C No,IFSC,Bank)	Bill No/Sanction No	Bill Date/Sanction Date	Place Of Work	Current Status	Case	Status given on	District Name	Certificate
1900003515	01-02-2019	****CSS	**********0327	****27627358	Lakhan Singh Meena	NA	Gutua	Mankeshi	9116649575	(41350100003647,BARB0BRGBXX,BARODA RAJASTHAN KSHETRIYA GRAMIN BANK)	(2655,21292800)	(15/11/2021,14/11/2021)	Mining,Crusher,Factory Worker	Payment Done	Alive	18-12-2021	Karauli	

2) गोपीलाल पुत्र श्री स्व. सुका

स्थायी पता:-गॉव बड़ापुरा, पोस्ट भावली तहसील मासलपुर,जिला करौली-322242 को सिलिकोसिस सर्टिफिकेट 11 सितम्बर 2020 को जारी हुआ लेकिन 1 साल गुजरने के बावजूद मरीज़ को सिलिकोसिस सहायता राशिनहीं मिली कार्यकर्ताओं के डिजिटल प्रयासों(CMO को प्रेषित ईमेल और ऑनलाइन RTI) से सिलिकोसिस सर्टीफिकेट धारक श्री गोपीलाल जी को दिनाँक 18 दिसम्बर 2021 को 3 लाख रुपये की राशि का भुगतान उनके खाते में हो गया।

Registration No	Registration Date	Bhamashah Id	Bhamashah Ack Id	Aadhar Number	Name	Nominee Name	Father Name	Spouse Name	Mobile Number	Bank Details (A/C No,IFSC,Bank)	Bill No/Sanction No	Bill Date/Sanction Date	Place Of Work	Current Status	Case	Status given on	District Name	Certificate
2000094914	30-07-2020	****NBH	**********0102	****74979213	Gopilal	NA	Suka	Ful Vati	8003436279	(41350100001497,BARB0BRGBXX,BARODA RAJASTHAN KSHETRIYA GRAMIN BANK)	(2883,21252791)	(22/10/2021,08/10/2021)	Mining,Crusher,Factory Worker	Payment Done	Alive	18-12-2021	Karauli	

3) स्व.श्री भैरौलाल s/o भौरुलाल

स्थायी पता:-गांव दिमनपुरा पोस्ट भावली तहसील मासलपुर जिला करौली, सिलिकोसिस बीमारी से

पीड़ित थे; जिनका सिलकोसिस सर्टिफिकेट 23 अक्टूबर 2020 को संबंधित मेडिकल अधिकारियों के द्वारा जारी किया गया। श्री भैरौलाल जी को उचित समय पर सहायता राशि नहीं मिलने और उचित इलाज नहीं मिल पाने के कारण दिनांक 17 जुलाई 2021 को मृत्यु हो गई।कार्यकर्ताओं के डिजिटल प्रयासों से सिलिकोसिस सर्टीफिकेट धारक मृतक के परिजनों के खाते में दिनाँक 4 मई 2022 को कुल राशि 2 लाख रुपये का भुगतान हो गया।

Registration No	Registration Date	Bhamashah Id	Bhamashah Ack Id	Aadhar Number	Name	Nominee Name	Father Name	Spouse Name	Mobile Number	Bank Details (A/CNo,IFSC,Bank)	Bill No/Sanction No	Bill Date/Sanction Date	Place Of Work	Current Status	Case	Status given on	District Name	Certificate
2100157160	21-09-2021		***********5095	****59648405	Bhairo Lal	Jai bai	Bhauru Lal	Jai Bai	8052062545	(41350100006105,BARB0BRGBXX,BARODA RAJASTHAN KSHETRIYA GRAMIN BANK)	(3401,21293574)	(11/03/2022,20/04/2022)	Mining,Crusher,Factory Worker	Payment Done	Death	04-05-2022	Karauli	

4) स्व. मेघ राम s/o सोहन लाल

स्थायी पता:-गांव कसारा तहसील मासलपुर जिला करौली, सिलिकोसिस बीमारी से पीड़ित थे जिनको सिलकोसिस सर्टिफिकेट 31 मई 2019 को संबंधित मेडिकल अधिकारियों के द्वारा जारी किया गया। श्री मेघराम को उचित समय पर सहायता राशि नहीं मिलने और उचित इलाज नहींमिल पाने के कारण दिनांक अगस्त माह 2021 को मृत्यु हो गई। कार्यकर्ताओं के डिजिटल प्रयासों से सिलिकोसिस सर्टीफिकेट धारक मृतक के परिजनों के खाते में दिनाँक 7 जून 2022 को कुल राशि 5 लाख रुपये का भुगतान हो गया।

Registration No	Registration Date	Bhamashah Id	Bhamashah Ack Id	Aadhar Number	Name	Nominee Name	Father Name	Spouse Name	Mobile Number	Bank Details (A/CNo,IFSC,Bank)	Bill No/Sanction No	Bill Date/Sanction Date	Place Of Work	Current Status	Case	Status given on	District Name	Certificate
2200181433	17-01-2022		***********5960	****14571877	Meghram	Sua Bai	Sohan Lal	Sua Bai	9636525213	(23640100011901,BARB0TARHAT,BANK OF BARODA)	(3822,21294003)	(21/04/2022,21/04/2022)	Mining,Crusher,Factory Worker	Payment Done	Death	07-06-2022	Karauli	

5) स्व. मुन्नाराम कोली s/o करमोली

स्थायी पता:-गांव बड़ापुरा पोस्ट भावली तहसील मासलपुर जिला करौली, सिलिकोसिस बीमारी से पीड़ित थे जिनको सिलकोसिस सर्टिफिकेट 31 मई जुलाई 2019 को संबंधित मेडिकल अधिकारियों के

द्वारा जारी किया गया। श्री मुन्नाराम कोली को उचित समय पर सहायता राशि नहीं मिलने और उचित इलाज नहीं मिल पाने के कारण 26 मार्च 2019 को मृत्यु हो गई । कार्यकर्ताओं के डिजिटल प्रयासों से सिलिकोसिस सर्टीफिकेट धारक मृतक के परिजनों के खाते में दिनाँक 25 जुलाई 2022 को कुल राशि 5 लाख रुपये का भुगतान हो गया।

20000876 82	13-03-2020		********** 9567	****90824 202	Munnaram	Shribai	Kamoli	Shribai	8890969098	(23640100 004259,BARB0TARHAT,BANK OF BARODA)			Mining,Crusher,Factory Worker	Payment Done	Death	25-07-2022	Karauli	

6) श्री जगराम जी पुत्र श्री छोटू

स्थायी पता:-गॉव देवरा, पोस्ट:- खुडा तहसील मासलपुर,जिला करौली-322242 को सिलिकोसिस सर्टिफिकेट 11 फरवरी 2021 को जारी हुआ लेकिन डेढ़ साल गुजरने के बावजूद मरीज को सिलिकोसिस सहायता राशि नहीं मिली।कार्यकर्ताओं के डिजिटल प्रयासों से सिलिकोसिस सर्टीफिकेट धारक श्री जगरामजी का दिनाँक 18 दिसम्बर 2021 को 3 लाख रुपये की राशि का भुगतान उनके खाते में हो गया।

20001069 66	19-10-2020	****SJN	********** 5937	****92074 075	Jagram	NA	Chhotu	Shankar Bai	7895990402	(23640100 004229,BARB0TARHAT,BANK OF BARODA)	(2382,2109679)	(05/07/2021,05/07/2021)	Mining,Crusher,Factory Worker	Payment Done	Alive		Karauli	
20001069 66	19-10-2020	****SJN	********** 5937	****92074 075	Jagram	NA	Chhotu	Shankar Bai	7895990402	(23640100 004229,BARB0TARHAT,BANK OF BARODA)	(2382,2109679)	(05/07/2021,05/07/2021)	Mining,Crusher,Factory Worker	Pending At Nodal Officer	Alive	05-07-2021	Karauli	

7) स्व.श्रीफल s/o खच्चू जी

स्थायी पता:-गांव सकलूपुरा पोस्ट रुंधपुरा तहसील मासलपुर जिला करौली, सिलिकोसिस बीमारी से पीड़ित थे जिनको सिलकोसिस सर्टिफिकेट 16 दिसम्बर 2016 को संबंधित मेडिकल अधिकारियों के द्वारा जारी किया गया।श्रीफल जी को उचित समय पर सहायता राशि नहीं मिलने और उचित इलाज नहीं मिल पाने के कारण दिनांक 27 जनवरी 2017 को मृत्यु हो गई। कार्यकर्ताओं के डिजिटल प्रयासों से सिलिकोसिस सर्टीफिकेट धारक के परिजनों के खाते में दिनाँक 22 मार्च 2022 को कुल राशि 2 लाख रुपये का भुगतान हो गया।

20000043 51	31-01-2020	****IQK	********** 0672	****79245 105	Shrilal	Sheela	Kachchu	Sheela	99827564 76	(41350180 010770,B ARB0BR GBXX,BA RODA RAJASTH AN KSHETR IYA GRAMIN BANK)			Mining,Cr usher,Fac tory Worker	Payment Done	Death	22-03-2022	Karauli	

8) श्री सियाराम जी पुत्र श्री भैरो मीना स्थायी पता:-गॉव देवरा, पोस्ट:- खुडा तहसील मासलपुर ,जिला करौली-322242 का सिलिकोसिस सर्टिफिकेट 28 फरवरी 2020 को जारी हुआ , लेकिन डेढ़ साल गुजरने के बावजूद मरीज को सिलिकोसिस सहायता राशि नहीं मिली। सोच बदलो गांव बदलो टीम के कार्यकर्ताओं के डिजिटल प्रयासों (CMO को प्रेषित ईमेल और ऑनलाइन RTI) के फलस्वरूप सिलिकोसिस सर्टीफिकेट धारक श्री सियाराम जी को दिनाँक 4 मई 2022 को 3 लाख रुपये की राशि का भुगतान उनके खाते में हो गया।

19000310 18	25-09-2019	****BFC	********** 8508	****44568 027	Siyaram Meena	NA	Bhauru Meena	Pushma Devi	99838895 73	(06398100 019463,B ARB0KA RAUL,BA NK OF BARODA)	(3247,212 93413)	(25/02/202 2,20/04/20 22)	Mining,Cr usher,Fac tory Worker	Payment Done	Alive	04-05-2022	Karauli	

कई सिलिकोसिस मृतक के आश्रितों को ५ लाख रुपये की राशि मिली थी। सिलिकोसिस बीमारी की वजह से वर्षों से क़र्ज़ के बोझ तले दबे हुए मृतकों के आश्रित सहायता राशि से क़र्ज़ चुकाकर क़र्ज़ के दलदल से मुक्त हो गए। आज़ादी के ७५ साल गुजरने के बावजूद भी ग्रामीण अंचलों में ऐसे कई गरीब और जरूरतमंद परिवार मिल जाएंगे जो सरकार की कल्याणकारी योजनाओं के लाभ से अभी तक वंचित हैं। इन्हें सरकारी कार्यालयों में कई सालों तक दर-दर भटकने के बाद भी हक नहीं मिलता पाता।

सोच बदलो-गांव बदलो टीम का मानना है कि अगर हर गांव से कम से कम 5 ऐसे सक्रिय और जागरूक युवक स्वतः आगे आकर गरीब और ज़रूरतमंद लोगों की डिटेल व डॉक्यूमेंट के साथ मुख्यमंत्री कार्यालय में समय-समय पर ईमेल कर सकें, फ़ॉलोअप के लिए ऑनलाइन RTI लगा सकें तो काफ़ी हद तक हमारे गरीब और जरूरतमंद लोग न केवल दलालों के चंगुल से मुक्ति पा सकेंगे बल्कि सरकार से मिलने वाली लोक कल्याणकारी योजनाओं की सहायता राशि का लाभ उचित समय पर उठा सकेंगे।

कोविड-19 की दूसरी लहर के दौरान सोच बदलो गांव बदलो टीम के मानवीय प्रयास

कोरोना महामारी के विरुद्ध लड़ाई में सोच बदलो गांव बदलो टीम ने दूसरी लहर के दौरान भी अपने ज़मीनी प्रयासों को ज़ारी रखा। महामारी की पहली लहर के दौरान भी टीम की कोविड टास्क फोर्स ने ग्रामीण अंचलों में महामारी के प्रति जागरूकता अभियान चलाकर, मेडिकल किट, मास्क व सैनेटाईजर वितरण करते हुए कोरोना महामारी के विरुद्ध लड़ाई में सरकार और जिला प्रशासन के प्रयासों को मजबूती देने काकार्य किया। जब कोरोना की दूसरी लहर अपना भयावह रूप दिखाने लगी तो सोच बदलो गांव बदलो टीम द्वारा "SBGBT कोविड-19 टास्क फोर्स-2021" का गठन किया गया।

कोविड की दूसरी लहर के दौरान SBGBT कोविड टास्क फोर्स का गठन कर सोच बदलो गांव बदलो टीम द्वारा किए गए प्रयास इस प्रकार रहे-

1. टीम द्वारा गांवों में कोरोना महामारी के रोकथाम हेतु जागरूकता अभियान चलाया गया। इस हेतु ग्रामीणों के दैनिक व्यवहार को ध्यान में रखते हुए कोरोना के प्रसार को रोकने के लिए टीम द्वारा ग्यारह सूत्रीय कार्यक्रम बनाया गया।

2. टीम द्वारा प्रशासन से अनुमति लेकर तथा प्रतिदिन के प्रोग्राम की रूपरेखा तय करते हुए प्रतिदिन का रूट चार्ट तय करके लगभग 200 गांवों में मोबाइल वाहनों के द्वारा पूर्व-रिकार्डेड ऑडियो संदेशों के माध्यम से जागरूकता अभियान शुरू किया गया।

3. टीम द्वारा गांवों की संख्यानुसार जागरूकता पम्पलेट, बुकलेट और अन्य सामग्री तैयार की गई तथा गांवों में महामारी से बचने हेतु जागरूकता पम्पलेटों/बुकलेट का वितरण किया गया।

4. टीम द्वारा स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से कोरोना मेडिकल किट का प्रबंध कर गांवों में वितरण किया गया।

5. सरकार द्वारा प्रत्येक गाँव में बी. एल. ओ. ,आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, आशा सहयोगिनी को डोर टू डोर सर्वे करने और कोरोना के लक्षण वाले मरीजों को आवश्यक दवाइयां उपलब्ध कराने की

व्यवस्था की गई। टीम द्वारा गांवों कासही डेटा तैयार करने और मरीजों को दवा उपलब्ध कराने में सहयोग किया गया।

'सोच बदलो गांव बदलो' सदैव आमजन की मदद को तत्पर रहा है - डॉ. सत्यपाल मीणा

यूनिवर्सल हेल्थ फाउंडेशन, नई दिल्ली के माध्यम से सोच बदलो गांव बदलो संस्था ने 4 ऑक्सीजन सिलेंडर जिला प्रशासन को किये भेंट

6. कोरोना से लड़ाई के लिए टीकाकरण सबसे सरल एवं कारगर उपाय है। टीम द्वारा गाँवों में वैक्सीन के प्रति फैल रही भ्रांतियों को खत्म करने और वैक्सीन लगवाने के लिए लोगों को प्रोत्साहन करने का काम किया गया। SBGBT द्वारा उत्थान भवन सरमथुरा में ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन करवाने में सहयोग करने हेतु आवश्यक संसाधनों की व्यवस्था की गई।

7. टीम से जुड़े हुए 26 डॉक्टरों और स्वास्थ्य कर्मियों को लेकर एक पैनल का गठन किया गया ;जिन्होंने लोगों को उनके स्वास्थ्य संबंधी जानकारी और आवश्यक दवाओं के विषय में बताने का काम किया।

8. टीम से जुड़े हुए स्वास्थ्य कर्मियों के सहयोग से कोरोना को समर्पित विशेष हेल्पलाइन नंबर की शुरुआत की गई; जिसके माध्यम से कोरोना से संक्रमित मरीजों के स्वास्थ्य की समय-समय पर जानकारी प्राप्त करने और उन्हें उचित मार्गदर्शन देने का काम टीम द्वारा शुरू किया गया।

ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों में कोरोना के बचाव के संबंध में जागरूकता लाना मुख्य ध्येय - डॉ. सत्यपाल मीणा

'सोच बदलो गांव बदलो' ने शुरू किया गांव-गांव में कोरोना जागरूकता अभियान

9. टीम द्वारा गांवों में काम कर रहे स्वास्थ्य कर्मियों को आवश्यक सुविधाएं जैसे ऑक्सीमीटर, थर्मामीटर, मास्क, सैनिटाइजर इत्यादि प्रदान करने का काम शुरू किया गया।

10. गांवों में कोरोना के लक्षण आने के बाद भी

कई लोग अपनी बीमारी छुपाकर लापरवाही बरत रहे थे; ऐसे लोगों को जागरूक करने एवं चिन्हीकरण कर उनका डाटा एकत्रित कर निकटवर्ती सीएचसी, पीएचसी या सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र व आशा आंगनबाड़ी कार्यकर्ता को रिकॉर्ड उपलब्ध करवाकर दवाई आदि दिलाने केकार्योंके लिएसोच बदलो-गांव बदलो टीम केकार्यकर्ताआगेआए।

कोरोना की पिछली लहर में सोच बदलो गांव बदलो टीम (SBGBT) ने "कोरोना सहायता - SBGBT" द्वारा शासन व जरूरतमंदों के बीच सामाजिक सेतु बन कर काम करते हुए जरूरतमंदों की लोकेशन पता करने, प्रशासन से तालमेल के साथ आवश्यक राशन व अन्य व्यवस्थाएं उन तक पहुंचाने में बढ़-चढ़कर मदद की । टीम द्वारा स्वास्थ्यकर्मियों व डॉक्टरों को पीपीई किट्स भी उपलब्ध कराई तथा धौलपुर जिले में जिला प्रशासन को Rs.1,00,000/- का आर्थिक सहयोग करते हुए जिले के सभी थानों और पुलिसकर्मियों के लिए अच्छी क्वालिटी के 5000 मास्क भी टीम की ओर से उपलब्ध करवाए गए।

पुर — धौलपुर, रविवार 9 मई 2021 — 8

ग्रामीण क्षेत्रों को कोरोना मुक्त रखने के लिये सामूहिक सहभागिता की आवश्यकता- डॉ.एस.पी. सिंह मीना

सोच बदलो- गांव बदलो टीम के वॉलिंटियर्स ग्रामीण क्षेत्रों में 11 सूत्रीय जागरूकता के बिन्दुओं पर चलाऐंगे विशेष अभियान

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

(एक्सप्रेस एक्सपर्ट व्यू)

गांवों में कोरोना संक्रमण को रोकने के लिए यह है 11 सूत्री कार्यक्रम-

1. स्थानीय स्तर पर ही सामूहिक शुरुआत कर कोरोना प्रोटोकॉल की करें पालना

2. चेहरे पर मास्क व शोसल दूरी का रखें ध्यान

3. सार्वजनिक स्थान पर बनाएं आइसोलेशन सेंटर

4. लक्षण दिखते ही परिवार से अलग कर लें चिकित्सकीय सलाह

5. धूम्रपान से बच करें योग

6. पौष्टिक आहार अवश्य करें

7. भीड़भाड़ से करें तौबा

8. बाहरीयों का प्रवेश रहे निषेध

9. अन्य शहरों से घर लौटे छात्रों व मजदूरों को कुछ दिन रखें अलग

10. भीड़ ना करें

11. कोरोना वैक्सीन अवश्य लगवाएं

Mirror Now
@MirrorNow

#InspireIndia | SOCH BADLO GAUN BADLO- This NGO's volunteers are spreading awareness regarding #COVID protocol among villagers, they conduct awareness sessions & educate them about vaccination policy.

Devendra Singh Dhanera speaks about the NGO to @AfridaRahmanAli. WATCH.

125 views

Inspire India

स्मार्ट विलेज धनौरा से सोच बदलो-गाँव बदलो अभियान तक

"कौन कहता है आसमान में सुराख़ हो नहीं सकता
एक पत्थर तो ज़रा तबीयत से उछालो यारों....!"

जी हाँ, मैंने तबीयत से उछाले गये पत्थरों से आसमां में सुराख़ होते देखा हैं। मैं 'धनौरा' हूँ - राजस्थान के धौलपुर जिले का एक छोटा-सा गाँव। मैं गवाह हूँ उस विकास के आंदोलन का जो मुझसे शुरू होकर राजस्थान के अन्य जिलों व दूसरे राज्यों में फैल रहा है। मैं गवाह हूँ लोगों की बदलती सोच का और इसके परिणामस्वरूप होने वाले सकारात्मक परिवर्तन का। कुछ वर्षों पूर्व तक जिला धौलपुर को चंबल के बीहड़ में डांकुओ के खौफ़ और बलुआ पत्थर के लिए ही जाना जाता था लेकिन आज इस जिले को गांवों में सकारात्मक परिवर्तन की धुरी के रूप में जाना जाता हैं और ये सब कर दिखाया हैं मेरे ही अपने बच्चों ने, गाँव के युवाओं की अच्छी सोच और अपनी मातृभूमि के प्रति कुछ कर गुजरने की उनकी दृढ़ इच्छा शक्ति ने।

इससे पहले कि आप मेंरे विकास की इस परिवर्तनीय बयार को सुनें , बेहतर होगा कि मैं मेरे अतीत को आपके साथ साझा करूँ। कुछ वर्षों पूर्व तक मेरी भी स्थिति वही थी जो कमोबेश हर गाँव की होती हैं - आधारभूत सुविधाओं जैसे बिजली, पानी, सड़क, शिक्षा व स्वास्थ्य के पूर्ण लाभ से वंचित। मैं आज़ादी के सात दशक गुजर जाने के बावजूद भी पक्की सड़क बनने की बाट जोह रहा था। मैं छप्पर के बलिंडे में और पेड़ की टहनी पर जलते बल्ब की रोशनी में नहाना चाहता था। मैं चाहता था कि मेरी सभी सन्तानें एक जगह एकत्रित होकर सामाजिक विमर्श के जरिये मुझे गर्व महसूस करवाएं। गांवों के लोगों का अभावों से भरा जीवन किसी से छुपा नहीं था और ग्रामीण इलाके सरकारी प्रयासों के समुचित लाभ से वंचित रह जाते हैं। गांव के ज्यादातर परिवार इतने समर्थ नहीं थे कि वह शहर जाकर अपना इलाज करा सकें, अपने बच्चों को अच्छे स्कूल-कॉलेज में दाखिला दिला सकें। मंहगाई के दौर में और कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण कई गरीब बच्चों के सपने अभावों के बोझ तले समय पूर्व ही दफन हो जाते हैं और कई गरीब, बीमारियों का समय पर इलाज कराने में असमर्थता के चलते, अकाल मृत्यु का शिकार हो जाते हैं। गांवों में हर घर शौचालय नहीं होने से, गांव की बहन-बेटियाँ, महिलाएं और अन्य लोग खुले में शौच जाने के लिए मजबूर होते हैं और अकारण बीमारियों के शिकार हो जाते हैं। लेकिन कहते हैं ना कि अंधेरे से होकर ही उजाले का मार्ग प्रशस्त होता है, मेरे साथ भी वैसा ही हुआ। अब शायद मेरे बुरे दिन खत्म होने का सफर शुरू होने का समय नजदीक आ रहा था। मेरे एक बेटे डॉ. सत्यपालसिंह मीना का 'चयन भारतीय राजस्व सेवा (IRS)' में हो गया था। गाँव के अभावों में जिये जीवन में कुछ सकारात्मक परिवर्तन की सोच उसके मन में घर कर गई और उसने अपनी मातृभूमि के लिए कुछ

रचनात्मक शुरुआत करने की ठानी। ग्रामीण विकास की इस अभिनव शुरुआत में प्रोफेसर प्रियानंद अगले जो देश की एक जानी मानी गैर-सरकारी संस्था "इको नीड्स फाउण्डेशन" के फाउंडर मेंबर हैं, के साथ मिलकर डॉ. सत्यपालसिंह ने 1 मई 2014 को गांव की सभी महिलाओं की एक मीटिंग बुलाई जिसमें उनकी समस्याओं को नजदीक से समझने की कोशिश की गई। मीटिंग के दौरान, गांव की महिलाओं ने सामाजिक बदलाव में भागीदारी निभाने आश्वासन दिया। बाद में यह मीटिंग, क्षेत्र की अब तक की सबसे पहली महिला पंचायत के रूप में जानी गई। इस प्रकार गांव में बदलाव की नींव रखी गई और इसके बाद कई अन्य छोटी-छोटी मीटिंग रखकर गांव के लोगों को इस बदलाव में हाथ बंटाने के लिए प्रेरित किया गया। संपूर्ण ग्राम विकास की कार्य योजना तैयार की गई और उस पर काम शुरू हो गया। ग्रामीणों ने आगे आकर हर मीटिंग में उत्साह के साथ भाग लिया और कंधे से कंधा मिलाकर अपने त्याग और सहयोगात्मक रवैये का परिचय दिया। गांव के सरपंच, स्थानीय प्रशासन और लोगों की सक्रिय जन-भागीदारी ने एक ऐतिहासिक कहानी गढ़ना शुरू कर दिया। इन सब प्रयासों ने, मातृभूमि के प्रति मेरे सपनों रूपी कैनवास में रंग भरना शुरू कर दिया।

आज गांव के हर घर में शौचालय, सीवरेज लाइन, सीवरेज वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट, स्कूल में बच्चों के लिए आधुनिक शौचालय और सार्वजनिक स्थल पर शौचालय का निर्माण किया गया है। गाँव में उच्चकोटि की सीमेंटेड सड़के व आधुनिक गौरवपथ हैं। गाँव की गलियों में, घरों की बाहरी दीवारों पर सुंदर और प्रेरणादायक भित्तिचित्र, स्लोगन और प्रेरक पंक्तियों द्वारा गाँव एक आर्ट गैलरी में तब्दील हो चुका हैं।

गांव की सभी व्यवस्थाओं के सुचारु रुप से संचालन के लिए गांव की 3D मैपिंग भी की जा चुकी है। गांववालों ने पर्यावरण संरक्षण के लिए अनूठी पहल शुरू करते हुए, यह निर्णय लिया है कि गांव में किसी की मृत्यु होने पर मृतक का परिवार श्मशान घाट में वृक्षारोपण करेगा। उस पेड़ को संभालने और बड़ा करने की जिम्मेदारी भी उस परिवार को दी गई है। आज गाँव में पुस्तकालय, मेंडिटेशन सेंटर और इनफार्मेशन सेंटर सुचारु रूप से कार्य कर रहे हैं। ग्रामीण कौशल विकास प्रशिक्षण केंद्र, वाई-फाई फैसिलिटी, CCTV सर्विलांस, वर्चुअल क्लास रूम, e-learning, e-library और गांव में डेयरी प्लांट जैसी कई महत्वपूर्ण योजनाएं मूर्त रूप लेना बाकी हैं। गांव में आयुर्वेद औषधालय की स्वीकृति भी प्रशासन से मिल चुकी है। वर्तमान में, गांव में कोई पुलिस केस दर्ज न होने के कारण, जिला प्रशासन द्वारा गांव को "क्राइम फ्री विलेज" घोषित किया गया है। हर घर में टॉयलेट बनने से जिला प्रशासन द्वारा धनौरा को पहली ODF (Open Defecation Free) पंचायत घोषित किया गया है। राजस्थान सरकार ने स्मार्ट विलेज मॉडल को अपना कर, स्मार्ट विलेज योजना राज्य

में शुरू की है।

मेरे विकास की ध्वज यात्रा केवल यहीं नहीं रुकती बल्कि राज्य सरकार द्वारा धनौरा ग्राम पंचायत को राज्य स्तरीय पंचायत अवार्ड से भी सम्मानित किया है। आज मुझे लोग ना केवल धौलपुर बल्कि राजस्थान के बाहर भी जानने लगे हैं। जुलाई 2018 में, विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित हुए एक कार्यक्रम में, मुझे देश भर में मॉडल विलेज की कैटेगरी में प्रथम स्थान से नवाजा जाना और माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीजी के कर कमलों से पुरस्कृत किया जाना मेरे और मेरे गांववासियों के लिए वह अविस्मरणीय पल था। आज लोग उत्सुकता वश धनौरा गांव में हुए कार्यों को जानना चाहते हैं। गांव को देखने की लालसा हैं । मुझे गर्व है यह कहते हुए कि मेरे कायाकल्प की गाथा स्थानीय अखबारों के साथ-साथ राष्ट्रीय मीडिया में भी कई बार अपनी जगह बना चुकी है।

मेरे आँगन में हुए बदलावों और गांववासियों के अपार सहयोग ने “सोच बदलो गांव बदलो अभियान” को जन्म दिया। यही वजह है कि आज न केवल “धनौरा” आगे बढ़ रहा है बल्कि, इसकी प्रेरणा से कई गांवों में युवाओं ने ग्राम विकास का बिगुल बजा दिया है। ग्राम विकास व सामाजिक सुधार की गतिविधियों ने जोर पकड़ा है।

जी हाँ, मैं हूँ स्मार्ट विलेज 'धनौरा' हूँ और मेरी स्मार्टनेस की गाथा मेरे बेटे डॉ. सत्यपालसिंह के विजन, मेरे रहनुमा ग्रामीणों की सक्रियजन-सहभागिता, सरकार व जिला प्रशासन के सहयोग और Eco-Needs फाउंडेशन (प्रेसिडेंट प्रोफेसर प्रियानंद अगड़े) के निस्वार्थ प्रयासों द्वारा रचित और फलित हुई है।

धनौरा के संस्थागत विकास मॉडल, ग्रामीण विकास की मुहिम को दूसरे गांवों तक पहुंचाने और लोगों में जनचेतना पैदा करने के लिए "सोच बदलो गांव बदलो अभियान" की शुरुआत की गई। डॉ. सत्यपाल सिंह मीना और इको नीड्स फाउंडेशन के संस्थापक प्रोफेसर प्रियानंद अगड़े ग्रामीण परिवेश के “जागरूक” और “पे-बैक टू सोसायटी” के सिद्धांत पर विश्वास रखने वाले सक्रिय और कर्मठ युवाओं को साथ लेकर,विकास के संदर्भ में हाशिए पर चल रहे ग्रामीण क्षेत्रों में जन जागरूकता और विकास जन-चेतना उत्पन्न करने के उद्देश्य से एक विशाल "सोच बदलो गांव बदलो यात्रा" निकाली गई। इस यात्रा के माध्यम से राजस्थान, महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश के लगभग 100 गांवों में विकासवादी सोच देने का सफल प्रयास किया गया। जैसे-जैसे यात्रा आगे बढ़ी, अपार जनसमर्थन मिलने से यात्रा एक जन अभियान का रूप लेती चली गई और इस "सोच बदलो गांव बदलो अभियान" ने अपने सकारात्मक और रचनात्मक कार्यों से लोगों के मन मस्तिष्क में सकारात्मक परिवर्तन लाना शुरू कर दिया।आज सोच बदलो-गांव बदलो अभियान के अंतर्गत "सोच बदलो-गांव बदलो यात्रा", “क्लीन विलेज-ग्रीन विलेज”, "आओ पढ़ें-आगे बढ़े", "शिक्षा पाओ-ज्ञान बढाओ प्रतियोगिता', "उत्थान कोचिंग संस्थान",

"रक्तदान-महादान", "महिला सशक्तिकरण", "आधुनिक खेती-हमारा प्रयास" इत्यादि महत्वाकांक्षी कार्यक्रमों का सफल संचालन किया जा रहा है| इन कार्यक्रमों का संचालन चीफ को ऑर्डिनेटर, एरिया को ऑर्डिनेटरों, मुख्य को ऑर्डिनेटरों और गाँव को ऑर्डिनेटरों के माध्यम से किया जा रहा है। वर्तमान में यह अभियान देश अनेक गांवों, शहरों व कस्बों में युवा दिलों की धड़कन बन चुका है। इस अभियान से माध्यम से आज ग्रामीण परिवेश से निकला हुआ युवा अपनी जड़ों से जुड़कर अपने गांव के विकास में आप महती भूमिका निर्वाह कर रहा है। इस अभियान की सबसे बड़ी सफलता भी कही जा सकती है क्योंकि इस सकारात्मक मुहिम ने युवा पीढ़ी की ऊर्जा को सहेजकर रचनात्मक कार्यों के प्रति अभिप्रेरित किया है।

मैं स्मार्ट विलेज़ धनौरा हूँ जिसे अपने गाँव के बेटे-बेटियों, उन सभी किरदारों पर गर्व है जिन्होंने मुझे स्मार्टनेस दी; मुझे गर्व है खुद पर कि मेरी स्मार्टनेस से अन्य गाँव भी स्मार्टनेस की विकास-यात्रा की ओर चल पड़े हैं और ग्रामोत्थान की दिशा में बढ़-चढ़ कर भाग ले रहे हैं। मैं गर्व हैं कि मेरी स्मार्टनेस ने राष्ट्र-निर्माण की स्मार्टनेस संकल्पना को प्रगाढ़ किया है , ऐसा इसलिए भी है क्योंकि “स्मार्ट गांवों के बिना स्मार्ट शहर जीवित नहीं रह सकते...!"

आप सबका आभारी

'स्मार्ट विलेज धनौरा'

मूलतः इस विचार की उत्पत्ति राजस्थान के धौलपुर जिले केएक छोटे से गांव धनौरा से हुई। भारत के प्रधानमंत्री के कर कमलोंसे आदर्श ग्राम सम्मान विजेता स्मार्ट विलेज धनौरा, बाड़ी (धौलपुर, राजस्थान) कस्बे से 5 किमी की दूरी पर उत्तर पूर्व में एक छोटा सा गांव है।स्मार्ट विलेज 'धनौरा' डॉ. सत्यपाल सिंह के विजन, ग्रामीणों की सक्रिय जन सहभागिता, सरकार व जिला प्रशासन के सहयोग और Eco-Needs फाउंडेशन (प्रेसिडेंट प्रोफेसर प्रियानंद अगड़े) के निस्वार्थ प्रयासों का परिणाम है। राज्य सरकार द्वारा धनौरा ग्राम पंचायत को राज्य स्तरीय पंचायत अवार्ड से नवाजा गया है । धनौरा के संस्थागत विकास मॉडल, ग्रामीण विकास की मुहिम को दूसरे गांवों तक पहुंचाने और लोगों में जनचेतना पैदा करने के लिए "सोच बदलो गांव बदलो अभियान" की शुरुआत की गई है ।

डॉ. सत्यपाल सिंह मीना और इको नीड्स फाउंडेशन के फाउंडर प्रोफेसर प्रियानंद अगड़े ने मिलकर, धौलपुर के कुछ सक्रिय और कर्मठ युवा साथियों को साथ लेकर, विकास के संदर्भ में हाशिए पर चल रहे ग्रामीण क्षेत्रों में जन चेतना व जन जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से एक विशाल जन चेतना व जन जागरूकता यात्रा करने का मन बनाया । इस जन चेतना यात्रा को “सोच बदलो गांव बदलो यात्रा” का नाम दिया गया और इस यात्रा के माध्यम से महाराष्ट्र, राजस्थान और मध्यप्रदेश के लगभग 100 गांवों को कवर करने का लक्ष्य रखा गया । जिसमें 80 प्रतिशत गांव राजस्थान के धौलपुर जिले से चुने गए । इसके

लिए चुनिंदा गांवों में इस जन चेतना यात्रा के दौरान जनसभा रखने की रूपरेखा तैयार की गई हर गांव में टीम कोऑर्डिनेटर नियुक्त किए गए थे। जैसे-जैसे यात्रा आगे बढ़ी, अपार जनसमर्थन व सहयोग मिलने से यह यात्रा एक अभियान का रूप लेती चली गई। दिन-ब-दिन "सोच बदलो गांव बदलो अभियान" अपने सकारात्मक व रचनात्मक कार्यों के चलते लोगों के मन मस्तिष्क में बदलाव लाने लगा। इस अभियान और विचारधारा से जुड़ने वाले लोगों की टीम 21 मई 2017 से "सोच बदलो गांव बदलो टीम" के रूप में पहचानी जाने लगी। वर्तमान में यह अभियान इन तीनों राज्यों के अतिरिक्त कई अन्य राज्यों के गांवों, शहरों व कस्बों में युवा दिलों की धड़कन बन चुका है। यही इस अभियान की सबसे बड़ी सफलता भी कही जा सकती है क्योंकि इस सकारात्मक मुहिम ने युवा पीढ़ी की ऊर्जा को सृजनात्मक व रचनात्मक कार्यों के प्रति अभिप्रेरित किया है।

धौलपुर पत्रिका 11 राजस्थान पत्रिका
धौलपुर, बुधवार, 3 मार्च, 2021

सोच बदलो गांव बदलो टीम का आयोजन

उत्थान परिसर में भूमि पूजन कार्यक्रम

भवन के बनने से क्षेत्र में समाज का होगा उत्थान - डॉ सत्यपाल मीना

धौलपुर @ पत्रिका. समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए संयुक्त आयुक्त इंदौर डॉ. सत्यपाल मीणा ने समाज के युवाओं एवं बुजुर्गों को साथ लेकर एसबीजीबीटी विचार धारा की नींव रखी। उन्होंने बताया कि सरमथुरा में उत्थान भवन के बनने के बाद बाड़ी में भी उत्थान भवन एवं मीणा सामुदायिक भवन का भूमि पूजन शिलान्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में समाज के प्रबुद्धजन मौजूद रहे। युवाओं ने सराहनीय कार्य कर समस्त व्यवस्थाओं को अंजाम दिया। डॉ मीणा ने बताया कि सोच बदलो-गांव बदलो टीम का गठन ग्रामीण परिवेश के जागरूक और पे-बैक टू सोसायट के सिद्धांत पर विश्वास रखने वाले युवाओं ने ग्रामीण लोगों के जीवन में आधारभूत परिवर्तन लाने के उद्देश्य से किया है। कॉर्डिनेटर देवेंद्र सिंह ने पीपीटी के माध्यम से समाज द्वारा दिए गए डोनेशन का ब्यौरा दिया। इस अवसर पर समाज के प्रबुद्धजन की ओर से लेखक संतराम मीना एवं शैलेन्द्र सिंह मीना की लिखी गई सामान्य ज्ञान प्रतियोगी परीक्षा की पुस्तिका का विमोचन किया।

डिजिटल माध्यमों का ग्राम विकास में उपयोग कैसे करें?

डिजिटल युग में सोशल मीडिया के विभिन्न माध्यमों से व्यक्ति के विचारों का संप्रेषण बेहद आसानी से एवं कम समय में होता रहता है फलत: समाज में विचारों का आदान-प्रदान व्यक्ति के बौद्धिक विकास और सामाजीकरण की प्रक्रिया को बल देता है। यही नहीं, डिजिटल माध्यम विकास प्रक्रिया में व्यक्ति की सहभागिता को सुनिश्चित करते हुए सरकारी तंत्र को मजबूत बनाने,योजनाओं के कार्यान्वयन को सुगम बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। गांवों के शिक्षित युवा जो देश के विभिन्न भागों सेवारत हैं वे वहां पर बैठे-बैठे भी डिजिटल माध्यमों का उपयोग करते हुए अपने गांव और समाज की उन्नति में अपनी जिम्मेदारी निभा सकते हैं।

साथियों,हम सभी सोच बदलो-गांव बदलो टीम के कार्यकर्ताओं का सपना है,अपने गांवों में विकास की अलख जगाते हुए उन्हें समृद्ध बनाना।

सभी पढ़े-लिखे युवा एवं नौकरपेशा व्यक्तियों को एक बार ज़रूर आत्म-विश्लेषण और चिंतन करना चाहिए कि क्या हम अपने गांवों के लिए मूलभूत सुविधाएं(पानी, सड़क,बिजली, स्वास्थ्य और रोजगार) विकसित करने के लिए सतत जमीनी प्रयास कर रहे हैं या नहीं ?

क्या हम अपने गांवों में गरीब और जरूरतमंद लोगों को सरकार की कल्याणकारी योजनाओं का फायदा दिलाने के लिए सतत प्रयास कर रहे हैं या नहीं?

आज़ादी के 75 साल बाद भी हमारे अधिकांश गांवों के लोग मूलभूत सुविधाओं(पानी, बिजली,स्वास्थ्य, सड़क और रोजगार) के लिए तरस रहे हैं साथ-साथ लोक कल्याणकारी योजनाओं के लाभ से भी वंचित हैं।साथियों केंद्र सरकार और राज्य सरकार द्वारा ग्रामीण विकास के लिए प्रत्येक ग्राम पंचायत को करोडों रुपयों तक का बजट प्रतिवर्ष आवंटित किया जाता है लेकिन जनजागरूकता और जनसहभागिता के बिना ग्रामीण विकास का सपना आज भी साकार नहीं हो पा रहा है।

सोच बदलो गांव बदलो टीम का मानना है कि आमजन को ज्यादा से ज्यादा सरकारी योजनाओं का फ़ायदा और गांव एवं क्षेत्रीय समस्याओं के समाधान के लिए युवाओं के द्वारा डिजीटल प्रयास (ईमेल, ऑनलाईन RTI, संपर्क पॉर्टल और सीपी ग्राम पोर्टल) अति आवश्यक हैं।

यदि गांव के कम से कम 4-5 पढ़े-लिखे एवं जागरूक युवा देश के किसी भी कोने में बैठकर अपने डिजीटल प्रयासों से ग्राम विकास प्रक्रिया में भागीदारी और सक्रियता निभा सकते हैं। आपके द्वारा किए गए धरातल पर कार्य बदलाव ला सकते हैं।

यहां कुछ डिजिटल प्लेटफॉर्म्स साझा किए जा रहे

हैं; जिनका उपयोग करके युवा साथी अपने गांव और क्षेत्र से जुड़ी विभिन्न समस्याओं के निराकरण के लिए सरकार और प्रशासन तक जनहित में शिकायत भेजकर शासन के सहयोगी तथा अपने गांव के हितैषी और जिम्मेदार नागरिक की भूमिका निभा सकते हैं।

कैसे और कहां भेजें अपनी शिकायत?

1. मुख्यमंत्री कार्यालय CMO सीएमओ, गरीब और जरूरतमंद लोगों को सरकार की लोक कल्याणकारी योजनाओं का फायदा दिलवाने हेतु और आमजन की मूलभूत समस्याओं के निराकरण के लिए सबसे बेहतर एवं प्रभावीतंत्र है। साथियों हमें सबसे पहले स्थानीय लेवल पर जनहित समस्याओं के निराकरण के लिए ग्रामीणों को साथ में लेकर जिला स्तरीय अधिकारियों व क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों को समय-समय पर ज्ञापन देना चाहिए, इसके साथ साथ मीडिया कवरेज़ करवाकर जिला प्रशासन एवं क्षेत्रीय जन प्रतिनिधियों का ध्यानाकर्षण करवाना चाहिए। यदि एक निश्चित समय बाद जिला लेवल पर सम्बंधित जनहित समस्या का समाधान नहीं हो रहा हो, तो हमें मुख्यमंत्री कार्यालय (CMO) को अच्छे से ड्राफ्टिंग करते हुए प्रूफ के तौर पर मीडिया कवरेज और ज्ञापन की PDF को संलग्न करते हुए दिए गए ई-मेल एड्रेस पर अलग-अलग मेल प्रेषित करें। (cmrajasthan@nic.in)(Jsls.cmo@rajasthan.gov.in)

लगभग एक सप्ताह बाद CMO के लैंड लाइन नंबर 01412385767 पर कॉल करके डिस्पैच नंबर व डेट बताते हुए आपके द्वारा प्रेषित ईमेल की कार्यवाही की स्थिति पता करें कि हमारे द्वारा प्रेषित ईमेल को किस विभाग के अधिकारी को कार्यवाही हेतु प्रेषित किया गया ? इसके लगभग 1 माह बाद सम्बंधित विभागों से ऑनलाइन RTI के जरिए प्रेषित ईमेल के बारे में की गई विभागीय कार्यवाही व पत्रावली मांग सकते हैं। इसके अलावा राज्य सरकार के सभी विभाग और कार्यालयों की ऑफिशियल वेबसाइट पर विभागीय शासन सचिव, उच्च अधिकारियों और जिला स्तरीय अधिकारियों के मोबाइल नंबर और ईमेल आईडी दे रखे होते हैं, आप बस गूगल पर सर्च कीजिए, फिर सही तरीक़े से घर बैठे गरीब और ज़रूरत लोगों को सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाने के लिए और जनहित समस्याओं के निराकरण लिए समय- समय पर सम्बंधित विभागों को ईमेल कर सकते हैं। यदि हम प्रॉपर चैनल से इस तरह जनहित मुद्दों को लगातार उठाते रहे तो निश्चित रूप से आप अपने डिजीटल प्रयासों से ना केवल गरीब व ज़रूरतमंद लोगों को फ़ायदा दिला सकते हैं बल्कि जनहित समस्याओं का भी निराकरण कर सकते हैं।

मासलपुर क्षेत्र के जागरूक कार्यकर्ताओं द्वारा मुख्यमंत्री कार्यालय को पत्राचार (ईमेल माध्यम) के द्वारा अपने डिजिटल प्रयासों को कैसे सफलता में तब्दील किया ? आईए एक नज़र

मुख्य मंत्री कार्यालय
राजस्थान सरकार

विषयः – मासलपुर क्षेत्र में गदेखार जल परियोजना की स्वीकृति जारी करवाने बाबत।

उपरोक्त विषयान्तर्गत श्री मनीराम मीना पुत्र श्री गोविंद प्रसाद मीना, निवासी गांव बड़ापुरा पोस्ट मावली तहसील मासलपुर जिला करौली द्वारा ईमेल से माननीय मुख्यमंत्री महोदय को सम्बोधित प्रार्थना–पत्र का अवलोकन करने का श्रम करें।

निर्देशानुसार मूल ही संलग्न कर निवेदन है कि इस प्रकरण में नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही कराने का श्रम करावें।

(लक्ष्मण सिंह शेखावत)
उप सचिव (एलएस), मुख्यमंत्री

प्रमुख शासन सचिव,
वन विभाग।

जयपुर, दिनांक 26 MAR 2021

प्रतिलिपि –
श्री मनीराम मीना पुत्र श्री गोविंद प्रसाद मीना निवासी गांव बड़ापुरा पोस्ट मावली तहसील मासलपुर जिला करौली को सूचनार्थ।

उप सचिव (एलएस), मुख्यमंत्री

मुख्य मंत्री कार्यालय
राजस्थान सरकार

जयपुर, दिनांक 29 JUL 2021

कलक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट,
करौली।

विषयः सिलिकोसिस सर्टिफिकेट धारक मरीजों को सहायता राशि दिलवाने के संबंध में।

महोदय,

उपरोक्त विषयक श्री मनीराम मीना पुत्र श्री गोविन्द प्रसाद मीना, निवासी गांव बड़ापुरा, पोस्ट मावली तहसील मासलपुर, करौली द्वारा ईमेल से माननीय मुख्यमंत्री महोदय को संबोधित प्रार्थना पत्र का अवलोकन करने का श्रम करें।

निर्देशानुसार निवेदन है कि संलग्न प्रार्थना–पत्र में वर्णित तथ्यों के अनुक्रम में परीक्षण कर नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही कराते हुए की गयी कार्यवाही/वस्तुस्थिति की तथ्यात्मक रिपोर्ट से इस कार्यालय को अवगत कराने का श्रम करावें।

भवदीय,

(लक्ष्मण सिंह शेखावत)
उप सचिव (एलएस), मुख्यमंत्री

प्रतिलिपि–
श्री मनीराम मीना पुत्र श्री गोविन्द प्रसाद मीना, निवासी गांव बड़ापुरा, पोस्ट मावली तहसील मासलपुर, करौली को सूचनार्थ।

उप सचिव (एलएस), मुख्यमंत्री

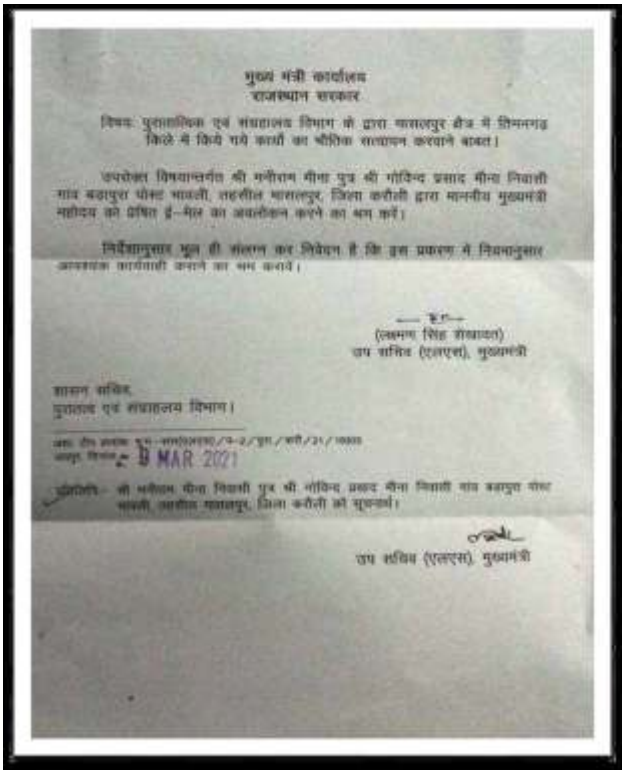

मुख्य मंत्री कार्यालय
राजस्थान सरकार

विषयः पुरातात्विक एवं संग्रहालय विभाग के द्वारा मासलपुर क्षेत्र में तिमनगढ़ किले में किये गये कार्यों का भौतिक सत्यापन करवाने बाबत।

उपरोक्त विषयान्तर्गत श्री मनीराम मीना पुत्र श्री गोविन्द प्रसाद मीना निवासी गांव बड़ापुरा पोस्ट मावली, तहसील मासलपुर, जिला करौली द्वारा माननीय मुख्यमंत्री महोदय को प्रेषित ई–मेल का अवलोकन करने का श्रम करें।

निर्देशानुसार मूल ही संलग्न कर निवेदन है कि इस प्रकरण में नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही कराने का श्रम करावें।

(लक्ष्मण सिंह शेखावत)
उप सचिव (एलएस), मुख्यमंत्री

शासन सचिव,
पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग।

जयपुर, दिनांक 9 MAR 2021

प्रतिलिपि– श्री मनीराम मीना निवासी पुत्र श्री गोविन्द प्रसाद मीना निवासी गांव बड़ापुरा पोस्ट मावली, तहसील मासलपुर, जिला करौली को सूचनार्थ।

उप सचिव (एलएस), मुख्यमंत्री

मुख्य मंत्री कार्यालय
राजस्थान सरकार

विषयः– 132 केवी जीएसएस की प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति दिलवाये जाने बाबत।

उपरोक्त विषयान्तर्गत श्री मनीराम मीना पुत्र श्री गोविंद प्रसाद मीना निवासी गाँव बड़ापुरा, पोस्ट मावली तहसील मासलपुर जिला करौली द्वारा माननीय मुख्यमंत्री महोदय को सम्बोधित प्रार्थना–पत्र का अवलोकन करने का श्रम करें।

निर्देशानुसार निवेदन है कि संलग्न प्रार्थना–पत्र में वर्णित तथ्यों के अनुक्रम में नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही कराने का श्रम करावें।

(लक्ष्मण सिंह शेखावत)
उप सचिव (एलएस), मुख्यमंत्री

प्रमुख शासन सचिव,
ऊर्जा विभाग।

प्रतिलिपि– श्री मनीराम मीना पुत्र श्री गोविंद प्रसाद मीना निवासी गाँव बड़ापुरा, पोस्ट मावली तहसील मासलपुर जिला करौली को सूचनार्थ।

उप सचिव (एलएस), मुख्यमंत्री

2. राजस्थान संपर्क पोर्टल
(Rajasthan Sampark Portal)
https://sampark.rajasthan.gov.in/

अपनी शिकायत को विभागीय अधिकारियों तक भेजने के लिए राज्य सरकार के ऑनलाइन जनहित शिकायत पोर्टल (राजस्थान संपर्क) https://sampark.rajasthan.gov.in/पर ऑनलाइन शिकायत दर्ज कर सकते हैं।

राजस्थान सम्पर्क जन सामान्य की शिकायतों को दर्ज करने और समस्याओं का निराकरण पाने के लिए राजस्थान सरकार का अभिनव प्रयास है इस पर आप पाएंगे:

(I). बिना कार्यालय में उपस्थित हुए समस्याओं को ऑनलाइन दर्ज करने की सुविधा।

(ii). पंचायत समिति एवं जिला स्तर पर राजस्थान सम्पर्क केन्द्रों पर निः शुल्क रूप से शिकायतों को दर्ज कराने की सुविधा।

(iii). अपनी शिकायत पर की जाने वाली विभागीय कार्यवाही की स्थिति जानने की सुविधा।

(iv). शिकायत का पुनर्समरण (Reminder) भेजने की सुविधा।

(v). सिटीजन कॉल सेंटर (181) पर फ़ोन के माध्यम से भी शिकायतों को दर्ज कराने व उसकी सूचना प्राप्त करने की निः शुल्क सुविधा ।

3. पब्लिक ग्रीवांस पोर्टल
(Public Grievance-PG Portal)
pgportal.gov.in/

पब्लिक ग्रीवांस पोर्टल भारत सरकार का लोक शिकायत पोर्टल है। सरकार द्वारा इस पोर्टल को शुरू करनें का मुख्य उद्देश्य नागरिकों द्वारा की जानें वाली शिकायतों का एक निश्चित समय अवधि में निस्तारण करना है। यदि किसी सरकारी कार्यालय में आपका काम बहुत कोशिश ,पत्राचार के बाद भी नहीं हो रहा है तो निराश होने की ज़रूरत नहीं है। आप अपनी शिकायत इस CPGRAMS पोर्टल पर दर्ज करा कर शीघ्र समस्या का समाधान पा सकते हैं।

Centralized Public Grievance Redress And Monitoring System (CPGRAMS)

यह भारत सरकार का वेब आधारित ऑनलाइन पोर्टल है। इसका उद्देश्य है कि पीड़ित नागरिक अपनी शिकायत ऑनलाइन दर्ज कराएं; जिससे त्वरित गति से उसकी समस्या का समाधान किया जा सके। इसे नेशनल इन्फार्मेटिक्स सेंटर (NIC) ने विकसित किया है।

CPGRAMS पर कोई भी नागरिक कही से भी किसी भी समय (24 X 7) अपनी शिकायत दर्ज कर सकता। शिकायत दर्ज होते ही सम्बंधित मंत्रालय/विभाग/कार्यालय उस की जाँच कर समाधान करने में लग जाता है। शिकायत दर्ज कराने पर एक रजिस्ट्रेशन नंबर मिल जाता है। इस नंबर के द्वारा शिकायत कर्ता अपने शिकायत का स्टेटस भी इसी वेबसाइट पर ट्रैक

कर सकता है।

शिकायत कैसे करें ?

I. गूगल में pgportal.gov.in वेबसाइट ओपन करके सर्वप्रथम रजिस्ट्रेशन करें।

पीजी पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन कैसे करें? (How To Register On PG Portal?)

पीजी पोर्टल (pgportal.gov.in) पर शिकायत दर्ज करनें के लिए आपको सबसे पहले अपना पंजीकरण (Registration) करना होगा, रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया इस प्रकार है-

रजिस्ट्रेशन करनें के लिए सबसे पहले आपको pgportal.gov.inओपन करना है, आप इस लिंक https://pgportal.gov.in/Home/LodgeGrievanceसे डायरेक्ट ओपन कर सकते हैं अब आपके सामनें एक फॉर्म ओपन होगा जिसे आपको पूछी गई जानकारी दर्ज कर Security Code लिखकर Save पर क्लिक करना है ।

ii. यदि आप अपना रजिस्ट्रेशन पहले ही कर चुके हैं, तो आप अपनें यूजर नेम से लॉग इन कर सकते हैं। लॉग इन करते ही आपके सामनें Dash board ओपन होगा, यहाँ आपको Lodge Public Grievance पर क्लिक करना है ।

iii. अब आपके सामनें एक नया पेज ओपन होगा जिसमें आपको कई डिपार्टमेंट शो होंगे, आप अपनी शिकायत से सम्बंधित विभाग पर क्लिक करे अथवा Other Department पर क्लिक करें।

iv. अब आपके सामनें एक फार्म ओपन होगा, जिसमें पूछी गयी जानकारी के साथ ही अपनी शिकायत का विवरण लिखकर Submit पर क्लिक करना है।

v. आप अपने शिकायत का स्टेटस चेक कर सकते हैं।

vi. पीजी पोर्टल पर स्टेटस कैसे चेक करें? (How To Check Status On PG Portal)

पीजी पोर्टल पर अपनी शिकायत का Status चेक करने के लिए इस लिंक https://pgportal.gov.in/Status पर क्लिक करें।

अब यहाँ पर आपको अपनी शिकायत का Registration number, Email id, Mobile number और Security Code दर्ज कर Submit पर क्लिक करें। Submit पर क्लिक करते ही आपके सामने grievance का स्टैटस ओपन हो जाएगा।

vii. आपकी शिकायत का समयबद्ध तरीके से निस्तारण करके आपको सूचित किया जायेगा।

4. ऑनलाइन आरटीआई नागरिकों को सशक्त बनाने का आधार।

RTI यानी 'सूचना का अधिकार' ने आम लोगों को जागरूक और मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह कानून जम्मू-कश्मीर को छोड़कर, देश के सभी हिस्सों में लागू है। RTI ACT 2005 के तहत सरकारी विभागों को

नागरिकों के अनुरोधों पर सार्वजनिक क्षेत्र में सूचना देना अनिवार्य है। राजस्थान में RTI आवेदन करना एक बहुत ही सरल प्रक्रिया है।

राजस्थान में RTI ऑनलाइन आवेदन कैसे करें?

सर्वप्रथम S S O पोर्टल पर जाएं- https://sso.rajasthan.gov.in/signinयहाँ अपने यूजर id और पासवर्ड के साथ एसएसओ पोर्टल में लॉगिन करें और सर्च मेन्यू में rti online सर्च करें और उस पर क्लिक करेंगे तो एक नया पेज खुलेगा जिस पर आप किसी भी विभाग या योजना से सम्बंधित सूचना प्राप्त करने के लिए आवेदन कर सकते हैं या वेबसाईट https://rti.rajasthan.gov.in/पर जाकर आवेदन कर सकते हैं।

5. विविध

i.घर बैठे जानें "जन सूचना पोर्टल" पर अपने गांव और क्षेत्र के विकास कार्यों का विवरण-

आपके गांव और क्षेत्र में विभिन्न श्रेणियों में आवंटित एवं प्रक्रियाधीन विकास कार्यों का विस्तृत विवरण जानने के लिए लिंक उपलब्ध कराई जा रही हैं-

https://jansoochna.rajasthan.gov.in/

ii. किसान सम्मान निधि योजना से सम्बंधित जानकारी, नए रजिस्ट्रेशन, लाभार्थी स्टेटस, लाभार्थी से जुड़ी कोई भी डिटेल अपडेट करने और मिलने वाली अनुदान राशि का स्टेटमेंट जानने के लिए https://pmkisan.gov.in/

iii. राजस्थान राज्य के काश्तकारों का भू-अभिलेख

(क) खसरा प्राप्त करने के लिए

https://bhunaksha.raj.nic.in/

(ख) जमाबंदी नकल के लिए

https://apnakhata.raj.nic.in/Owner_wise/tehsil.aspx

iv. ई- श्रम पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन के लिए

https://register.eshram.gov.in/#/user/self

v. ग्रामीण एवं पंचायतीराज विभाग के कार्यों से सम्बंधित जानकारी के लिए-

https://rdprwms.raj.nic.in/iwmsweb/Pdmn/districtwisesummary.aspx

डिजिटल प्रयासों को अपने गांव और क्षेत्र के विकास के लिए कैसे सफलता में परिवर्तित किया जा सकता है। आइए देखें, मासलपुर क्षेत्र के कार्यकर्ताओं के डिजिटल प्रयासों की एक झलक-

युवाओं के डिजिटल प्रयास से सम्पर्क सड़क स्वीकृत

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

मासलपुर. करौली-मासलपुर सड़क मार्ग से भावली वाया बड़ापुरा की करीब डेढ़ किमी लंबी सम्पर्क सड़क निर्माण के लिए लंबे इंतजार के बाद 37.50 लाख रुपए की वित्तीय स्वीकृति जारी की गई है।

क्षेत्र के युवाओं द्वारा लगातार किए गए डिजीटल प्रयास के बाद सड़क निर्माण की निर्माण की ये स्वीकृति मिल सकी है। सड़क निर्माण से इलाके के ग्रामीणों को आवागमन में आसानी रहेगी।गौरतलब है कि करौली- मासलपुर मुख्य सड़क से भावली पंचायत मुख्यालय तक की सड़क क्षतिग्रस्त है। इससे आमजन को आवागमन में परेशानी होती है। सड़क मार्ग पर गड्ढे होने के कारण दुर्घटना का खतरा बना रहता है।
हालांकि कि वर्षों पहले करौली मासलपुर मुख्य सड़क मार्ग पर बड़ापुरा स्टैण्ड से आर आई डी एफ योजना के तहत भावली तक सड़क बनाई गई थी। इसकी गारंटी अवधि 2019 तक थी। वर्तमान में सड़क पूरी तरह उखड़ कर अवशेष रह गई।युवा विकास समिति मासलपुर के सदस्य बड़ापुरा गांव निवासी मनीराम मीणा द्वारा 9 सितंबर 2016 से सम्पर्क सड़क के लिए लगातार प्रयास कि जा रहा था। बीते 6 वर्ष में सड़ निर्माण पूर्ण करने के लिए कई ब परिवाद दिए।राज सम्पर्क पोर्टल व भी उपयोग किया। मुख्यमं कार्यालय ,सीपीग्राम पोर्टल, पीएम पोर्टल और राजस्थान संपर्क पोर्ट पर लगातार ऑनलाइन शिकायतें द गईं। आखिरकार युवाओं का प्रया रंग लाया और सरकार द्वारा सड़ निर्माण के लिए 37. 50 लाख रुप की वित्तीय स्वीकृति जारी की गई। मनीराम मीणा ने बताया कि व 2016 से इस सड़क के लिए प्रया किया जा रहा था। राजस्थान सरक के ऑनलाइन शिकायत पोर्ट राजस्थान संपर्क पर कई ऑनला शिकायतें दर्ज की। इसको लेकर द कई बार सार्वजनिक निर्माण मंत्री द भी अवगत कराया गया।

एईएन ने पदभार संभाला

मंडरायल. यहां उपखंड मुख्याल पर विद्युत निगम के सहाय अभियंता पद पर एस.के शर्मा पदभार ग्रहण कर लिया। सहाय अभियंता नरोत्तम लाल शर्मा छोकरवाड़ा स्थानांतरण हो जाने बाद करौली से सहायक अभियं एस के शर्मा को लगाया गया।

दैनिक भास्कर करौली 15-03-2021

गया है।

मासलपुर में सेव तिमनगढ़ अभियान के तहत की कार्रवाई पर लिया है एक्शन

मासलपुर | मासलपुर में शुरू किए गए सेव तिमनगढ अभियान के तहत युवा विकास समिति मासलपुर के सक्रिय सदस्य मनीराम मीना द्वारा ईमेल के माध्यम से की गई शिकायत पर मुख्यमंत्री कार्यालय द्वारा एक्शन लिया गया है। मुख्यमंत्री कार्यालय से जारी पत्र में तिमनगढ किले में किए गए कार्यों का भौतिक सत्यापन कराने के लिए पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग के शासन सचिव को निर्देशित किया है। इसमें शिकायतकर्ता द्वारा भेजे गए ईमेल का अवलोकन कर नियमानुसार कार्यवाही के लिए कहा गया है। गौरतलब है कि पिछले माह से दिल्ली की आरटीआई कार्यकर्ता श्वेता शर्मा द्वारा सेव तिमनगढ अभियान शुरू किया गया है। इसमें ग्राम पंचायतों के सरपंच, युवा विकास समिति के सदस्यों के साथ क्षेत्र के जागरूकों का सहयोग लिया जा रहा है।

38 साल में क्षेत्र विस्तार और उपभोक्ता बढ़ने पर भी विद्युत तंत्र नहीं हुआ सुदृढ़, डांग क्षेत्र के 70 गांव बिजली समस्या से हैं त्रस्त

युवाओं के डिजिटल प्रयासों का दिख रहा अब असर, मासलपुर में 132 केवी जीएसएस की जगी उम्मीद

पत्रिका इंडेप्थ स्टोरी

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

मासलपुर. इलाके के जनप्रतिनिधियों की उदासीनता से तहसील मुख्यालय सहित 70 से अधिक गांव बिजली की समस्या को लेकर त्रस्त हैं। हैरत की बात तो यह है कि बीते 4 दशक में इलाके की आबादी के साथ क्षेत्र का विस्तार भी पाई है। हालांकि इलाके के लोगों द्वारा जागरूक होकर इस दिशा में दिखाई सक्रियता से अब यह उम्मीद जागी है।

मासलपुर कस्बे सहित क्षेत्र के 70 गांवों में निर्बाध विद्युत आपूर्ति के लिए 38 वर्ष पहले 33 केवी जीएसएस की स्थापना की गई। इसके बाद तहसील क्षेत्र में खेड़िया, चैनपुर, डांडा, खेड़ा और सीलोती में 33 केवी जीएसएस भी बनाए गए। 4 दशक की इस समयावधि में बिजली के उपभोक्ता और खपत कई गुना बढ़ जाने पर भी ग्रिड स्टेशन का विस्तार नहीं हुआ है। आने और ट्रिपिंग से बिजली की सप्लाई बाधित होती रहती है। मासलपुर से करौली के बीच बिजली लाइन में आए फाल्ट को तलाश करने में विद्युत कर्मियों को खासी मशक्कत करनी पड़ती है। असल में डांग क्षेत्र के इस इलाके के विद्युत तंत्र को सुदृढ़ बनाने के जनप्रतिनिधियों ने प्रयास किए ही नहीं।

युवाओं ने किए ऑनलाइन प्रयास

अब इस समस्या को लेकर इलाके सामाजिक एवं आरटीआई कार्यकर्ता मनीराम ने मुख्यमंत्री कार्यालय को कई बार ईमेल प्रेषित किए। इसके जवाब में मुख्यमंत्री कार्यवाही को लेकर मनीराम मीणा ने ऑनलाइन आरटीआई सूचनाएं भी मांगी। इससे खुलासा हुआ है कि राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण से आवश्यक बताया गया है। कहा गया है कि बढ़ते हुए क्षेत्र बिजली के लोड को देखते हुए 132 केवी लगाया जाना तकनीक

अब राजनीतिक प्रयासों की दरकार

युवाओं के डिजीटल प्रयासों से निगम के उच्च स्तर पर तो 132 केवी स्थापित करने की सहमति बन गई है। लेकिन जानकारों का कहना है कि अब आगे मुख्यमंत्री तथा ऊर्जा मंत्री से अंतिम स्वीकृति के लिए राजनीतिक प्रयास जरूरी हैं। विद्युत निगम के अधिकारियों का कहना है कि विधायक अगर इस मामले में मुख्यमंत्री और ऊर्जा मंत्री से मुलाकात करके पुरजोर मांग करें तो जल्दी यह सौगात मासलपुर क्षेत्र के लोगों को मिल सकती है।हालांकि करौली विधायक लाखन सिंह ने बजट सत्र में मासलपुर में 132 केवी जीएसएस को बजट घोषणा में शामिल करने के लिए मुख्यमंत्री को पत्र भेजा था लेकिन बजट घोषणा में तो क्षेत्र के लोगों को मायूसी ही हाथ लगी।कोविड संक्रमण कम होने के बाद मासलपुर क्षेत्र की युवा विकास समिति के सदस्य और प्रबुद्ध जन फिर से विधायक से मुलाकात करके इस बारे में आग्रह करेंगे।

ग्रामीण विकास ही देश को
आत्मनिर्भर
बनाने की कुंजी हैं।
सोच बदलो - गाँव बदलो - देश बदलो
सोच बदलो गाँव बदलो टीम
/sbgbteam
www.sbgbteam.com

गाँव विकास समिति के रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया

दोस्तों ! सोच बदलो गाँव बदलो अभियान के तहत गाँव-गाँव में "गाँव विकास समिति" गठित कर जमीनी बदलाव किए जा रहे है। ग्राम विकास समिति एक को ऑपरेटिव सोसाइटी के रूप में कार्य करती है और इसका रजिस्ट्रेशन "राजस्थान सोसायटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1958" के तहत किया जाता है। SBGBT टीम के प्रत्येक कार्यकर्ता को गाँव विकास समिति के रजिस्ट्रेशन का प्रक्रिया जाना बेहद जरूरी है। गाँव विकास समिति की सारी प्रक्रिया ऑनलाइन स्वयं के द्वारा या ई-मित्र के जरिए ऑनलाइन होती है और कागज़ों की सत्यापन का काम (डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन) भी E-KYC के जरिए ऑनलाइन हो जाता है।

सर्वप्रथम गांव के सकारात्मक और कर्मठ समाजसेवी लोगों को साथ लेकर इस विषय में विस्तृत चर्चा की जानी चाहिए और गांव का भला चाहने वाले सकारात्मक लोगों में से सर्वसम्मति से अध्यक्ष, सचिव और कोषाध्यक्ष व अन्य पदाधिकारी का चयन करना चाहिए। सभी पदाधिकारियों के आधार नंबर और आधार के साथ रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर एकत्रित करना आवश्यक होगा जो कि रजिस्ट्रेशन के लिए जरूरी हैं।

ऑनलाइन एप्लीकेशन करने से पहले सोसाइटी रजिस्ट्रेशन की ऑफिशियल साइट http://rajsahakar.rajasthan.gov.in/Home/OnlineRegistration से नियमों और उद्देश्यों की पीडीएफ डाउनलोड करें या ई-मित्र की दुकान से प्राप्त करें। सबसे महत्वपूर्ण और सरल उपाय यह है कि इसकी सॉफ्ट कॉपी SBGBT द्वारा भी भेजी जा रही है; जिसमें आप अपने गांव की आवश्यकता अनुसार परिवर्तन कर सकते हैं और उसके बाद उसका प्रिंट आउट प्राप्त कर सकते हैं। इस पर सभी पदाधिकारियों के हस्ताक्षर होने के बाद इसकी एक पीडीएफ़ कॉपी तैयार रखें जो कि एप्लीकेशन के साथ ऑनलाइन ही अपलोड करना होगा।

स्वयं या ई-मित्र के द्वारा ऑनलाइन एप्लीकेशन भरी जाएगी और इस दौरान पदाधिकारियों के आधार के साथ रजिस्टर्ड मोबाइल पर ओटीपी आएगा; जिससे सभी का E-KYC हो जाएगा। यह भी जानना जरूरी है कि जिन पदाधिकारियों के मोबाइल रजिस्टर्ड नहीं है; उनके ई-मित्र पर ही अंगूठे (फिंगरप्रिंट) से E-KYC हो जाएगा।

यह भी जानना जरूरी है कि गॉव विकास समिति के अध्यक्ष के फोटो, आधार और पैन कार्ड की रजिस्ट्रेशन करते समय आवश्यकता होगी जिनकी सॉफ्ट कॉपी एप्लीकेशन के साथ अपलोड करनी होती है।

यह प्रक्रिया सिर्फ गाँव विकास समिति के अध्यक्ष के लिए होगी। दूसरे पदाधिकारी और सदस्यों के लिए यह आवश्यक नहीं है। उनके डॉक्यूमेंट का वेरिफिकेशन रजिस्टर मोबाइल पर प्राप्त ओटीपी के माध्यम से ही हो जाएगा परंतु मोबाइल नंबर रजिस्टर नहीं होने पर फिंगरप्रिंट के माध्यम EKYC हो जाएगा; उनके लिए अन्य डॉक्यूमेंट की जरूरत नहीं पड़ती है।

ऑनलाइन एप्लीकेशन फाइल होने के बाद के

बाद रजिस्ट्रार कार्यालय में आपके एप्लीकेशन का वेरिफिकेशन होगा। अगर कोई एप्लीकेशन में गलती है तो त्रुटि सुधार के लिए ऑनलाइन ही एप्लीकेशन वापस कर दिया जाएगा और आपके द्वारा दिये गए मोबाइल पर मैसेज आ जायेगा।

सोसाइटी रजिस्ट्रेशन कार्यालय से वेरीफाई होने के बाद दिए गए मोबाइल नंबर पर 10,500/- रुपये रजिस्ट्रेशन फीस का मैसेज आएगा; जिसको ऑनलाइन ही नेट बैंकिंग या डेबिट कार्ड के जरिए या ई-मित्र के जरिए जमा करवाना होगा। इसके उपरांत पंजीकरण का काम पूरा हो जाएगा और कुछ दिन बाद ई-मित्र पर से रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट डाउनलोड कर सकते हैं। इस प्रकार गाँव विकास समिति के रजिस्ट्रेशन की प्रकिया पूर्ण होती है।

रजिस्ट्रेशन सर्टिफ़िकेट मिलने के बाद आप गाँव विकास समिति के लैटर पैड व सील बनवा सकते है। इसके बाद बैंक जाकर गाँव विकास समिति का पब्लिक एकाउंट खुलवा सकते हो। बैंक एकाउंट खुलवाने के लिए रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट, सोसाइटी के नियमों और उद्देश्यों की एक कॉपी लगेगी; जिसमें मुख्य पदाधिकारियों (अध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष) के हस्ताक्षर होने चाहिए। उक्त तीनों पदाधिकारियों के आधार कार्ड, पैन कार्ड और फ़ोटो लगेंगे।

इसके अतिरिक्त समिति के लैटर पैड पर अध्यक्ष, सचिव औऱ कोषाध्यक्ष के हस्ताक्षर से एक रेजोल्यूशन भी देना होगा और इसके बाद समिति का बैंक एकाउंट खुल जायेगा।

12 ग्राम विकास समिति के रजिस्ट्रेशन के बाद उपरांत आप ग्राम विकास की विभिन्न कार्यों को समिति के माध्यम से कर सकते हैं । गांव की विभिन्न समस्याओं को जनप्रतिनिधि और प्रशासन के समक्ष समक्ष उठा सकते हैं । गांव के लोगों से दानदाताओं से दान संग्रह कर गांव में विकास की गंगा को बढ़ाया जा सकता है। आप सभी साथियों को सोच बदलो गांव बदलो टीम की ओर से बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

(लेखक - देवेंद्र प्रताप सिंह, दुर्गसी)

पर्यावरण संरक्षण की अनोखी मुहिम "ग्रीन विलेज-क्लीन विलेज"

सोच बदलो गांव बदलो संस्था स्वच्छता औरपर्यावरण संरक्षणएवं संवर्धन के प्रति जन जागरूकता पैदा करने और मोहन को रिश्ता रोपण की मुहिम को मजबूत करनेहेतु "ग्रीन विलेज- क्लीन विलेज" अभियान का संचालननियमित रूप से कर रही है। ग्रीन विलेज-क्लीन विलेज एक व्यापक अवधारणा है। इस अभियान के सफल संचालन के लिए गांव-गांव में कॉर्डिनेटर्स की नियुक्ति की गई है।

इस अभियान के प्रमुख उद्देश्य-ग्रामीणों को स्वच्छता के विषय में जागरूक बनाना और समय-समय पर गांव में सफाई अभियान चलाना,ग्रामीणों को शौचालय निर्माण और उसके नियमित उपयोग के लिए प्रोत्साहित करना, सार्वजनिक रास्तों से अतिक्रमण हटाकर उनके चौड़ीकरण के लिए ग्रामीणों को प्रोत्साहित करना, पर्यावरण संरक्षण हेतु पेड़ों की महत्ता बताने के साथ वृक्षारोपण कार्यक्रम का हर वर्ष आयोजन करना, गांव के पुराने जल स्रोतों को पुनर्जीवित करना तथा जल संरक्षण के लिए कार्य करना, पेयजल समस्या के निदान के लिए पारस्परिक सहयोग से पानी की व्यवस्थाकरना इत्यादि।

इसमें युवाओं का महत्वपूर्ण दायित्व है। पर्यावरण, जल संरक्षण, वृक्षारोपण, कूड़े कचरे का सही निस्तारण करके पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाया जा सकता है। इसमें एसबीजीबीटी टीम महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

ग्रीन विलेज-क्लीन विलेज के अंतर्गत उत्थान परिसर बाड़ी में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें 100 से अधिक टैग युक्त वृक्ष लगाये गए जिनकी पूर्ण रूप से देखरेख व ऑनलाइन देखरेख भी की जा रही है। "वृक्षारोपण- प्रकृति संरक्षण" सोच बदलो गांव बदलो टीम के कार्यकर्ताओं द्वारा उत्थान परिसर-उमरेह रोड बाड़ी में पौधरोपण किया गया। इस अवसर पर धौलपुर जिले विभिन्न क्षेत्रों से पधारे बुजुर्गों ने प्रकृति संरक्षण के अपने अनुभवों को युवाओं के साथ साझा किया और विभिन्न प्रकार के पेड़ों के महत्व को समझाया। एसबीजीबीटी के कॉर्डिनेटर देवेंद्र सिंह ने वृक्षों पर लगाए ग्रीन जीन

टैग के नवाचार के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि टैग के माध्यम से मोबाइल एप्लीकेशन में लगाए पेड़ के संबंध में संपूर्ण जानकारी प्राप्त की जा सकती है। टीम सदस्यों ने पौधे लगाए तथा इनकी नियमित देखरेख सुनिश्चित करने के लिए एक-एक पौधा गोद लिया। टीम के वालंटियर्स ने गांवों में पर्यावरण के प्रति जन जागरूकता लाने के लिए व्यापक पौधरोपण कार्यक्रम करने का संकल्प लिया। टीम के ग्रीन विलेज-क्लीन विलेज प्रकल्प के अंतर्गत लोगों को जागरूक करने और संवेदनशील बनाने के लिए गांवों में नियमित रूप से सफाई अभियान भी चलाए जा रहे हैं जो सरकार के "स्वच्छ भारत मिशन" को सफल बनाने के लिए महत्वपूर्ण एवं ज़मीनी क़दम है।

शहर को स्वच्छ और सुंदर रखने के साथ-साथ हरित बनाना भी आवश्यक है - डॉ. सत्यपाल मीणा

'सोच बदलो गांव बदलो' संस्था द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

धौलपुर। जिला प्रशासन के वृक्षारोपण अभियान को मजबूती देने के लिए मीना समाज पंच पटेलों और सोच बदलो गांव बदलो टीम के कार्यकर्ताओं द्वारा बाड़ी प्रशासन के समन्वय से मीना सामुदायिक भवन उत्थान परिसर- उमरेह रोड बाड़ी में पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें 250 अलग अलग प्रकार के पौधे लगाए गए। इस अवसर पर धौलपुर जिले विभिन्न क्षेत्रों से पधारे आदिवासी मीना समाज के बुजुर्गों ने प्रकृति संरक्षण के अपने अनुभवों को युवाओं के साथ विस्तृत रूप से साझा किया और विभिन्न प्रकार के पेड़ों महत्व को समझाया। कार्यक्रम संरक्षक आईआरएस अधिकारी डॉ सत्यपाल मीणा ने बाड़ी शहर में पेड़ों की घटती संख्या पर चिंता व्यक्त करते हुए लोगों से अपील की कि शहर को स्वच्छ और सुंदर रखने के साथ-साथ हरित बनाना भी आवश्यक है। उन्होंने उत्थान परिसर में वृक्षारोपण कार्य में सहयोग करने वाले समस्त महानुभाव को बधाई व शुभकामनाएं दी है। इस अवसर पर जलदाय विभाग से निरंजन, सीबीईओ धौलपुर दामोदर लाल मीणा, पूर्व एसीईओ बच्चू सिंह मीणा ने भी वृक्षारोपण कार्य के संबंध में अपने विचार रखे और वृक्षारोपण कार्य किया। बरणटोन शिक्षक नरेंद्र यादव ने भी वृक्षारोपण कार्य में सहयोग किया। एसबीजीबीटी के कॉर्डिनेटर देवेंद्र सिंह ने वृक्षारोपण की मुहिम के बारे में विस्तार से जानकारी दी और उन्होंने वृक्षों पर लगाए ग्रीनजीन टैग के नवाचार के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि प्रत्येक पेड़ को वृक्षारोपण कार्य करने वाले का नाम टैग के माध्यम से मोबाइल एप्लीकेशन में देखा जा सकता है और कहीं भी अपने लगाए पेड़ के संबंध में जानकारी और वृद्धि के बारे में जानकारी प्राप्त की जा सकती है। कार्यक्रम का संयोजन और मंच संचालन व्याख्याता लाखन सिंह मीना ने किया। इस अवसर पर बाड़ी शहर और मीना समाज के गणमान्य लोग तथा 'सोच बदलो गांव बदलो' टीम से सैकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

धौलपुर... वृक्षारोपण करते सोच बदलो गांव बदलो संस्था के सदस्य

कहते हैं कि “प्रकृति का बंधन सबसे पवित्र और सच्चा होता है” !

उक्त धारणा को ध्यान में रखते हुए गत वर्ष रक्षाबंधन के पर्व पर गांव सुरारी कलां की युवा टीम ने गांव के महाकालेश्वर मंदिर के उजाड़ डूंगर (पथरीली डगरिया) को हरित करने के लिए 51 पेड़ लगा कर रक्षाबन्धन के पवित्र पर्व को मनाया तथा मानव – प्रकृति के बन्धन की अहमियतता प्रेरित किया। उक्त पौधारोपण कार्य SBGBT के “ग्रीनविलेज- क्लीन विलेज” मिशन के तत्वाधान में किया गया । कार्य शुरुआत पेड़ लगाने हेतु JCB से नाली व गड्ढे खोद कर टैक्टर से उपजाऊ मिट्टी डलवाई , 51-ट्री गार्ड तैयार किए गए तत्पश्चात पेड़ लगाए गए तथा सभी युवाओं ने गर्मियों में टैंकर से भी पानी डालकर पेड़ों को बचाने को कटिबद्ध हैं तथा प्रत्येक वर्ष 51 पेड़ लगाने के लिए संकल्पित हैं।

दैनिक देश मोर्चा झाला

अनोखी मुहिम : 51 पेड़ लगाकर मनाया रक्षा बंधन का पावन पर्व

ग्रीन विलेज-क्लीन विलेज प्रकल्प को आगे बढ़ाते हुए कार्यकर्ता

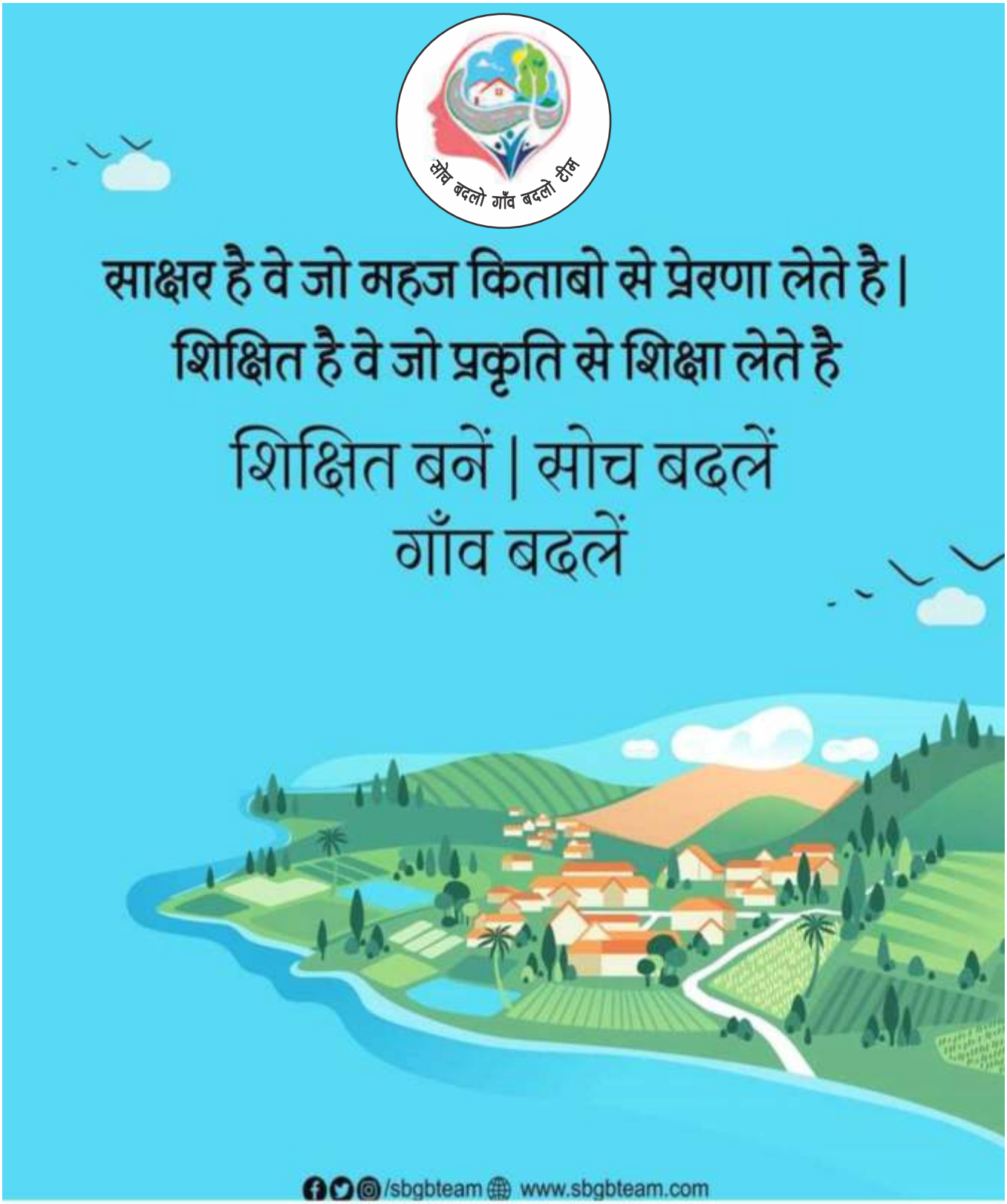
सोच बदलो गाँव बदलो टीम
साक्षर है वे जो महज किताबो से प्रेरणा लेते है |
शिक्षित है वे जो प्रकृति से शिक्षा लेते है
शिक्षित बनें | सोच बदलें
गाँव बदलें
/sbgbteam
www.sbgbteam.com

मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना

"राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की यह इच्छा रही कि हर आंख का आंसू पोंछ दिया जाये। जब तक आंसू और दर्द है, हमारा काम समाप्त नहीं होगा।"

बापू की इसी मंशा को साकार करने के लिए राज्य सरकार द्वारा बजट घोषणा 2021-22 में 'यूनिवर्सल हैल्थ कवरेज' को प्रदेश में लागू करने की घोषणा की है जिसकी अनुपालना में दिनांक 1 मई 2021 से प्रदेश में मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना की शुरूआत की जा रही है। प्रदेश के समस्त नागरिकों को चिकित्सा पर लगने वाले बड़े खर्चो से मुक्त कर उत्तम स्वास्थ्य की प्रतिबद्धता से इस योजना को लाया गया है ताकि तकलीफ एवं गंभीर बीमारी के ईलाज में पैसे की कोई बाध्यता नहीं हो। राजस्थान सरकार सदैव प्रदेश के नागरिकों को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए विभिन्न नवाचार करने में अग्रणी रही है। राजस्थान ने पूर्व में भी प्रदेश में निःशुल्क दवा एवं निःशुल्क जांच योजना का सफल संचालन किया है जिससे राज्य के सरकारी अस्पतालों में आमजन को निःशुल्क दवां एवंजांच का लाभ मिल रहा है।राजस्थान ने 'यूनिवर्सल हैल्थ कवरेज' की और कदम बढ़ाते हुए सरकारी के साथ-साथ निजी अस्पतालों में भी प्रदेश के नागरिकों को अस्पताल में भर्ती होने पर गुणवत्तापूर्ण निःशुल्क चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध करवाने एवं स्वास्थ्य सेवाओं के लिए परिवार द्वारा किये जाने वाले खर्च को कम करने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना की शुरूआत की है।

योजना के उद्देश्य

1. पात्र परिवारों का स्वास्थ्य पर होने वाला व्यय (Out of pocket Expenditure) कम करना।
2. पात्र परिवारों का राजकीय अस्पतालों के साथ-साथ योजना में सम्बद्धनिजी चिकित्सालयों के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण एवं विषेशज्ञ चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराना।
3. राज्य के पात्र परिवारों को योजना में वर्णित पैकेज से संबंधित बीमारियों का निःशुल्क ईलाज उपलब्ध करवाना।

योजनांतर्गत पात्रता

योजनान्तर्गत पात्र परिवार दो प्रकार की श्रेणियों में विभक्त किया गया है-

1. निःशुल्क लाभ प्राप्त करने वाली श्रेणीः- राज्य सरकार द्वारा निर्धारित ऐसी श्रेणी के पात्र परिवारों के प्रीमियम का 100 प्रतिशत भुगतान

सरकार द्वारा किया जाता है। वर्तमान में खाद्य सुरक्षा अधिनियम के अन्तर्गत पात्र परिवार, सामाजिक आर्थिक जनगणना (एसईसीसी) 2011 के पात्र परिवार, राज्य के सरकारी विभागों/ बोर्ड/ निगम/ सरकारी कम्पनी में कार्यरत संविदा कार्मिक, लघु सीमांत कृषक एवं गत वर्ष कोविड-19 अनुग्रह राशि प्राप्त करने वाले निराश्रित एवं असहाय परिवार निःशुल्क श्रेणी में सम्मिलित है।

2. रू 850/- प्रति परिवार प्रति वर्ष का भुगतान कर लाभ प्राप्त करने वाली श्रेणीः- राज्य के वें परिवार जो निःशुल्क पात्र परिवारों की श्रेणी में नही आते एवं सरकारी कर्मचारी/पेंशनर नही है तथा मेडिकल अटेंडेंस रूल्स के तहत् लाभ नहीं ले रहे है वें निर्धारित प्रीमियम का 50 प्रतिशत अर्थात् रू 850 प्रति परिवार प्रति वर्ष का भुगतान कर योजना का लाभ ले सकते है। प्रीमियम का शेष 50 प्रतिशत भाग सरकार द्वारा वहन किया जायेगा।

पंजीकरण कराने की प्रक्रियाः

योजनान्तर्गत लाभ लेने के लिए लाभार्थी को योजना में पंजीकरण करवाना होगा जो दिनांक 1 अप्रेल 2021 से आरंभ किया जा चुका है। श्रेणीवार पंजीयन कराने हेतु प्रक्रिया निम्नानुसार है-

1. निःशुल्क लाभ प्राप्त करने वाली श्रेणी हेतु पंजीयन प्रक्रिया-

i.खाद्य सुरक्षा अधिनियम के अन्तर्गत पात्र परिवार एवं सामाजिक आर्थिक जनगणना 2011 के पात्र परिवार योजनान्तर्गत पूर्व में ही लाभान्वित है। अतः इन्हे पंजीकरण की आवश्यकता नहीं है।

ii. लाभार्थी को योजना के रजिस्ट्रेशन पोर्टल पर पंजीकरण करवाना आवश्यक होगा जिसका लिंक योजना की अधिकारिक वैबसाइट https://chiranjeevi.rajasthan.gov.in/ पर उपलब्ध है। पंजीकरण के लिए लाभार्थी ऑनलाइन अपनी एसएसओ आईडी अथवा ई मित्र केन्द्र पर जाकर पंजीयन करवा सकते है।

iii. रजिस्ट्रेशन हेतु लाभार्थी के पास जन आधार कार्ड/ जन आधार कार्ड नम्बर/जन आधार कार्ड की पंजीयन रसीद का नम्बर एवं आधार कार्ड नम्बर होना आवश्यक है।

iv. पंजीकरण से पूर्व आवेदनकर्ता का आधारकार्ड में दर्ज मोबाइल नम्बर पर ओ.टी.पी. के माध्यम से ई-प्रमाणीकरण किया जायेगा जिसके लिए आवेदनकर्ता का आधार कार्ड/ आधार कार्ड का नम्बर होना आवश्यक है।

v. संविदाकार्मिकों के योजना में पंजीकरण के

आवदेन को सम्बन्धित विभाग के नोडल अधिकारी द्वारा ऑनलाइन सत्यापित किया जायेगा एवं नियमित रूप से अपडेट किया जायेगा।

vi. लघु एवं सीमान्त कृषक जो जनआधार कार्ड से जुडे हुए नही है, वें ई-मित्र के माध्यम से जनआधार पोर्टल पर निर्धारित प्रक्रिया अनुसार जनआधार कार्ड में Land Holding की सीडींग करवा सकेंगे। सीडींग के उपरांत परिवार को योजना के उपरोक्त रजिस्ट्रेशन पोर्टल पर स्वयं ऑनलाइन/ई-मित्र के माध्यम से पंजीकरण करवाया जा सकेगा।

vii. सफल पंजीकरण के बाद लाभार्थी पॉलिसी डॉक्यूमेंट प्रिंट ले सकेंगे।

2. रू 850/-प्रति परिवार प्रति वर्ष का भुगतान कर लाभ प्राप्त करने वाली श्रेणीः-

I. लाभार्थी को योजना के रजिस्ट्रेशन पोर्टल पर स्वयं ऑनलाइन अथवा ई-मित्र के माध्यम से पंजीकरण करवाना आवश्यक होगा। इन लाभार्थियों द्वारा 850 रूपये प्रति परिवार प्रति वर्ष प्रीमियम राशि के रूपमें सम्बन्धित ई-मित्र केन्द्र को अथवा डिजिटल पैमेन्ट मोड से भुगतान करना होगा। सफल पंजीकरण के बाद लाभार्थी पॉलिसी डॉक्यूमेंट प्रिंट कर पायेंगे।

ii. ई-मित्र अथवा स्वयं द्वारा योजनान्तर्गत पंजीयन की चरणवार विस्तृत प्रक्रिया योजना की वैबसाइट https://chiranjeevi.rajasthan.gov.in/ पर उपलब्ध है।

iii. पंजीयन शुल्कः दोनो श्रेणी के लाभार्थियों को ई मित्र केन्द्र पर किसी भी प्रकार के शुल्क का भुगतान नहीं करना है। पंजीकरण हेतु सफल आवेदन का शुल्क, प्रीमियम जमा शुल्क एवं प्री प्रिन्टेड़ कागज पर पॉलिसी दस्तावेज के प्रिंट का शुल्क राज्य सरकार द्वारा वहन किया जायेगा।

योजना के लाभ-

इस योजना के अंतर्गत मरीजों की गंभीर बीमारियों का सरकारी और निजी अस्पतालों में कैशलेस एवं निःशुल्क इलाज किया जा रहा है। चिरंजीवी योजना के अंतर्गत प्रति परिवार सालाना ईलाज की लिमिट 10 लाख रुपए है। राज्य सरकार चिरंजीवी योजना के अंतर्गत तकरीबन 1597 हेल्थ पैकेज निःशुल्क उपलब्ध करवा रही है। जिनमें गंभीर बीमारियां जैसे कोविड-19, ब्लैक फंगस, कैंसर, पैरालाइसिस, हार्ट सर्जरी, न्यूरो सर्जरी, ऑर्गन ट्रांसप्लांट आदि शामिल हैं । योजना का दायरा और व्यापक करते हुए इस साल से कॉक्लेयर प्लांट, बोन मैरो ट्रांसप्लांट, आर्गन ट्रांसप्लांट, ब्लड प्लेटलेट्स प्लाज्मा ट्रांसफ्यूजन, लिम्बप्रोस्थेसिस का भी निःशुल्क ईलाज उपलब्ध होगा।

नारी शक्ति का रक्तदान संकल्प -रूढ़िवादिता पर प्रहार

मानव शरीर की वाहिकाओं में दौड़ रहे 'रक्त' की कीमत व्यक्ति को ज़रूरत पड़ने के समय ही पता चलती है। कई बार जरूरतमंद व्यक्ति को यदि समय पर रक्त न मिले, तो उसका जीवन संकट में पड जाता है । यही वह वजह है जिसने सोच बदलो गांव बदलो टीम को मानवीय संवेदनाओं को समझने और जरूरतमंद व्यक्ति को जरूरत के समय रक्त आपूर्ति सुनिश्चित करने हेतु "रक्तदान-महादान" जैसे प्रकल्प की शुरूआत करने की प्रेरणा दी । रक्तदान ही एकमात्र विकल्प है जिससे समाज में जागरूकता लाकर कई जानें समय पर रक्तापूर्ति से अकाल मृत्यु के शिकार से बचाई जा सकती हैं । रक्तदान से ही जरूरतमंद लोगों को समय पर रक्तापूर्ति हो जाने से जीवनदान मिल सकता है।टीम के "रक्तदान-महादान" प्रकल्प के कोऑर्डिनेटर कमल सिंह जी और मनोज जी के नेतृत्व में सोच बदलो गांव बदलो टीम के सौजन्य से सरमथुरा कस्बे में प्रशिक्षित डॉक्टर्स और अर्पण ब्लड बैंक की टीम के मार्गदर्शन में "उत्थान भवन" में द्वितीय विशाल स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन सरकारी गाइडलाईन्स की पालना और प्रोटोकॉल काध्यान रखते हुए सफलतापूर्वक किया गया और 150 यूनिट से ज्यादा ब्लड डोनेशन लिया गया। इसी प्रकल्प की अभिशंषा में 21 मई 2019 को उत्थान भवन सरमथुरा के उद्घाटन समारोह के पावन अवसर पर प्रथम रक्तदान शिविर का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया था। रक्तदान शिविर में न केवल युवाओं ने बल्कि सामाजिक कार्यकर्ताओं, सरकारी कर्मचारियों एवं महिलाओं ने भी स्वेच्छा से यहां आकर रक्तदान किया। यह प्रथम अवसर था जब इतनी संख्या में मातृशक्ति ने भी उत्साह पूर्वक रक्तदान-महादान जैसे कार्यक्रम में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया । महिलाओं के उत्साह को देखकर कई युवा जो केवल रक्तदान शिविर को विजिट करने आये, वो भी अपने आपको रक्तदान करने से नहीं रोक पाए और सहर्ष रक्तदान कर मानवता की सेवा में समर्पित होकर होली के पावन पर्व को यादगार बना दिया। कहा जाता है किदान करने वाले बहुत लोग होते हैं लेकिन रक्तदान एक फरिश्ता ही कर सकता है क्योंकि दुनियां में फरिश्ता ही है जो आत्मा को संजोए रख सकता है । इसीलिए तो वह धरती पर रब, परमात्मा, ईश्वर या मनुष्यता का अंश है।

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

मानव जीवन बचाने और समाज में समरसता लाने हेतु सोच बदलो-गांव बदलो टीम ने लिया रक्तदान का संकल्प - डॉ सत्यपाल मीणा

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

» महिलाओं तक पहुंची रक्तदान- महादान की जागरूकता अपील

» सोच बदलो-गांव बदलो टीम के रक्तवीरों ने बढ़चढ़ कर किया रक्तदान

धौलपुर। मानव शरीर की वाहिकाओं में दौड़ रहे ५०७%% की कीमत व्यक्ति को जरूरत पड़ने के समय ही पता चलती है। कई बार जरूरतमंद व्यक्ति को यदि समय पर रक्त न मिले, तो उसका जीवन संकट में पड़ जाता है। यही वह वजह है जिसने सोच बदलो गांव बदलो टीम को मानवीय संवेदनाओं को समझने और जरूरतमंद व्यक्ति की जरूरत के समय रक्त आपूर्ति सुनिश्चित करने हेतु -रक्तदान - महादान- जैसे प्रकल्प की शुरुआत करने की प्रेरणा दी। रक्तदान ही एकमात्र विकल्प है जिससे समाज में जागरूकता लाकर कई जाने समय पर रक्तापूर्ति से अकाल मृत्यु के शिकार से बचाई जा सकती है। रक्तदान से ही जरूरतमंद लोगों को समय पर रक्तापूर्ति हो जाने से जीवनदान मिल सकता है।

टीम के -रक्तदान - महादान- प्रकल्प के कोऑर्डिनेटर कमल सिंह जी और मनोज जी के नेतृत्व में सोच बदलो गांव बदलो टीम के सौजन्य से सरमथुरा कस्बे में प्रतिष्ठित डॉक्टर्स और अपेक्स ब्लड बैंक की टीम के मार्गदर्शन में -उत्थान भवन- में द्वितीय विशाल स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन सरकारी गाइडलाइन्स की पालना और प्रोटोकॉल का ध्यान रखते हुए सफलतापूर्वक किया गया और 150 यूनिट से ज्यादा ब्लड डोनेशन लिया गया। सोच बदलो गांव बदलो टीम के मार्गदर्शक डॉ. सत्यपाल सिंह मीणा, एडिशनल कमिश्नर और इनकम टैक्स ने हमारी टीम से मुखातिब होते हुए बताया कि पूर्व में उनकी टीम द्वारा मानवता और जनकल्याण के इसी प्रकल्प की अभिलाषा में 21 मई 2019 को उत्थान भवन सरमथुरा के उद्घाटन समारोह के पावन अवसर पर प्रथम रक्तदान शिविर का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया था। रक्तदान शिविर में न केवल युवाओं ने बल्कि सामाजिक कार्यकर्ताओं, सरकारी कर्मचारियों एवं महिलाओं ने भी स्वेच्छा से यहां आकर रक्तदान किया। उन्होंने बताया कि यह प्रथम अवसर था जब इतनी संख्या में महाशक्ति ने भी उत्साह पूर्वक रक्तदान - महादान जैसे कार्यक्रम में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। महिलाओं के उत्साह को देखकर कई युवा जो केवल रक्तदान शिविर को विजिट करने आये, वो भी अपने आपको रक्तदान करने से नहीं रोक पाए और सभी रक्तदान कर मानवता की सेवा में समर्पित होने के पावन पर्व को यादगार बना दिया। उन्होंने कहा कि दान करने वाले बहुत लोग होते हैं लेकिन रक्तदान एक फरिश्ता ही कर सकता है क्योंकि दुनिया में फरिश्ता ही है जो आत्मा को संजो रख सकता है। इसीलिए ये वह धरती पर रब, परमात्मा, ईश्वर या मनुष्यता का अंश है। रक्तदान से जीवनदान देना सोच बदलो-गांव बदलो टीम (एसबीजीबीटी) का एक महत्वपूर्ण मानवतावादी प्रकल्प है। डॉ. मीणा ने युवाओं से अपील करते हुए कहा कि मानवहित और जनकल्याण हेतु वो आगे आएं और समय-समय पर रक्तदान कर जरूरतमंद लोगों के जीवन को बचाने में महत्वपूर्ण भागीदारी अदा करें। उन्होंने रक्तदान करने वाले सभी दिव्य जनों को इस पवित्र और दिव्य कार्य में अपनी अग्रणी भूमिका निभाने और मानवतावादी महायज्ञ में अपना अमूल्य रक्त दान कर दो जिंदगियों के जीवनदान का पुण्यफल प्राप्त करने की बधाई और शुभकामनाएं दी।

सोच बदलो गांव बदलो टीम के कोऑर्डिनेटर देवेन्द्र सिंह ने बताया कि कार्यक्रम में युवा रक्त दाता भारी संख्या में आगे रक्तदान को आगे आए। युवाओं में रक्तदान को लेकर होड़ सी लगी रही, युवा रक्तदाताओं के उत्साह के आगे बेड भी कम पड़ गए, तो एक बेड पर एक साथ दो-दो युवाओं ने रक्तदान किया। रक्तदान को लेकर युवाओं के उत्साह का माहौल ऐसा नजर आया मानो रक्तदान की इस अनोखी होली में कोई भी युवा अपने आपको इस पुनीत अवसर से वंचित नहीं करना चाहता था। इस अवसर पर डॉक्टर गब्बर ने कहा कि टीम द्वारा इस शिविर का आयोजन का एक उद्देश्य रक्तदान के विषय में समाज में फैली भ्रांतियों को दूर करने का प्रयास है वहीं दूसरी ओर युवा साथियों को अधिक से अधिक रक्तदान करने के लिए प्रेरित करना है। इस अवसर पर सोच बदलो गांव बदलो टीम ने प्रत्येक वर्ष होली के पावन पर्व पर इसी तरह के रक्त दान शिविर के आयोजन का भी संकल्प लिया। कार्यक्रम के अंत में डीएसपी प्रहलाद निरीक्षक मधुरो अमर सिंह मीणा ने अपने कर कमलों से रक्तदाताओं को प्रशस्ति पत्र का वितरण कर सभी प्रतिभागियों और टीम को सम्मानित किया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में टीम की ओर से बीसीएमओ डॉ. गब्बर मीणा, पप्पू गिर्राजी, छाछ टीम कमेटी, डीपीएम जी, विकास, रूप सिंह, सुखबीर सिंह, भरत सिंह, दौलत, कमलेन्द्र सिंह, कवि अजय राजा, मधु जी जोहिल, भगवान सिंह जी, रूपम सिंह जी, संताराम, रामनरेश, रणवीर, धर्मवीर, रामकुमार, चरण सिंह सहित सैकड़ों कार्यकर्ताओं का विशेष सहयोग रहा।

रक्तदान से जीवनदान देना सोच बदलो-गांव बदलो टीम (एसबीजीबीटी) का एक महत्वपूर्ण मानवतावादी प्रकल्प है। SBGBT संस्थापक डॉ. मीना ने युवाओं से अपील करते हुए कहा कि मानवहित और जनकल्याण हेतु आगे आएं और समय-समय पर रक्तदान कर जरूरतमंद लोगों के जीवन को बचाने में महत्वपूर्ण भागीदारी अदा करें।

शिविर में युवाओं में रक्तदान को लेकर होड़ सी लगी रही तथायुवा रक्तदाताओं के उत्साह के आगे बैड भी कम पड़ गए,तो एक बैड पर एक साथ दो-दो युवाओं ने रक्तदान किया। रक्तदान को लेकर युवाओं के उत्साह का माहौल ऐसा नजर आया मानों रक्तदान की इस अनोखी होली में कोई भी युवा अपने आपको इस पुनीत अवसर से वंचित नहीं करना चाहता था। टीम द्वारा इस शिविर केआयोजन का एक उद्देश्य रक्तदान के विषय में समाज में फैली भ्रांतियों को दूर करने का प्रयास है वहीं दूसरी ओर युवा साथियों को अधिक से अधिक रक्तदान करने के लिए प्रेरित करना है। इस अवसर पर सोच बदलो गांव बदलो टीम ने प्रत्येक वर्ष होली के पावन पर्व पर इसी तरह के रख दान शिविर के आयोजन का भी संकल्प लिया।

बाड़ी (धौलपुर) 5 अप्रेल 2021 ब्रज भास्कर पृष्ठ : 4

महिलाओं तक पहुंची रक्तदान : महादान की जागरूकता अपील

सोच बदलो-गांव बदलो टीम के रक्तवीरों ने बढ़चढ़ कर किया रक्तदान

मानव जीवन बचाने और समाज में समरसता लाने हेतु सोच बदलो-गांव बदलो टीम ने लिया रक्तदान का संकल्पः डॉ सत्यपाल मीणा

सोच बदलो गांव बदलो यात्रा का 32 वां पड़ाव !
गाँव सुनीपुर

कोविड-19 जैसी वैश्विक महामारी के चलते लंबे अरसे से सुस्त पड़ी सामाजिक गतिविधियों और जन जागरूकता और जनचेतना की मुहिम को आगे बढ़ाते हुए सोच बदलो गांव बदलो टीम ने 32 वीं जन जागरूकता व जनचेतना यात्रा का आयोजन दिनांक 03 नवंबर 2021 को बाड़ी कस्बे से 4 किलोमीटर दूर स्थित सुनीपुर गांव में किया। गाँव के इतिहास में यह पहला अवसर था जब गांव के सभी लोग एक साथ मिलकर एक जाजम पर बैठकर ग्राम विकास की परिचर्चा में सहभागी बने। सोच बदलो गांव बदलो टीम का शुरुआत से ही यह उद्देश्य रहा है कि गांवों में पारस्परिक सामंजस्य और सहयोग से जन-सहभागिता को बढ़ावा दिया जाए और गांव के विकास में लोगों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जाए।गांव के मध्य में स्थित मां भगवती के

नवनिर्मित प्रांगण में आयोजित हुई विशाल जनसभा की औपचारिक शुरुआत सरपंच प्रतिनिधि रामकेश मीना द्वारा सोच बदलो गांव बदलो टीम के स्वागत से की गई। गांव के पंच पटेलों ने टीम की ओर पधारे हुए वरिष्ठ अतिथियों का तिलक लगाकर अभिवादन किया। तत्पश्चात भारत सरकार के श्रम विभाग में असिस्टेंट डायरेक्टर के पद पर कार्यरत युवा अधिकारी हरिकेश मीना ने सोच बदलो गांव बदलो टीम को गांव की भौगोलिक, शैक्षणिक वस्तुस्थिति और विगत कुछ वर्षों में युवाओं द्वारा किए गए सकारात्मक प्रयासों से अवगत कराया।सोच बदलो गांव बदलो टीम की ओर से पधारे विद्वान साथियों के क्रम में भारतीय एयरटेल में सीनियर मैनेजर के पद पर कार्यरत देवेंद्र सिंह जी धनेरा ने ग्राम वासियों को संबोधित करते हुए कहा कि गांव के सही मायनों में विकास के लिए हमें अपने आप से शुरुआत करने की जरूरत है। हमें अंदर और बाहर एक जैसा होने की जरूरत है। अच्छी सोच से ही अच्छे विचार बनते हैं और वही विचार कर्म के रूप में क्रियान्वित हो जाते हैं। टीम सर्वप्रथम व्यक्ति के विचारों, सोचने के तरीके और दुनिया को देखने के नज़रिए पर

काम करने के लिए अपील करती है। व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके विचारों और सोच का बाह्य प्रक्षेपण होता है। जैसा सोचोगे, वैसे ही बन जाओगे। सोच बदलने से जीवन बदल जाता है। सोच बदलने से इन्सान का चरित्र बदल जाता है। सोच बदलने से नज़र और नज़ारा बदल जाता है। सोच बदलने से दुःख सुख में बदल जाता है; तो भला फिरसोच बदलने से गांव और देश काविकास कैसे नहीं संभव है। राजस्थान प्रदूषण विभाग में प्रदूषण अधिकारी के रूप में कार्यरत डी.पी.एस. जी ने ग्रामीणों को समझाया कि हम अपने बच्चों से जिस तरह के व्यवहार की उम्मीद रखते हैं, उसके लिए हमें उन्हें अच्छा माहौल देने की जरूरत है । हमें जरूरत है उन्हें व्यसनों से बचाने की और गलत राह पर जाने से रोकने की। इसके लिए हमें बच्चों के समक्ष स्वयं धूम्रपान और शराब सेवन जैसी गलत आदतों को अपने से दूर रखना होगा। वहीं इस अवसर पर युवा उद्यमी के रूप में विख्यात विष्णु जी कांकरेट द्वारा ग्राम वासियों से सोच बदलो गांव बदलो टीम के शिक्षा क्षेत्र में की गई नायाब पहल उत्थान भवन निर्माण में अपेक्षित सहयोग हेतु अपील की गई। आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रख्यात सम्मानीय गोविंद गुरु जी ने भी ग्राम वासियों को संबोधित करते हुए संक्षिप्त में बहुत ही मार्मिक और सारगर्भित विचार प्रेषित किए और युवाओं से सोच बदलो गांव बदलो टीम और डॉ. सत्यपाल जी के पद चिन्हों पर चलने की अपील की। अंतिम वक्ता के तौर पर टीम के जनक, प्रेरणास्रोत और मार्गदर्शक डॉ. सत्यपाल सिंह मीना जी ने अपने भावुक संबोधन में ग्राम वासियों से अपने बच्चों को भावी पीढ़ी को संस्कारमयी और अच्छी विरासत प्रदान करने हेतु कुछ अहम कदम उठाने हेतु आह्वान किया। उन्होंने ग्रामीणों को संकुचित मानसिकता का त्याग कर एक बड़ी और जिम्मेदार सोच अपनाने हेतु समझाने का प्रयास किया। गांव के हर गरीब और लाचार परिवार के प्रति संवेदना रखकर उन्हें सहयोग करने की अपील की। सरकारी योजनाओं और प्रशासनिक प्रयासों को हर जरूरतमंद तक पहुंचाने में मदद हेतु ग्रामीण प्रयासों की जरूरत बताते हुए उन्होंने पंच पटेलों से एक उपयुक्त स्थान का चयन कर गांव में आधुनिक सामुदायिक भवन"उत्थान भवन" के रूप में निर्माण हेतु सुझाव रखा और टीम की ओर से हर संभव सहयोग का प्रस्ताव भी रखा। गांव के सरपंच प्रतिनिधि से बच्चों के लिए विद्यालय के समीप पुस्तकालय हेतु जगह चिन्हित करने का निवेदन किया ताकि गरीब और सुविधाओं के अभाव में बच्चों को अच्छी पढाई न कर पाने के माहौल का मलाल न रहे। कार्यक्रम के अंत में

अध्यापक रामखिलाड़ी मीना जी ने समस्त ग्राम वासियों की ओर से सोच बदलो गांव बदलो टीम का उनके गांव आगमन पर आभार जताया और धन्यवाद ज्ञापित किया।

बदलाव की कहानी, लोगों की जुबानी

अजय कुमार, पवैनी

मैं उत्थान कोचिंग का ही एक छात्र हूं। मैंने 2019 में 12वीं की परीक्षा देकर बीएसटीसी के बैच में एडमिशन लिया। उत्थान कोचिंग ज्वाइन करने के बाद जीवन में कई परिवर्तन आए। मेरे सोचने का नज़रिया ही बदल गया। मुझे समाज सेवा की भावना एवं दूसरों के लिए कुछ करने की एक चाह जागृत हुई। SBGBT की प्रेरणा से मुझे मेरे जीवन का एक उद्देश्य मिल गया कि मुझे अपने जीवन में कुछ करना है।

मैंने 2019 में प्रथम प्रयास में बीएसटीसी का पेपर पास किया और मनियां (धौलपुर) में मुझे कॉलेज मिली;जहां मैंने कॉलेज के साथ-साथ रीट की तैयारी की और 2021-22 की भर्ती में बिना किसी कोचिंग के अपने माता-पिता एवं गुरुजनों के आशीर्वाद से स्वाध्याय द्वारा 150 में से 130 नंबर लाकर रीट का पेपर पास किया और वर्तमान में राजकीय प्राथमिक विद्यालय रतनपुर (भिरामद) में अध्यापक के रूप में कार्यरत हूं। मैं सोच बदलो गांव बदलो टीम और श्री सत्यपाल मीणा जी का बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूं कि आपने ऐसा प्लेटफार्म तैयार किया है जहां जो बच्चे अभावों की वजह से नहीं पढ़ पाते थे ,जिन बच्चियों को कहीं बाहर भेजने के डर से नहीं पढ़ाया जाता था। वे आज बिना किसी अभाव एवं डर के पढ़ सकती हैं। मैं उन सभी बच्चों की तरफ से समूची टीम और सर का धन्यवाद करना चाहता हूं। अंत में, मैं यही कहना चाहूंगा कि सोच तो बदल रही है! के डर से नहीं पढ़ाया जाता था। वे आज बिना किसी अभाव एवं डर के पढ़ सकती हैं।मैं उन सभी बच्चों की तरफ से समूची टीम और सर का धन्यवाद करना चाहता हूं। अंत में, मैं यही कहना चाहूंगा कि सोच तो बदल रही है ।

“THANK YOU SO MUCH SBGBT AND SATYAPAL SIR FOR INSPIRING ME AND A LOTS OF PEOPLE LIKE ME AND FILLING OUR LIFE WITH THE HAPPINESS. WE ARE ALWAYS WITH YOU AND YOUR WHOLE TEAM.”

देवेन्द्र प्रताप सिंह (डीपीएस, दुर्गसी)

सोच बदलो-गाँव बदलो टीम ने मुझे सामान्य आदमी से सही अर्थों में इंसान बना दिया। जब से मैं टीम से जुड़ा हूँ तब से मेरा सोचने-विचारने का तरीक़ा ही बदल गया है। जीवन जीने की कला, आस-पास के परिवेश तथा परिस्थितियों को देखने का नज़रिया बदल चुका है। विचारों में सकारात्मकता, मन में कमजोर, निर्बल व असहाय लोगों के प्रति करुणा, दया व परोपकारिता का भाव पैदा हो चुका है। अब pay back to society के सिद्धांत का अनुसरण करते हुए मानव उत्थान हेतु कार्य करना ही मेरी ज़िंदगी का परम ध्येय है। मैं आप सभी को बताना चाहूँगा कि सोच बदलो-गाँव बदलो टीम एक सामाजिक संगठन मात्र ही नहीं बल्कि एक विस्तृत विचारधारा है तथा समाज सेवा, कर्तव्य निष्टा, परोपकारिता की ऐसी लत है जो आप को यदि एक बार लग गई; तो आप अपने आपको जीवन पर्यंत इससे मुक्त नहीं कर पाएँगे। अतः मेरा सभी बंधुओं विशेषकर युवाओं से निवेदन है कि आप सोच बदलो-गाँव बदलो टीम के साथ अधिक से अधिक जुड़ें व सामूहिक रूप से मानव समाज के उत्थान हेतु कार्य करें। जय हिंद!

मन्नू JEN, कुरिगवां

(चुनौतीयों में विश्वास) सोच बदलो-गांव बदलो टीम का हर कार्यकर्ता किसी भी चुनौती से नहीं डरता; क्योंकि जब-जब कोई चुनौती सामने आई है, उसी में सफलता पाई है तथा सफलता के हर पड़ाव पर आत्मविश्वास मजबूत हुआ है। उत्थान भवन सरमथुरा के रूप में सबसे बड़ी चुनौती को स्वीकारते हुए कार्यकर्ताओं ने अपने आत्म विश्वास को मजबूत किया। आत्मविश्वास एवं सकारात्मक दृष्टिकोण से लबरेज़ सोच बदलो-गांव बदलो टीम केकार्यकर्ता "पे बैक टू सोसायटी" के सिद्धांत को धरातल पर उतार रहे हैं।ये आत्मविश्वास और सकारात्मक ऊर्जा हमें SBGBT के कर्णधार डॉ सत्यपाल सर एवंदेवेंद्र जी धनेरा जैसे कर्णधारों से प्राप्त होती है

भगवान दास, उमरेह

कि थककर बैठ जाने का नाम ज़िन्दगी नहीं, सिर्फ़ पद प्रतिष्ठा पाने का नाम ज़िन्दगी नहीं।

कुछ कर जाओ सबके हित एक मिशाल बनो, सिर्फ़ ख़ुद के लिए जीने का नाम जिन्दगी नहीं। जियो तो ऐसे जियो कि ज़िन्दगी निखर उठे,मरो तो ऐसे मरो कि मौत भी तरस उठे ।

मैं, स्वयं एक किसान परिवार का बेटा हूं। मेरे माता-पिता ने कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए मुझे इतना काबिल बनाया कि आज समाज के अच्छे लोगों के साथ जुड़कर समाजोत्थान के लिए प्रयास कर रहा हूं। मेरे अध्ययन काल के दौरान माता-पिता के संघर्ष को देखते हुए मैंने ये निश्चय किया कि मैं स्वयं काबिल बनकर ऐसे हर बच्चे की यथा संभव मदद करूंगा जो मेहनत करके आगे बढ़ना चाहते हैं लेकिन उनके पास सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं।

इसी के लिए मैं सोच बदलो गांव बदलो टीम के साथ स्थापना के समय से ही जुड़ा और मुझे खुशी है कि SBGBT इस उद्देश्य को लेकर आगे बढ़ रही है कि समाज के प्रत्येक ज़रूरतमंद बच्चे को जयपुर और गंगापुर शहरों जैसी शैक्षिक सुविधाएं बाड़ी और सरमथुरा कस्बों में ही उपलब्ध हो सकें। सोच बदलो-गांव बदलो केवल एक संस्था ही नहीं, बल्कि वह विचारधारा है जिसने ग्रामीण क्षेत्रों और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का सार्थक प्रयास किया है। साथ ही गांव, समाज एवं राष्ट्र की प्रगति हेतु अपने अन्तर्मन में सकारात्मक विचार रखने वाले समाजसेवा को समर्पित युवाओं को एक मंच प्रदान किया है; जिससे वे गांव और समाज के लिए नित नए आयाम स्थापित कर रहे हैं ।

विष्णु,कांकरेट

SBGBT से लगाव, लगाव से जुड़ाव, जुड़ाव से बदलाव:-

1. विद्वान साथियों का साथ मिलना ।
2. किसी भी परिस्थिति में साथियों द्वारा उचित मार्गदर्शन एवं सहयोग।
3. तुच्छ से व तुच्छ सी मेहनत से समाज में पहचान।
4. नकारात्मक विचारों की बजाय सकारात्मक सोच का पनपना ।
5. पहले सिर्फ घर, अब गांव और समाज एक जैसा दिखना।
6. किसी भी सार्वजनिक कार्य को बढ़ावा देने के साथ-साथ कोई ग़लती न हो जाए, उसके लिए बाबूजी (सत्यपाल सर) से डर लगना;
7. परहित में किसी भी कार्य के लिए डरना नहीं और कोई काम बड़ा नहीं,ये सबसे बड़ी सीख लेना।

सच कहूं तो

"गुरु मिल्यो तो सब मिल्यो, नहीं तो मिल्यो न कोयमात पिता सुत नारि तो, सबके ही घर में होय"

चौपाई - सठ सुधरें सत संगति पाई,
पारस परस कुधात सुहाई

सोच बदलो गांव-बदलो टीम के कर्ण धार ने मानव जीवन को जीना सिखाया है।

रूपसिंह, सुरारी कलाँ

सोच बदलो-गांव बदलो टीम सकारात्मक ऊर्जा का वह टॉनिक है जिसे गटकने वाले मनुष्य के मस्तिष्क में, सर्वप्रथम सुविचारों का ज्वार उमड़ता है। तत्पश्चात् हृदय में इंसानियत का बोध होता है।नैतिकता के इसी बोधत्व के सानिध्य में SBGBT कार्यकर्ता,मानवीय मूल्यों की राह पर अग्रसर होकर जमीनी स्तर के सामाजिक उत्थान संगत कार्यों का नेतृत्व करने लगता है।

मनीराम, बड़ापुरा (मासलपुर)

मुझे गर्व है कि मैं SBGBT का सदस्य हूँ । SBGBT एक ऐसा परिवार है जिसके सदस्य एक सूत्रीय धागे में बंधे हुए हैं। सारे सदस्य अलग-अलग ज़िलों से अलग-अलग गांवों से सरोकार रखते हैं लेकिन SBGBT ने सभी की दूरियां और सीमाएं खत्म कर एक परिवार में बांध रखा है। SBGB टीम समय-समय पर अपने कार्यकर्ताओं के सुख-दुख में भागीदारी बनकर हिम्मत और हौसला देती है। SBGB सदस्यों में एकता व सामंजस्य इतना है कि जनहित या व्यक्तिगत कार्यों में आपस मे बडी तत्परता और मुस्तैदी से मदद करते हैं। बड़े हैरत की बात है कि इस परिवार के अमूमन सदस्य कभी आपस मेंमिले भी नहीं होंगे लेकिन कभी ऐसा महसूस ही नहीं होता।हम प्रतिदिन SBGBT के व्हाट्सएप ग्रुप व फेसबुक ग्रुप के माध्यम से मानव सेवा के नए-नए उदाहरणों से एक-दूसरे से रूबरू होते रहते हैं। सोच बदलो-गांव बदलो टीम के मंच पर हम युवाओं को समाज में सकारात्मक एवं रचनात्मक कार्यो में सक्रिय भागीदारी निभाने के लिए नित नई प्रेरणा एवं मार्गदर्शन मिलता रहता है; जिसकी छावं में हम सब युवा मिलकर निश्चित रूप से ग्रामीण क्षेत्रों की तस्वीर बदलेंगे।

संतराम, खरागापुर

कोई भी योजना पहली बार में ही आदर्श नहीं बनती। किसी नई चीज़ को हासिल करने की अधिकांश योजनाएं शुरुआत में बार-बार असफल होंगी। आपको इसकी अपेक्षा रखनी ही चाहिए। काम की योजना बनाते समय फीडबैक लेने और सुधार करने की योग्यता आपकी सफलता के लिए अनिवार्य है। पूछते रहें, "क्या काम कर रहा है? और क्या काम नहीं कर रहा है? "इस बारे में ज़्यादा चिंता करें कि क्या सही है, इस बारे में चिंता ना करें कि कौन सही है। जब भी आपकी योजना काम ना करे, तो आराम से बैठ

जाएं,गहरी सांस खींचें और दोबारा योजना पर काम शुरू कर दें।

खुशीलाल, गेंदापुरा

मैं SBGBT के साथ सर्वप्रथम वर्ष 2017 में जुड़ा। SBGBT के साथ जुड़कर मुझे बहुत ही सुखानुभूति हुई। SBGBT के साथ जुड़कर मुझे अच्छे लोगो की संगत प्राप्त हुई। SBGBT के साथ जुड़कर मैं अपने समाजिक जीवन व व्यवहार में काफ़ी परिवर्तन ला पाया हूं । SBGBT से मुझे काफी सकारात्मकता प्राप्त हुई है । SBGBT से जुड़कर मुझे समाज सेवा करने का और सामाजिक जीवन यापन करने का अवसर प्राप्त हुआ है। मेरा आप सभी साथियों से अनुरोध है कि आप SBGBT के साथ जुडकर अपने समाज सेवा करने के सपने को साकार करें । आप को ज़्यादा कुछ करने की आवश्यकता नहीं है । आप मात्र सच्चे मन से टीम के साथ जुडे रहें, यही काफ़ी है। आपके जुड़े रहने से ही कार्य सफल होते रहेंगे । आप अकेले समाज के लिये ज्यादा कुछ नहीं कर सकते है तो आप SBGBT के साथ जुडकर अपने समाज के लिए, अपने लोगों के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं। मैंने अभी तक SBGBT के साथ जुडकर ज़्यादा कुछ योगदान नहींदिया है फ़िर भी जितना कर सका हूं उसके लिएSBGBT ने मुझे समाज में जो पहचान दिलाई है उसके लिये मैं SBGBT का आभारी हूं।

मेघराम, गुढ़ा

समाज और देश की उन्नति के लिए आवश्यक है, शिक्षा। जिले के बाड़ी और सरमथुरा कस्बों में शिक्षा की बेहतरी के जमीनी प्रयास सोच बदलो गाँव बदलो टीम के द्वारा प्रारंभ किए जा चुके हैं। मैं पाठकों से यही अपील करूंगा कि टीम के विकासोन्मुखी प्रयासों को गति देने तथा अपने सामाजिक फ़र्ज़ को पूरा करने के लिए टीम से जुड़ें तथा समाजोत्थान एवं राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दें। त्था नए व राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दें।

डॉ कल्याणसिंह, खौरपुरा

समाज की उन्नति में भागीदारी निभाने का बहुत ही प्रभावी माध्यम है सोच बदलो गाँव बदलो अभियान। इस अभियान से जुड़कर मैंने अपने सामाजिक दायित्वों का बोध करना सीखा है। तो आइए, इस अभियान से जुड़कर समाज में सामाजिक सौहार्द और एकता कायम रखते हुए

अभियान के प्रणेता डॉ सत्यपालजी के हाथों और इरादों को मजबूती दें।

भगवान सिंह,रीछरा का पुरा

समाज उत्थान हेतु तत्परता से कार्य करने में सोच बदलो-गांव बदलो टीम का बहुत ही अहम योगदान है। किसी भी इंसान के जीवन में मूल्यों का अहम योगदान रहता है क्योंकि इन्हीं के आधार पर अच्छा-बुरा या सही-गलत की परख की जाती है। मुझे एसबीजीबीटी के माध्यम से एक सच्चे इंसान के रूप में समाजहित में कार्य करने एवं जीवन में आगे बढ़ने की सीख मिली। परिवार, समाज और विद्यालय के अनुरूप ही एक व्यक्ति में सामाजिक गुणों और मानव मूल्यों का विकास होता है। जो टीम से जुड़कर समझने से बढ़ावा मिला। यह सब विस्तार से समझाने में एसबीजीबीटी का बहुत बड़ा योगदान रहा। टीम एसबीजीबीटी ने सांप्रदायिकता, जातिवाद, हिंसा, असहिष्णुता से हटकर जनहित के कार्य,नशामुक्ति के प्रति जनजागरूकता लाने, शिक्षा का प्रचार प्रसार करने एवं सकारात्मक सोच को बढ़ावा देने के अतुलनीय कार्य किये है। जिससे मैं बहुत प्रभावित हूँ। समाज में मूल्यों के विघटन के रोकने में टीम एक उदाहरण हैं। मैं प्रबुद्धजनों, युवाओं से टीम के साथ जुड़कर जनहित में किये जाने वाले कार्यों से जुड़ने हेतु विनम्र अपील करता हूँ।

धर्मसिंह, कुरिगवां

SBGBT से एक सार्थक जीवन जीने की कला सीखी है। धरातल पर कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं का समर्पण भाव और उनका मनोबल ही किसी भी संस्था की ताकत होती है।

खुशीलाल, सिंगोरई

मैने SBGBT से जुड़ने के बाद बहुत कुछ सीखा है। डॉ सत्यपाल सर, देवेंद्र सर और समूची टीम से मैंने सीखा है कि सामाजिक सरोकारों एवं मानवता के लिए किस तरहअपने जीवन को समर्पित किया जा सकता है। मेरे व्यक्तिगत जीवन में कभी-कभी हालातों से जूझते हुए डगमगाया तो सत्यपाल सर ने हिम्मत बंधाई। मैं बस यही कहना चाहूंगा कि हमें मनुष्यता के नाते मानवीय दायित्वों को निभाते रहना चाहिए।

मुकेश कुमार, टोडा जयसिंहपुरा अलवर

"सोच बदलो गांव बदलो अभियान" प्राणी जीवन के लिए समर्पण,लगनशीलता और कर्तव्यनिष्ठा की सीख दे रहा है। इस अभियान ने मुझे परमार्थ के लिए तथा ज़रूरतमंद लोगों को मुख्य धारा से जोड़ने के लिए हर संभव प्रयास करने की प्रेरणा दी है। धौलपुर जिले में अभियान की सफलता के फलस्वरूप हम अपने अलवर क्षेत्र में भी इस अभियान का विस्तार कर रहे हैं।

मोहन सिंह, गड़रपुरा

SBGBT टीम से जुड़करगर्व की अनुभूतिकरता हूं। सभी साथियों के सहयोग से उत्थान का सपना,जो हमने देखा है उसे साकार करने की ओर अग्रसर हूं। मैं यही कहूंगा कि समाज बंधुओं को साथ मिलकर इस सपने को साकार करना चाहिए।

जगन्नाथ,सागौर

SBGBT की कार्यशैली और उपलब्धियां इस बातकी परिचायक हैं कि टीम भावना से किसी भी मुश्किल लक्ष्यको हासिल किया जा सकता है।

राजेन्द्र,कुरिगवां

SBGBT एक ऐसी कड़ी है जो व्यक्ति को समाज व सामाजिक सरोकारों से जोड़कर मानवतावादी मूल्यों का बोध कराती है।

गब्बर सिंह, उमरेह

मैं गब्बर सिंह, खंड मुख्य चिकित्सा अधिकारी, मुझे सोच बादलो-गाँव बदलो अभियान से जुड़कर अपने प्रोफेशनल जीवन से इतर सामाजिक कर्तव्यों के निर्वहन की प्रेरणा मिली है।

उत्थान का बहुउद्देशीय स्वरूप- एक दृष्टि में!

अतीत के संघर्षों के बाद सरमथुरा की पथरीली धरा पर शान से खड़ा उत्थान भवन शैक्षिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से सोच बदलो-गांव बदलो टीम की ऐतिहासिक एवं उच्चतम उपलब्धि है। इसके अतीत में सैकड़ों लोगों का प्रयास और कड़ा संघर्ष छिपा हुआ है। कहते हैं कि "प्रेरणा व्यक्ति को कर्म की ओर उन्मुख करती है तो संघर्ष उसे सफलता में परिणत करता है!" जनसामान्य की भावनाओं, बुजुर्गों के आशीर्वाद तथा उत्थान के सृजनकर्ता उन कर्मवीरों के अद्भुत प्रयत्नों के फलस्वरूप उत्थान अपने बहुउद्देशीय स्वरूप को साकार करता हुआ दिखता है। पिछले वर्षों में ये भवन शिक्षा केन्द्र (कोचिंग संस्थान) के अतिरिक्त विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक एवं प्रशासनिक आयोजनों के लिए भौतिक इंफ्रास्ट्रक्चर की दृष्टि से आमजन और प्रशासन दोनों के लिए ही उपयोगी साबित होता रहा है। ख़ास बात यह है कि ऐसे आयोजनों के लिए सुविधायुक्त उत्थान भवन न केवल भौतिक रूप से नि:शुल्क उपलब्ध रहता है बल्कि इस भवन से भावनाओं से जुड़े कार्यकर्ता भी नि:शुल्क रूप से सहयोगी के रूप में खड़े नज़र आते हैं। जब उत्थान भवन अपने अस्तित्व को सही मायनों में सार्थक करता हुआ दिखता है तो इस भावनाओं के भवन से जुड़ा हर एक वह व्यक्ति गौरवान्वित होता है जिसने इस भवन को खड़ा करने में अपनी ख़ून पसीने की कमाई में से अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। उत्थान भवन का विभिन्न प्रयोजनों हेतु कैसे उपयोग किया जा रहा है; इसका उल्लेख आगे किया जा रहा है-

1. "उत्थान कंप्यूटर क्लासेज" का संचालन, डाँग से डिजिटल की ओर एक क़दम!

आधुनिक युग में व्यक्ति को तकनीकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी से जोड़कर राष्ट्र उन्नति के लिए समृद्ध मानव संसाधन के रूप में तैयार करने की नितांत आवश्यकता है। बीते दशक में विज्ञान की तरक्की के फलस्वरूप शहरी युवाओं ने तकनीकी एवं कंप्यूटर ज्ञान में काफ़ी दक्षता अर्जित कर ली है लेकिन ग्रामीण युवा तकनीकी कौशलों से अभी भी बहुत दूर हैं फलत: वे डिजिटल संसाधनों के लिए असहाय तथा दूसरों पर निर्भर रहते हैं। सोच बदलो-गांव बदलो टीम ने ग्रामीण युवाओं की इस निर्भरता को दूर करने, समयानुकूल ज़रूरत को पूरा करने एवं आधुनिक युग में कंप्यूटर ज्ञान की महत्ता को ध्यान में रखते हुए ग्रामीण परिवेश के बच्चों को तकनीकी रूप से कुशल बनाने के प्रयासों को अपने एजेंडे में सम्मिलित किया है। इस एजेंडे को अमलीजामा पहनाते हुए सोच बदलो-गांव बदलो टीम ने बहुउद्देशीय "उत्थान भवन- सरमथुरा" में दीपावली के पावन अवसर पर SBGBT के प्रणेता डॉ सत्यपाल सिंह मीना

के कर कमलों से कंप्यूटर क्लासेज का शुभारंभ किया। इस अवसर पर प्रारंभिक रूप से 30 नए कंप्यूटर्स उत्थान कंप्यूटर लैब में इंस्टॉल किए गए और कंप्यूटर कक्षाओं के गुणवत्तापूर्ण व सुचारू संचालन के लिए एक प्रशिक्षित कंप्यूटर अनुदेशक की नियुक्त की गई। अलग-अलग पारियों में सरमथुरा परिक्षेत्र के गांवों के सैकड़ों बच्चे उत्थान कंप्यूटर क्लासेज में सैद्धांतिक और प्रैक्टिकल रूप से कंप्यूटर अनुप्रयोग के बारे में दक्षता हासिल कर रहे हैं। निश्चित रूप से SBGBT का ये धरातलीय प्रयास पथरीले एवं डांग क्षेत्र सरमथुरा को डिजिटल भारत से जोड़ने में कारगर साबित होगा।

ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों को तकनीकी में आगे बढ़ाना ही हमारा लक्ष्य - डॉ. सत्यपाल सिंह मीना

» सरमथुरा उत्थान भवन में निःशुल्क कंप्यूटर क्लासेज का शुभारंभ

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

ग्रामीण बच्चों को मिलेगा लाभ

इनका कहना है

2. प्रशासनिक ज़रूरतों की पहली पसंद 'उत्थान'

पिछले वर्षों में सरकारी आयोजनों के लिए भौतिक इंफ्रास्ट्रक्चर की दृष्टि से उत्थान भवन प्रशासन के लिए सहयोगी के रूप में नज़र आता रहा है। विभिन्न अवसरों पर प्रशासनिक ज़रूरतों जैसे कृषि विभाग द्वारा आयोजित किसान गोष्ठी, शिक्षा विभाग की वाक् पीठ के अतिरिक्त विशेष अवसर जैसे राज्य सरकार द्वारा आयोजित REET भर्ती परीक्षा-2021 के परीक्षार्थियों के ठहरने हेतु जिला प्रशासन द्वारा चिन्हित स्थानों में उत्थान भवन सरमथुरा प्रशासन की पहली पसंद रहा।

i. रीट परीक्षार्थियों के ठहराव के लिए प्रशासन द्वारा चयन 'उत्थान'!

राज्य सरकार द्वारा आयोजित REET भर्ती परीक्षा-2021 के परीक्षार्थियों के हितों को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने परीक्षार्थियों को राजस्थान रोडवेज की बसों में फ्री यात्रा के साथ-साथ राज्य के शहरों और कस्बों में परीक्षार्थियों के ठहरने और निःशुल्क भोजन व्यवस्था के इंतज़ाम जिला प्रशासन के माध्यम से कराए गए। इसी क्रम में धौलपुर जिला प्रशासन ने सरमथुरा उपखंड के परीक्षा केंद्र वाले परीक्षार्थियों के भोजन और ठहरने की व्यवस्था उपखंड अधिकारी के माध्यम से कराई गई थी। सरमथुरा उपखंड अधिकारी द्वारा उक्त प्रयोजनार्थ सर्वप्रथम भर्ती परीक्षा की महिला उम्मीदवारों की सुरक्षा संबंधी मानकों को दृष्टिगत रखते हुए उत्थान भवन सरमथुरा को चिन्हित किया गया। चूंकि उत्थान भवन परिसर 24X7 लगभग 20 सीसीटीवी कैमरों की निगरानी में रहता है। ऐसे में सुरक्षा कारणों से उपखंड प्रशासन ने रीट परीक्षार्थियों के ठहराव के लिए उत्थान भवन को प्राथमिकता दी। इस अवसर पर "अतिथि देवो भव:" वाली अपनी संस्कृति का निर्वहन करते हुए न केवल ठहरने के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराई गईं बल्कि परीक्षार्थियों के लिए निःशुल्क भोजन व्यवस्था सोच बदलो-गांव बदलो टीम के कार्यकर्ताओं ने की।

ii. "उत्थान भवन में किसान प्रशिक्षण- अन्नदाता को मजबूत करने का प्रयास"

उत्थान भवन सरमथुरा में कृषि विभाग की "आत्मा योजना" के तहत एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसमें जिले से उपनिदेशक कृषि विस्तार श्री विजय डागुर एवं उप निदेशक आत्मा श्री सोमदत्त शर्मा ने हिस्सा लिया। वैसे तो इस एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में 100 कृषकों को हिस्सा लेना था लेकिन किसानों का जोश और उत्साह दुगना हो गया और प्रशिक्षण में 155 कृषक सम्मिलित हुए। कृषि विभाग ने उक्त प्रशिक्षण शिविर के लिए उत्थान को इसलिए चुना क्योंकि यह सरमथुरा का एकमात्र ऐसा सुविधाजनक केन्द्र या स्थान है जहां पर एक समय में हजारों लोग बैठकर सभा या गोष्ठी कर सकते हैं। यहां बिजली, पेयजल

व्यवस्था, शौचालय तथा विश्राम गृह जैसी सुविधाएं आगंतुकों को निःशुल्क उपलब्ध कराई जाती हैं फलस्वरूप उत्थान अपने मेहमानों को सदैव आकर्षित करता रहता है।

"उत्थान की उपयोगिता, उत्थान की ज़ुबानी ! "

मैं उत्थान हूँ। जिस प्रकार कलम की नोक से इतिहास के पन्ने संजोए जाते हैं उसी प्रकार हल की नोक से जिन्दगियां संवारी जाती हैं और सोच बदलो गांव बदलो टीम द्वारा निर्मित मैं यानि उत्थान भवन सरमथुरा दोनों प्रकार के कारीगरों को गढ़ने के लिए तत्पर हूं। मेरे आंगन में सम्पन्न हुए किसान सम्मेलन की सफलता ने मेरे महत्व व कीमत को बखूबी बयां किया है कि उत्थान भवन सरमथुरा ईंट पत्थरों का बना हुआ मात्र सुन्दर भवन ही नहीं है अपितु यह धौलपुर के पिछड़े, गरीब असहाय और निरक्षर लोगों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़कर अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करने और भविष्य निधि के रूप में राष्ट्र के लिए अच्छा मानव संसाधन तैयार करने के साथ- साथ सरमथुरा के ग्रामीण पथरीले इलाके में भी किसानों को कृषि क्षेत्र की नवीन तकनीकियों में प्रशिक्षित कर आत्मनिर्भर बनाने का कार्य करेगा। यह केन्द्र विभिन्न रोजगारपरक कौशलों में लोगों को दक्ष करने का कार्य भी करेगा। "उत्थान भवन सरमथुरा" यानि मैं आप सभी से वादा करता हूं कि यदि इसी प्रकार आपका आशीर्वाद मिलता रहा तो मैं एक शिक्षा केन्द्र मात्र ही नहीं बल्कि ग्रामीण क्षेत्र की जनता के चहुंमुखी विकास केंद्र के रूप में पहचाना जाऊंगा तथा आम जनता को स्वरोजगार योग्य बनाऊंगा ।

3. "उत्थान भवन सरमथुरा" विविध, सांस्कृतिक एवं सामाजिक गतिविधियों के केंद्र के रूप में!

किसी भी समाज की सांस्कृतिक विरासत उसकी पहचान होती है सांस्कृतिक गतिविधियां न केवल किसी समुदाय के आमोद-प्रमोद का माध्यम होती हैं बल्कि वे सामाजिक सौहार्द एवं समन्वय स्थापित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उत्थान भवन सरमथुरा उक्त प्रयोजनार्थ अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। यह सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ-साथ विभिन्न सामाजिक आयोजनों को संपन्न करने में अपने सुंदर एवं सुविधाजनक भौतिक स्वरूप को आमजन के लिए समर्पित कर रहा है। लोगों को अपनी सामाजिक गतिविधियों जैसे सगाई-संबंध तथा बैठक इत्यादि आयोजित करने के लिए एक स्थान की आवश्यकता होती है;उत्थान भवन सरमथुरा उन आयोजनों को आयोजित करने के लिए लोगों के लिए हर अवसर पर निःशुल्क तैयार रहता है। आज यह बहुउद्देशीय भवन धौलपुर जिले के सरमथुरा, बाड़ी क्षेत्र एवं करौली जिले के लोगों के लिए इन गतिविधियों को आयोजित करने के लिए आकर्षण का केंद्र बन गया है। सोच बदलो-गांव बदलो टीम यह अपील करती है कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को आयोजित करने के लिए उत्थान भवन सदैव आपके स्वागत के लिए तैयार है।

4. उत्थान कोचिंग संस्थान और ग्रामीण भारत का संवरता भविष्य:

"सरमथुरा उत्थान कोचिंग संस्थान के बढ़ते कदम, अभी तक 800 से अधिक विद्यार्थियों ने विभिन्न कोर्सों में किया अध्ययन "सरमथुरा के पथरीले और गर्मियों में झुलसते वातावरण में सोच बदलो गांव बदलो टीम का "उत्थान कोचिंग संस्थान" बच्चों विशेष रूप से बेटियों के सपनों को साकार करने में सहयोग कर रहा है। जो सपना सोच बदलो गांव बदलो टीम ने तीन साल पहले देखा वह आज साकार हो रहा है। उत्थान प्रबंधक और प्रशिक्षित शिक्षकगण अपना सर्वश्रेष्ठ देकर बच्चों के भविष्य को संवारने के भरसक प्रयास कर रहे हैं। सोच बदलो गाँव बदलो टीम (SBGBT) "उत्थान-भवन" "उत्थान-लाइब्रेरी", और "उत्थान कोचिंग संस्थान" के माध्यम से युवाओं को राष्ट्र के "समृद्ध मानव संसाधन" के रूप में तैयार करने के लिए निरंतर प्रयासरत है ।

सरमथुरा स्थित उत्थान भवन में "उत्थान कोचिंग संस्थान" का संचालन किया जा रहा है; जहां पर स्वच्छ और सुंदर वातावरण में विद्यार्थियों को अध्ययन की सुविधा प्रदान की जा रही है विशेष रूप से वहां बालिकाएँ इस सुविधा का लाभ उठा रही हैं जो सामाजिक और आर्थिक कारणों से सुदूर बड़े शहरों में पढ़ने नहीं जा सकतीं। SBGBT आप सब से अपील करती है कि अपने अपने स्तर पर गांवों और शहरों में अध्ययन-अध्यापन और युवाओं के मार्गदर्शन के लिए उत्थान केंद्रों की स्थापना करें, उत्थान लाइब्रेरी और उत्थान कोचिंग संस्थान का संचालन करें। संस्कारवान कौशल युक्त मानव संसाधन का विकास मानवता और देश के लिए यह सबसे बड़ी सेवाहै। सोच बदलो गाँव बदलो टीम (SBGBT) के "उत्थान केंद्रों" के प्रमुख उद्देश्य निम्न प्रकार हैं-

1. युवाओं के शिक्षा के स्तर को ऊंचा उठाने का प्रयास करना।
2. युवाओं में शिक्षा के प्रति लगाव और अभिरुचि पैदा करना।
3. युवाओं के व्यक्तित्व को निखारने के लिए उन्हें वाद विवाद, भाषण और अन्य प्रतियोगिताओं में शामिल करना।
4. गरीबों और ज़रूरतमंद बच्चों को शिक्षा से जोड़ना और उनके माता-पिता को शिक्षा के महत्व के विषय में जागरूक करना।
5. युवाओं में भारत की समृद्ध परंपरा विशेष रूप से मेडिटेशन के महत्व के विषय में बताना और इसका अभ्यास कराना।
6. युवाओं को समाज की विभिन्न प्रकार की समस्याओं विशेष रूप से पर्यावरणीय समस्याओं के विषय में जागरूक करना और उन्हें बदलाव के ब्रांड एंबेसडर के रूप में तैयार करना।
7. समाज के पढ़े-लिखे और समृद्ध लोगों को "पे बैक टू सोसाइटी" सिद्धांत के माध्यम से समाज से जोड़ना।
8. उत्थान के प्रयासों से एक संतुलित, समृद्ध और समावेशी समाज का निर्माण करना।

5. आधुनिक उत्थान लाइब्रेरी- पथरीली धरा पर विद्यार्जन का माध्यम!

उत्थान भवन में आधुनिक और सुसज्जित लाइब्रेरी उन विद्यार्थियों के सपनों को साकार कर रही है जो बाहर जाकर लाइब्रेरी में पढ़ने की कल्पना मात्र ही कर सकते थे। सोच बदलो-गांव बदलो टीम के प्रयासों से उन गरीब एवं ज़रूरतमंद विद्यार्थियों का सपना आज सरमथुरा की धरा पर मूर्त रूप ले रहा है और ग्रामीण प्रतिभाएं उत्थान लाइब्रेरी में निःशुल्क अध्ययन करके अपने भविष्य को संवारने की दिशा में आगे बढ़ रही हैं।

सोशल प्राइड....... सुर्खियों में

स्मार्ट विलेज की विकास गाथा......

सभी गांवों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बनी गांव के विकास की कहानी

न शराब, न अपराध, स्मार्ट गांव बन कर उभरा धनौरा

पत्रिका सोशल प्राइड

ग्रामीणों की एकजुटता से बदली तस्वीर

ऐसे शुरू हुआ गांव के विकास का सफर

गांव सामुदायिक भवन व पुस्तकालय भी

मृत्युभोज राशि से रचनात्मक कार्य

ग्रामीणों ने स्वयं हटाए अतिक्रमण

प्रधानमंत्री ने किया सम्मानित

डॉ. सत्यपाल मीना की अहम भूमिका

रातभर जगमग रहते है गांव के रास्ते

शिक्षा पर विशेष ध्यान

जल संरक्षण की मिसाल

रीट परीक्षार्थियों के लिए विष्णु काकरेट ने की आंगई में निशुल्क रहने व खाने की व्यवस्था

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

सरमथुरा। उपखंड के आंगई में जहां एक ओर 'सोच बदलो-गांव बदलो' टीम एसबीजीबीटी एवं मीना समाज धौलपुर द्वारा सरमथुरा उत्थान भवन पर रीट - 2021 के अन्य जिलों और राज्यों के परीक्षार्थियों के लिए निःशुल्क आवास और भोजन की व्यवस्था की जा रही है वहीं दूसरी ओर टीम के सक्रिय कार्यकर्ता एवं समाज सेवी विष्णु कांकरेट द्वारा रीट परीक्षा-2021 में सम्मिलित होने वाले धौलपुर जिले से बाहर के परीक्षार्थियों के लिए निःशुल्क आवास और भोजन व्यवस्था अपने बालाजी गार्डन मैरिज होम बाड़ी रोड़ आंगई पर की जा रही है। ज्ञातव्य है कि 26 सितंबर को दूसरे जिले और पड़ोसी राज्यों से बड़ी संख्या में परीक्षार्थी परीक्षा देने आ रहे हैं। ऐसे में परीक्षार्थियों को किसी भी तरह की असुविधा न हो, इसे ध्यान में रखते हुए एसबीजीबीटी और उसके कार्यकर्ता व समाज सेवी द्वारा दो अलग-अलग स्थानों पर निःशुल्क आवास और भोजन की व्यवस्था करने का निर्णय लिया गया है।

प्रधानमंत्री मोदी ने स्मार्ट विलेज धनोरा को दिया पुरस्कार

सौहार्द की मिसाल बना धनोरा, जिले में पेश की नजीर

पत्रिका ग्राउंड रिपोर्ट

छोटे से गांव में 80 से अधिक अधिकारी व कर्मचारी, सोच बदलो-गांव बदलो की तर्ज पर जिले में चल रहा है कार्य

शिक्षा की बहती बयार

इनका कहना है

महिलाओं को पानी के लिए परेशान देखा तो भैंस बेचकर खुदवा दिया बोरवैल

पत्रिका सोशल प्राइड

सोच बदलो-गांव बदलो टीम के कार्यकर्ता की पहल

Visitors of Utthan and Smart Village “Dhanora”

माननीय विधायक श्री खिलाड़ी लाल बैरवा एवं
एसडीएम सरमथुरा द्वारा उत्थान भवन का भ्रमण

स्मार्ट विलेज धनौरा की धरा पर
माननीय जिला क्लेक्टर, धौलपुर
के सम्मान समारोह की झलकियाँ

उत्थान कोचिंग संस्थान, सरमथुरा
के विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करते हुए
शिक्षा विभाग के अधिकारीगण

आभार.....SBGBT रक्तदान टीम

कमलसिंह, शीतलपुरा
(संयोजक: रक्तदान टीम)

मनोज, खौरपुरा
(सहसंयोजक: रक्तदान टीम)

कुसुम,कांकरेट

मुरारीलाल, खानपुर

कमरसिंह,कसियापुरा

विष्णु,कांकरेट

मन्नू,कुरिगवां

श्रीनिवास, कोयला

देवेन्द्र, नादारौली

ओमप्रकाश, सुरारीकलाँ

कप्तान, रघुवीरपुरा

परशुराम, मौठियापुरा

दुर्गा, सुनकई

लक्ष्मी नारायण, कांकरई

बीरबल, खिन्नौट

गौरव, खानपुर

गजेन्द्र, रतियापुरा

जीतू, बडापुरा

रामकेश, बरौली

संतराम, चकैयापुरा

भवानीसिंह, सुनकई

डॉ. अमित सांगलवार दीवानपुरा

नीतेश, बीलौनी

विजय, अमानपुरा

केशव, खरगापुरा

योगेंद्र, मुंडपुरा

संतोष, बरौली

हरिओम,खैमरी

देवीसिंह,कसियापुरा

K. M. ,खानपुर

चंद्रेश,दीमानपुरा

दीपू,दीमानपुरा

शिवकेश,खानपुर

आशीष,खिन्नोंट

रामगोपाल, खिन्नौट

दुल्हेराम, बड़ापुरा

अजय गौड़

मईबहादुर, बीलोनी

कुलदीप, बड़ागांव

नरोत्तम, गुरदह

प्रिंस, हरियापुरा

श्रीपाल, उमरेह

पंकज जैन, धौलपुर

कृष्णा, करौली

राधाकृष्ण, मंगलपुरा

नीतेश डंगरिया
करनपुर

सोनू, मुगलपुरा

लवकुश, हाँसई

राजेन्द्र,गांवड़ी
(श्री महावीरजी)

देवेन्द्र, मई

केशव,खरगापुरा

जयसिंह,खरौली

दिनेश,सुनकई

देव,कुरिगवां

सौरभ,भम्पुरा

राजकुमार,कृष्णापुरा

कपिल बघेल,गडरपुरा

मो.इरफ़ान

दिनेश सोनी, भैसेन

छतराम, गुरदह

भूपेन्द्र, बीलौनी

सत्यप्रकाश, रहरई

अजय, धौलपुर

तारेश, अलवर